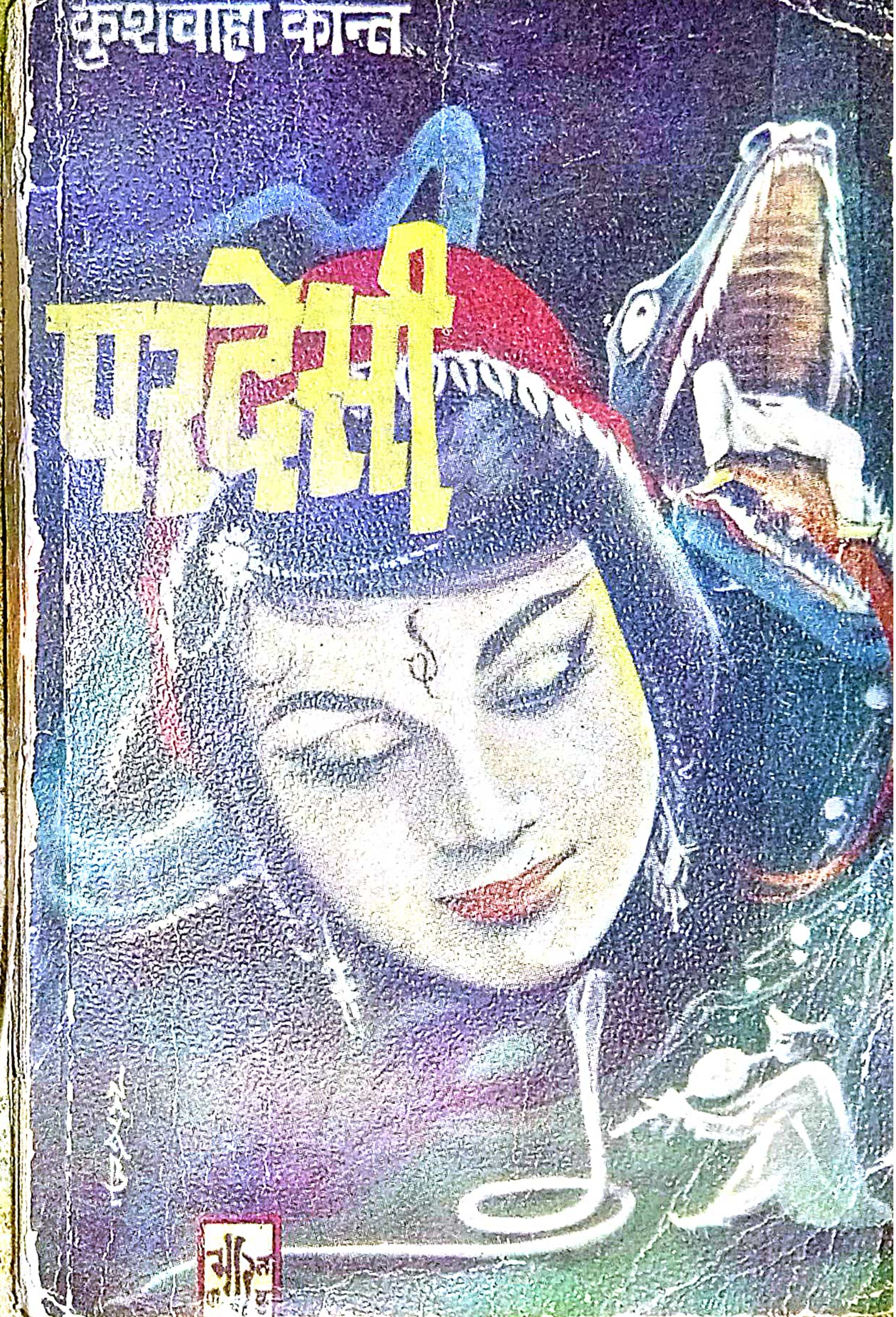

कुशवाहा कान्त
परदेसी

- अब आसमान के तारों का गिनना छोड़ो और जमीन पर के चांद गिना करो परदेसी ! जरा अपने आस-पास तो देखो—तनिक पलकें झपका लिया करो, वरना एकटक देखते-देखते आँखें जवाब दे डालेंगी।
- गांव की लड़की परदेसी से जो कुछ चाह सकती है वह तो तुम मैना को पहले ही दे चुके हो परदेसी ! अब मेरे लिए बचा ही क्या रह गया है तुम्हारे पास ?
- परदेसी तो गया मैना रानी ! यह टिकोरा है, जिसे उस खोह में मार कर फेंक आई थी तुम...पीठ में छुरे का घाव ताजा है और सर में पत्थरों की चोट भी दर्द कर रही है।

मूल्य—तीन रुपया

कुशवाहाकान्त

परदेसी

भारत पॉकेट बुक्स

● प्रकाशक :—
भारत पाकेट बुक्स
जालपादेवी रोड
कबीरचौरा, वाराणसी–१

● मुद्रक :—
चिनगारी प्रेस
सीके ६४/५ जालपादेवी रोड
कबीरचौरा, वाराणसी–१

● वितरक :—
चिनगारी प्रकाशन.
सीके ६४/५ जालपादेवी रोड
कबीरचौरा, वाराणसी–१
फोन नं०–६६१५८

© जयन्त कुशवाहा

PARDESI ● NOVEL ● KUSHWAHA KANT

पहले इसे पढ़ें—

कुशवाहा कान्त के नाम से छपने वाली नकली पुस्तकों से सावधान !

सुप्रसिद्ध उपन्यासकार स्व० 'कुशवाहा कान्त' का नाम हिन्दी कथा साहित्य के लिए कोई नया नहीं है। अपने जीवन-काल में ही वे इतने लोकप्रिय हो गये थे कि पाठक उनकी रचनाओं के लिए पागल रहा करते थे।

पुस्तक व्यवसाय में धोखाधड़ी एवं जालसाजी करने वाले कुछ प्रकाशक पाठकों तथा विक्रेताओं को धोखा देने एवं ठगने की महत्वाकांक्षा लेकर स्व० 'कुशवाहा कान्त' के नाम से कुछ जाली पुस्तकें निकाल रहे हैं। परन्तु डंके की चोट पर यह कार्य करने का कदम उठाया है—'सुबोध पाकेट बुक्स' दिल्ली ने। यहाँ से 'कुशवाहा कान्त' की अनेकों जाली पुस्तकें अभी तक प्रकाशित हो चुकी हैं। जैसे—आहट, काजल, कलंक, कटेपंख, उपासना, आसरा, स्नेह और तलवार इत्यादि। स्व० कुशवाहा कान्त का छोटा भाई होने के नाते मैं यह विश्वासपूर्वक कहता हूँ कि ये पुस्तकें 'कुशवाहा कान्त' की लिखी हुई कदापि नहीं हैं। दुःख तो यह जानकर और भी होता है कि स्व० 'कुशवाहा कान्त' के योग्य सुपुत्र-गण प्रकाशकों के बहकावे में पड़कर कुछ रुपयों के प्रलोभन में अपने पिता के नाम से भ्रष्ट-कृतियाँ दूसरे लेखकों से लिखवा, भ्रष्ट प्रकाशकों को प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान कर अपने पिता का नाम बेच रहे हैं।

मेरठ से 'कमल पाकेट बुक्स' ने भी स्व० 'कुशवाहा कान्त' के नाम से पाठकों को भ्रमित करने के लिए 'कुशवाहा कान्त सीरीज' निकाली है। पुस्तक के कवर पर सबसे ऊपर 'कुशवाहा कान्त' सुस्पष्ट अक्षरों में छपा है और सीरीज छोटे में! जिससे खरीदने वाला धोखे में पड़ जाय कि पुस्तक कुशवाहा कान्त की ही है। स्व० 'कुशवाहा कान्त' का देहावसान हुए करीब तेईस वर्ष हो चुके। उनकी अन्तिम कृति जंजीर रही जिसे वे अपूर्ण छोड़ गये थे। जंजीर को मैंने स्वयं किसी प्रकार पूर्ण

करके प्रकाशित किया। उन्होंने अपने जीवन-काल में मात्र पैंतीस पुस्तकें लिखी थीं जो निम्नांकित हैं—

१. लालरेखा
२. पपिहरा
३. परदेसी भाग १
४. परदेसी भाग २ (पराया)
५. पारस
६. जंजीर
८. मदभरे नयना
८. नागिन
९. विद्रोही सुभाष
१०. उसके साजन
११. जवानी के दिन
१२. हमारी गलियाँ
१३. खून का प्यासा
१४. दानव देश
१५. रक्त मन्दिर
१६. गोल निशान
१७. उड़ते-उड़ते
१८. पराजिता
१९. काला भूत
२० कैसे कहूँ
२१. लाल किले की ओर
१२. निर्मोही
२३. लवँग
२४. नीलम
२५. आहुति
२६. बसेरा
२७. इशारा
२८. जलन
१९. कुंकुम
३०. पागल
३१. मंजिल
३२. भँवरा
३३. चूड़ियाँ
३४. अकेला
३५. अपना पराया

उपरोक्त ३५ पुस्तकों के अतिरिक्त पाठक तथा विक्रेता-बन्धु स्व० 'कुशवाहा कान्त' के नाम की कोई अन्य पुस्तक देखें तो भ्रम में न पड़ें। वह उनकी लिखी कदापि नहीं है। ऐसा कार्य पाठकों तथा विक्रेताओं के साथ जालसाजी करने का षड़यन्त्र मात्र है। अतः पाठक तथा विक्रेता बन्धु सावधान रहें।

एक साहित्यकार पर उनके स्वजनों का ही नहीं, समस्त समाज का अधिकार होता है। अन्य कोई भी उनके नाम को क्षति पहुँचाता है तो वह भर्त्सना के योग्य है। पाठकों के साथ यह धोखाधड़ी अक्षम्य है।

भवदीय

चिनगारी प्रकाशन
पो० बा० ७८
वाराणसी–१

जयन्ती कुशवाहा

स्वत्वाधिकारी

"छैला !...."

"चल हट !....छोड़ मेरा रास्ता !"

"ऐसे तो हटूँगी नहीं मेरे रसिया !... पाँव की धूल तो हूँ नहीं कि एक चुल्लू पानी से धो डालोगे। मैं तो आँख की किरकिरी हूँ जिसे आसानी से नहीं निकाल पाओगे अलबेले !... "

"चुप रह कमीनी !...हटती है या नहीं ?"

"हट जाऊँगी, जल्दी क्या है ? कोई नागिन तो हूँ नहीं कि तुम्हारे पाँवों में घेरा डाले पड़ी रहूँगी। मैं तो हवा का झोंका हूँ, कभी यहाँ तो कभी वहाँ....हाँ, यह तो बताओ, इतने सबेरे किधर चल दिये मेरे राजा, हाथ में महुवर लेकर ? आज किस नागिन पर डोरे डालने का इरादा है तुम्हारा, इस महुवर की मीठी तान सुनाकर ?..."

"देख लजारो ! तेरी यह बेवक्त की जिद मुझे अच्छी नहीं लगती...जिस दिन सबेरे-सबेरे तेरी सूरत देख लेता हूँ, उस्ताद कसम, उस दिन मेरा कोई भी काम नहीं हो पाता....अच्छा हट जा तू रास्ते से....मुझे साँप पकड़ने जाना है...."

"अय-हय ! साँप पकड़ने के लिए इतनी उतावली !....कभी

कोई बड़ा-सा अजगर पकड़ लाओ तो गाँव भर की दावत हो हो जाय किसी दिन...सच कहती हूँ टिकोरा ! अजगर का मांस खाये बहुत दिन हो चुके हैं। पिछले महीने तुम्हीं तो पकड़ लाये थे एक...और देखो, गेहुवन के चमड़े की यह चोली तो मेरी फट ही चली...क्या अपनी लजारो का तुम्हें कुछ भी ख्याल नहीं रसिया ! मेरे मन की भी तो कर दिया करो कभी..."

"कर दूँगा रे, कर दूँगा तेरे मन की भी....मगर इस तरह हर वक्त मेरे सिर पर फन निकालकर मत खड़ी हुआ कर....कभी अजगर मिला तो लाकर तेरी जीभ तर कर दूँगा....अच्छा हट मेरे सामने से !...."

"अभी नहीं....एक बात और...."

"पूछ अच्छा...."

"मेरे कब बनोगे राजा ! अब तो बहुत दिन हो गये....मैं तुम्हारे लिए तड़पती रहती हूँ और तुम तो दिन-रात साँपों से ही अपनी तबीयत बहलाने में लगे रहते हो...."

"क्या बकवास करती है तू भी लजारो ! हम सँपेरे हैं न, साँप-अजगर से खेलना तो हमारा खानदानी पेशा ही है ! तू भी तो सँपेरे की ही बिटिया है, फिर ऐसा क्यों कहती है रे कमीनी ! परसों तू भी तो उस्ताद से कोई मन्तर सीख रही थी। झूठ कहता हूँ ?"

"नहीं तो !....जब तुम साँप पकड़ने के इतने जन्तर-मन्तर जानते हो तो तुम्हारी बनने के लिए मुझे भी दो-चार सीखने ही चाहिए—कौन जाने कभी परखने के लिए तुम कोई साँप ही फेंक दो मुझ पर और वह मुझे काट खाय तब ?"

"ह ह ह ह ! सँपेरों के खानदान में पैदा होकर तू सिर्फ अजगर ही खाना सीख पाई—उस्ताद की बिटिया को देख न, क्या मजे में गेहुँवन का फन हाथ में दाब लेती है।"

"उस मुई मैना का नाम न लो मेरे सामने—उसी ने तुम्हारा दिमाग फिरा दिया है....तुम मैना को अपनी बनाकर गाँव का उस्ताद बनने का जो सपना देख रहे हो, उसे पूरा नहीं होने दूँगी मैं कभी, इसे जान रखो...."

"मैं जानता हूँ तेरी हस्ती, तू मेरी राह का काँटा है। मगर यह न भूल, टिकोरा इतनी हस्ती रखता है कि उस्ताद भी झख मारें, मेरे आगे तेरी एक न चलेगी...."

बीसों मील लम्बे घने जंगल के बीच मील भर का एक छोटा-सा मैदान और उसमें बसा हुआ भयानक सँपेरों का एक मामूली-सा गाँव।

आधुनिक जगत के सम्पर्क से दूर।

साँप पकड़ना, उसका मांस खाना और उसका चमड़ा किसी आते-जाते रोजगारी के हाथ बेंच देना अच्छे दामों पर, यही गाँव वालों का काम था।

कभी-कभी पिटारियों में साँप बन्द कर गाँव के युवक-युवतियों का गिरोह शहर चला जाता और बाबू लोगों को साँप के तमाशे दिखा कुछ पैसे वसूल कर लाता। कभी कोई चतुर सँपेरा शहरी लोगों को साँप काटने की दवा भी बेच आता, जो बिलकुल बेकार रहती।

यहाँ वालों के पास साँप काटने की दवा न थी, मन्त्र थे, जिनके बल पर वे लोग भयानक से भयानक साँप का विष उतार सकते थे। साँप के जहर से बीसों दिन पहले मरे हुए व्यक्ति को जिन्दा कर सकते थे।

"मान जाओ टिकोरा, मुझे अपनी बना लो मेरे छैला !"

"चल हट ! कभी अपना मुँह भी देखा है ?"

"देखती तो हूँ रोज ही, तुम्हारी आँखों में अपनी सूरत...."

"मेरी आँखों में नहीं, कभी किसी गेहुँवन की आँखों में देख तब पता चलेगा...."

वह थी लजारो !....

गाँव की एक शोख लड़की, हर किसी के आगे अपना दिल फेंक चलने वाली। जब कभी कमर पर बल डाल, आँखों के आगे से निकलती तो सँपेरे नागिनों से खेलना भूल जाते।

हवा में फहराते हुए सर के बाल, सीने पर कसी हुई साँप के मुलायम चमड़े की चोली, कमर से बँधा हुआ अजगर के चमड़ों का घुटनों तक लहँगा और सारा बदन खुला, जिस पर खेलती हुई पन्द्रह साल की अलस जवानी।

और वह था टिकोरा !....

गाँव का एक खूँखार सँपेरा ! सभी लोग उसकी छाया तक से डरते थे। सँपेरों के उस्ताद का अपमान कर दिया करता था वह कभी-कभी।

हट्टा-कट्टा शरीर, आँखें साँपों की-सी चमकदार और बदन पर वही चमड़े की पोशाक !

"लो मैं हट जाती हूँ....ओ री मेरी दैया ! इस तरह घूरते हो मुझे तुम कि बाप रे बाप ! तभी तो इतने बड़े-बड़े अजगर तुम्हारी आँखों की चमक से पस्त हो जाते हैं...."

"अब तुम आई ठीक रास्ते पर...." टिकोरा बोला—"शैतान बगैर चोट खाये मानती ही नहीं....अच्छा तो मैं चला लजारो ?..."

"मेरे लिए अजगर लाना न भूलना....मैं मसाला पीस रखूंगी...." जाते हुए टिकोरा को पुकार कर कहा लजारो ने।

"अच्छा !" दूर होते हुए टिकोरा की आवाज आई।

मैदान पीछे छूटता गया और दूर-दूर तक फैला हुआ घना जंगल नजदीक आने लगा।

हाथ में साँपों को रिझाने वाली तुम्बी लिए बढ़ा जा रहा था टिकोरा।

लजारों ने व्यर्थ की बातों में उसका काफी समय नष्ट कर डाला था, इसलिए वह अपने लम्बे-लम्बे पाँव तेजी से बढ़ाये जा रहा था।

जंगल अब काफी घना हो चला था। विशाल पेड़ों पर बैठे हुए कितने ही अजीब तरह के बड़े-बड़े पक्षी अपना पर फटफटा रहे थे। वृक्षों से लिपट कर शान्त पड़ी हुई लतायें हाथ बढ़ाकर टिकोरा का पैर पकड़ लेती थीं और वह गिरते-गिरते बचकर क्रोध से उन्हें हटा देता था।

दो ही मील के बाद जंगल की सघन भयानकता बढ़ गई।

अब टिकोरा मुश्किल से आगे बढ़ पाता था। पग-पग पर उसका पैर उलझता था। शरीर में काँटे चुभते थे। सर किसी डाल से टकराता था। जमीन पर पड़े हुए सूखे पत्ते अजीब स्वर से चीख उठते थे।

फिर भी टिकोरा बढ़ा ही जा रहा था।

एकाएक चमक कर वह रुक गया।

उस भयानक जंगल में कोई अजीब चीज देखी थी उसने।

एक पेड़ था—पीपल का !

चारों ओर से सघन झाड़ियों से घिरा हुआ।

बड़ी कठिनता से पहुंच पाया वह उस पीपल के नीचे।

जमीन पर झुककर उसने कोई चीज उठाई। गौर से देखने लगा वह! आंखों में अगम आश्चर्य भर उठा था। बड़ी देर तक वह उस चीज को ध्यानपूर्वक देखता रहा।

फिर बडबड़ा उठा—"या उस्ताद! इस घने जंगल में यह कीमती जूता! सो भी सिर्फ एक!....इसका जोड़ा क्या हुआ?...."

टिकोरा नजरें घुमाकर इधर-उधर खोजने लगा उस कीमती जूते का जोड़ा! मगर बहुत खोजने पर भी उसे दूसरा जूता नहीं दिखाई दिया।

टिकोरा ने अपने हाथ में पकड़े हुए उस अकेले जूते पर फिर नजर डाली।

साँभर के कीमती चमड़े का आधुनिक ढङ्ग से बना हुआ वह जूता बड़ा ही आकर्षक था। किसी बड़े घर के नौजवान के पैरों की शोभा बढ़ाता रहा होगा।

मगर यह अकेला कैसे पड़ गया?

हो सकता है कोई साहब यहाँ घूमने आये हों और किसी जंगली जन्तु पर निगाह पड़ते ही भागे हों, एक जूता पहने हुए और एक यहाँ छोड़कर!

मगर ऐसे भयानक जंगल में कोई शहरी बाबू घूमने ही क्यों आने लगे?

टिकोरा साँप पकड़ना भूल गया और पीपल के तने का सहारा ले सुस्ताने लगा। अब भी वह रह-रह कर उस अनोखे जूते को देखता जा रहा था।

तभी पीछे की झाड़ी से एक धीमी सरसराहट सुनाई पड़ी।

टिकोरा चौंक उठा।

शायद पीछे कोई भयानक जन्तु छिपा है या हो सकता है वह जूते वाला ही हो।

टिकोरा ने सँभलना चाहा परन्तु सँभल न पाया।

किसी ने एक मोटी रस्सी से उसकी कमर पेड़ के तने से बाँध दी। एक ही क्षण में यह सब हो गया कि बेचारा टिकोरा कोई फुर्ती भी न दिखा सका।

टिकोरा विवश था फिर भी आकस्मिक विपत्ति से अचैतन्य नहीं हो पाया था।

उसकी दृष्टि जब अपनी कमर की मोटी रस्सी पर पड़ी तो उसके मुख से चीख निकलते-निकलते बची।

वह रस्सी नहीं थी, किसी मनुष्य-भक्षी भयानक अजगर का शरीर था, इतना मोटा कि पेड़ के तने जैसा।

टिकोरा की दृष्टि तेजी से ऊपर गई।

उसके सर से कुछ ही ऊपर उस दीर्घाकार अजगर का खुला मुख था और उसकी लपलपाती हुई बड़ी-सी जीभ उसके समूचे शरीर का एक ही ग्रास बनाने को प्रस्तुत थी।

उसका मुख इतना बड़ा था कि उसमें गाय का एक बछड़ा पूरा समा जाय।

यद्यपि टिकोरा ने अपने सँपेरा जीवन में इतना बड़ा अजगर कभी नहीं देखा था फिर भी वह घबड़ाया नहीं।

पहले से यदि वह जानता होता कि उसके ऊपर होता हुआ यह आक्रमण किसी अजगर का है तो इतना न घबड़ाता। सांपों, अजगरों से खेलना, युद्ध करना तो उसका जन्मजात पेशा ही था।

अब टिकोरा सँभल चुका था। शत्रु भयानक है तो क्या, टिकोरा गुफा जैसे उसके मुख से डरने वाला नहीं। इस भयानक जन्तु के पेट में जाकर भी वह बाहर निकलने की ताकत रखता है।

उसने अपनी कमर में बँधे एक बड़े से छुरे पर नजर डाली।

उसकी कमर का बन्धन अब तक कसता जा रहा था। अगर वह जल्दी नहीं करता तो भीमकाय अजगर अपना शरीर कसते-कसते उसकी जान ही ले लेगा।

अब उस अजगर का मुख और भी फैल गया था। वह टिकोरा के सर से केवल एक बालिश्त ऊपर लटक रहा था।

टिकोरा ने बड़ी फुर्ती से अपने हाथ का छुरा अजगर के जबड़े में घुसेड़ दिया।

एक तीव्र फुफकार की आवाज आई और अजगर का मुख कुछ दूर हो गया। शायद वह भयंकर जन्तु समझ गया था कि उसका शत्रु भी काफी खतरनाक है।

अजगर की छोटी-छोटी आँखें टिकोरा की ही ओर थीं। टिकोरा ने भी अपने नेत्र उसकी आँखों में डाल दिये। दोनों प्रतिद्वन्द्वी एक-दूसरे की ताकत आजमाने लगे।

टिकोरा मन-ही-मन कोई मन्त्र बुदबुदा रहा था। आँखें उसकी अजगर की आँखों से टक्कर ले रही थीं।

जब कभी अजगर का सर उसके पास आ जाता तो वह छूरे का वार कर देता और अजगर फुफकार कर अपना सर पीछे हटा लेता।

काफी देर तक यह क्रम चलता रहा। टिकोरा बराबर बुदबुदाता जा रहा था। सँपेरा उस दुर्दान्त अजगर को वश

में करने के लिए मन्त्र पढ़ रहा था।

धीरे-धीरे अजगर का खुला मुख बन्द होने लगा और थोड़ी ही देर में एकदम बन्द हो गया। खुली हुई छोटी-छोटी आँखें भी धीरे-धीरे बेहोश-सी होकर ढँपने लगीं। टिकोरा की कमर का बन्धन भी ढीला हो चला।

देखते-देखते अजगर का मोटा-सा शरीर मदहोश हो जमीन पर लुढ़क कर टिकोरा के सामने आ गिरा।

विजयी टिकोरा के मुख से खुशी की एक चीख निकल पड़ी—

"वह मारा ?....आ गये बच्चू फन्दे में आज....लजारो तो क्या, सारे गाँव का पेट भर जायगा—लबालब !....पचीस-तीस मन से क्या कम गूदा होगा इस शरीर में...."

टिकोरा ने हाथ का छूरा कमर में खोंसा, अकेला जूता हाथ में उठाया फिर अजगर से बोला—"चलो बेटा ? आज तो तुम्हारे साथ धीरे-धीरे चलते-चलते शायद शाम तक गाँव पहुँच पाऊँगा...."

अजगर तब तक निश्चेष्ट पड़ा हुआ था।

टिकोरा ने तुम्बी मुँह से लगाई और फूंक मारी।

बड़ा ही सुरीला मनमोहक स्वर निकलकर पेड़ों की चोटियों पर थिरकने लगा। पत्ते झूम-झूम कर उस मादक ध्वनि का स्वागत करने लगे! चिड़ियाँ दूर-दूर से उड़कर पीपल की डाल पर बैठने लगीं।

थोड़ी ही देर बाद अजगर ने अँगड़ाई ली। आँखें खुल गईं उसकी।

"होश में आ गये बेटा ?....चलो!" टिकोरा ने कहा।

आगे-आगे तुम्बी बजाता हुआ टिकोरा चला और पीछे-पीछे घिसटता हुआ अजगर।

मोटा शरीर होने के कारण अजगर की रफ्तार इतनी कम थी कि टिकोरा को रह-रह कर क्रोध आ जाता था और वह लगता था अजगर को पैरों से ठोकर मारने।

तुम्बी बजाते-बजाते टिकोरा का मुंह थक गया था फिर भी अजगर को गांव तक लाने के लिए तुम्बी का बजाना आवश्यक था।

आखिर दूर से ही गाँव की आबादी चमकी।

टिकोरा और तेज चला।

कोने पर ही मिल गई लजारो।

"तू यहां खड़ी है ?" पूछा टिकोरा ने।

"हां !...."

"कब से ?...."

"तब से ही !" लजारो ने कहा—"तुम्हारी राह देखते-देखते आँखें थक गईं रसिया ! कुछ भी तो तरस खाओ अपनी इस पुजारिन पर। सवेरे से यहां खड़ी हूँ....बाप-रे-बाप....अरी मैया !...."

बातें करते-करते लजारो की निगाह टिकोरा के कुछ पीछे पड़े हुए भीमकाय अजगर पर पड़ गई और चीखकर वह दूर भागी।

"डर मत रे लजारो !....तेरा अजगर लाया हूं, देख न !.... इधर आ हरामी...."

लजारो डरते-डरते कुछ पास आई।

"दैया रे ! इतना मोटा अजगर तुम पकड़ लाये रे अलबेले !"

भला तू कहे और मैं न लाऊं ?....जा गाँव भर को खबर कर दे....आज रात नाच-गाना, शराब...हा....हा....हा....!.... बड़ा मजा आएगा लजारो !...."

टिकोरा इतनी भयानक हँसी हँसा कि चाहनेवाली लजारो भी डर गई।

"ए जी ! तुम ऐसे न हँसा करो, मुझे डर लगता है..." लजारो ने कहा—"तुम आओ, मैं दौड़कर सबको खबर करती हूँ...."

और लजारो दौड़ गई।

टिकोरा आगे बढ़ा। अजगर भी पीछे-पीछे चला।

थोड़ी ही देर बाद गाँव से सैकड़ों तुम्बियों के बजने की मीठी आवाजें आने लगीं। लजारो के मुख से इतने बड़े अजगर का पकड़ा जाना सुनकर सभी हर्ष से नाचने लगे थे।

टिकोरा जब गाँव के उस्ताद के दरवाजे पर पहुँचा तो वहाँ सारा गाँव ही उमड़ा दीख पड़ा। बाल, वृद्ध, स्त्री, पुरुष सभी खुशी भरी नजर से आते हुए टिकोरा और अजगर को देख रहे थे।

"उस्ताद....ओ उस्ताद !....टिकोरा आ गया.. देखो कितना बड़ा अजगर लाया है...." कितने ही लोग चिल्ला उठे।

तब तक टिकोरा भी आ पहुँचा।

"उस्ताद कहाँ हैं...." उसने पूछा।

"घर में हैं...आते ही होंगे...." किसी ने कहा।

उसी समय सामने की झोपड़ी से हाथ में लाठी लिए हुए पचास के ऊपर का एक वृद्ध निकला।

वही था सँपेरों के गाँव का सरदार—उस्ताद फेरई।

दुबला-पतला शरीर, लम्बा कद, झुर्रीदार चमड़ा, आँखों की भौंह तक के बाल सफेद, आयु के भार से झुकी कमान जैसी कमर।

उस्ताद को देखते ही सब अदब से खड़े हो गये। तुम्बियों का बजना बन्द हो गया। शोर थम गया।

टिकोरा सामने आया।

"टिकोरा! आज क्या पकड़ लाया है रे?" उम्र के अन्दाज से उस्ताद का स्वर काँप रहा था।

"एक अजीब जानवर लाया हूँ उस्ताद!" टिकोरा ने कहा—"पचीस-तीस मन का होगा ही। गाँव वाले दो दिनों तक खूब पेट भरेंगे। देख लो, वह क्या पड़ा है जमीन पर...."

"कुछ-कुछ देख रहा हूँ टिकोरा! आँखें अब तक थोड़ा-बहुत साथ देती चल रही हैं....काफी बड़ा तो है रे, कहाँ से पा गया बेटे!...."

"शिकार कर लाया उस्ताद!....यह तो कहो बच गया, वर्ना यह खुद मुझे ही निगल जाना चाहता था....तो आज रात जलसा पक्का रहा...."

"जैसी सबकी मरजी...." उस्ताद ने कहा—"सबको थोड़ा-थोड़ा काट कर दे दो...उस नीम के पेड़ के नीचे दो महीने पहले जो घड़ा जमीन में रखा गया था, उसे खोदकर निकाल लो..."

घड़े से उस्ताद का तात्पर्य शराब के घड़े से था।

"सब लोग टोकरा लाओ..." टिकोरा ने गाँव वालों से कहा।

भगदड़ मच गई। सब लोग अपना-अपना टोकरा लेकर वहाँ पहले पहुँचना चाहते थे।

"वह तेरे हाथ में क्या है रे?...." उस्ताद ने टिकोरा से पूछा।

"यह?....जूता है उस्ताद! बड़ा नफीस, बड़ा शानदार...

मगर इसका जोड़ा नहीं है..."

"अकेला ही है बेचारा ? तब तो तू पहन भी नहीं सकता इसे....कहाँ यह मिल गया तुझे ?...."

"इसी को देखकर तो रुका था उस्ताद कि यह अजगर दीख पड़ा....एक पीपल के पेड़ के नीचे यह जूता पड़ा था। इसका जोड़ा खोज रहा था मगर वह तो मिला नहीं, यह अजगर ही मिल गया ..." टिकोरा बोला।

उस्ताद चुप रहकर कुछ सोचने लगा।

तब तक टोकरे लिए हुए गाँववाले आ पहुँचे !

"तो इसे काटूँ उस्ताद...." टिकोरा ने पूछा !

"हाँ, पहले इसकी गर्दन काट डाल .." उस्ताद ने कहा—"फिर धीरे से पेट चीर, ताकि खाल खराब न हो....बड़ी लम्बी-चौड़ी खाल होगी बेटा ! उस कोने में कटार रखी है, जाकर उठा ला....मैना, ओ मैना, जरा टिकोरा को कटार तो दे दो बेटी "

आँखों में तीर और हाथों में कटार लिए बूढ़े उस्ताद फेरई की जवान बेटी मैना झोपड़े के बाहर निकली।

कटार पकड़ते-पकड़ते ही आँखों के तीर से टिकोरा का कलेजा घायल हो गया। उसने मुस्कराते होठों और कुछ कहती आँखों से मैना की ओर देखा।

मैना के नेत्र लाज में भरकर जमीन की छाती पर घाव करने लगे।

गाँव भर में मैना अपनी गम्भीरता और सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध थी। किसी से अधिक बोलती न थी, जवान होने पर भी किसी की आँखों के सामने नहीं पड़ती थी, अपने काम से काम था उसका।

और टिकोरा उसके इसी मौनआकर्षण पर फिदा था।

गाँव वाले अजगर का मांस पाने के लिए अब बेताब हो उठे थे।

टिकोरा निश्चल पड़े हुए भीमकाय अजगर के पास आया।

हाथ की कटार उठी।

कटार काफी तेज थी और चलानेवाले के हाथों में ताकत भी कम न थी।

सो एक ही वार में अजगर का सर अलग जा गिरा।

लोगों के मुख से खुशी की एक चीख निकली।

मगर टिकोरा अपना हाथ रोककर ध्यान से कोई चीज देख रहा था।

अजगर के खून से लथपथ कटे हुए सर के पास ही कोई कोई चीज पड़ी हुई थी, जिसे टिकोरा ने झुककर उठाया और आश्चर्यविस्फारित नेत्रों से देखने लगा।

अन्य लोगों की दृष्टि भी उस चीज पर पड़ी।

"उस्ताद !..." टिकोरा का विस्मित स्वर था !

"क्या है बेटे ?...."

"जूता..."

"कैसा जूता ?..."

"जैसा मैंने उस पेड़ के नीचे पाया था न, ठीक वैसा ही.... उसी का जोड़ा इस अजगर के कटे सर से निकला है उस्ताद !...."

"अजगर के सर से..." उस्ताद कुछ सोचने लगा—"अजीब बात है यह तो !..."

"देखो उस्ताद ! दोनों जूते एक-से ही हैं..." टिकोरा दोनों

जूते उस्ताद ने सामने ला रखा।

"हाँ हैं तो दोनों एक समान...." उस्ताद बोला—"टिकोरा, मालूम होता है, यह अजगर कोई आदमी निगल गया है...."

"आदमी ?...." सभी के मुख से हैरानी की आवाज़ निकली।

"हाँ ! इसके पेट में जरूर कोई आदमी है...." उस्ताद उतावली के साथ बोला—"टिकोरा ! जरा होशियारी से इसका पेट चीर बेटा ! अगर अधिक देर न हुई होगी तो मैं इसे बचा लूँगा... जल्दी कर बेटा ! पता नहीं किस बड़े आदमी को यह निगल गया है कमबख्त ! ये जूते तो किसी अमीर के ही लगते हैं .."

टिकोरा अजगर के पास दौड़ा आया ! उस्ताद भी पास ही आ खड़ा हुआ।

टिकोरा ने कटार अजगर के शरीर में चुभोई।

"और धीरे से बेटा !....बहुत सँभल कर...." उस्ताद ने फिर चेतावनी दी।

टिकोरा अपने फन में माहिर था। अजगर का पेट धीरे-धीरे फटने लगा।

"उस्ताद !...." टिकोरा चिल्लाया।

"क्या है ?"

"उस आदमी का पैर...."

"ठीक है...." उस्ताद बोला और खुद भी जमीन पर बैठकर गौर से देखने लगा—"सँभल कर कटार चला बेटे !...बदन इसका अभी खराब हुआ नहीं मालूम होता—ओ मैना ! मेरी चारपाई बिछा दे बेटी ! और उसके नीचे कड़ाही में खूब आग

लगा दे ! जरा जल्दी कर तू भी...ओ चमकू ! तुम लोग कई आदमी दौड़कर कई घड़े पानी ला रखो.. जाता क्यों नहीं जल्दी ? काम के वक्त बदन में जरा फुर्ती लाना सीख..."

"उस्ताद !...." टिकोरा ने कहा—"यह देखो, इसके हाथ में घड़ी है, उँगली में सोने की अँगूठी....मेरे बाप ! जरूर यह कोई अमीर आदमी है...."

उस्ताद अजगर के चीरे जाते हुए पेट पर झुका हुआ चुपचाप गम्भीर भाव से देख रहा था, सब कुछ।

अजगर का प्राण ज्यों-ज्यों निकल रहा था, त्यों-त्यों उसका शरीर ऐंठा जा रहा था।

देखकर उस्ताद बोला—"अरे ! तुम लोग इसे दबाये रहो ! शैतान ऐंठ कितना रहा है ? धीरे से टिकोरा ! जरा भी हाथ बहका तो इस आदमी को कटार जा लगेगी...."

मैना ने चारपाई बिछाकर उसके नीचे ढेर-सी आग सुलगा दी थी। चमकू और उनके साथियों ने बीसों घड़े पानी ला रखा था।

"उस्ताद ! यह तो अभी बिलकुल जवान है...." टिकोरा की आवाज आई—"यह देखो, इसका मुँह जैसा सवेरे का सूरज !"

"सच ! बेचारा नौजवान है। उस्ताद बोला—"इसे धीरे से उठाकर चारपाई पर डालो....देखो बदन को जरा भी झटका न लगे...जल्दी करो तुम लोग ! खड़े-खड़े मुँह क्या देख रहे हो ?"

उस्ताद का हुक्म पाना था कि अजगर के पेट से निकला

हुआ बेहोश नौजवान आहिस्ते से उठाकर चारपाई पर डाल दिया गया।

उस्ताद चारपाई के पास आया और उस युवक का चेहरा गौर से देखने लगा। फिर उसकी छाती पर हाथ रखकर देखा।

"धड़कन का पता नहीं चलता, मर गया है!..." उस्ताद बोला—"मगर इसकी कोख कुछ गरम है अभी....शायद बच जाय....'

उस्ताद ने उसकी बन्द पलकें पलट कर देखीं।

बोला—"कुछ-कुछ उम्मीद है। बेटी मैना! मेरा थैला तो ले आ दौड़कर ...टिकोरा! तू अजगर को बाँट दे काटकर और सब लोग जलसे की तैयारी करो....हम और मैना इस जवान को सँभालने की कोशिश करेंगे। भाग्य में होगा तो बच ही जायगा...."

उस युवक की चिन्ता छोड़कर गाँव वाले अपने जलसे की फिक्र में लगे।

झोपड़ी के भीतर से हाथ में मैला-सा एक बड़ा थैला लिए मैना बाहर आई और लाकर वह थैला उस्ताद के सामने रख दिया।

बूढ़े शरीर की फुर्ती इस समय देखते ही बनती थी।

लपककर उस्ताद ने झोला खोला और उसमें से कोई बुरादा निकाल चारपाई के नीचे जलती हुई आग में छोड़ दिया।

तीव्र गन्ध का विकराल धुआँ उठा, जिससे बेहोश युवक का सारा शरीर ढँक गया

उस्ताद जमीन पर बैठ गया और मन ही मन कुछ बुदबुदाने

लगा। बीच-बीच में वह थोड़ा-थोड़ा बुरादा लेकर आग में भी छोड़ता जाता था।

मैना चुपचाप खड़ी थी।

गाँव वाले टोकरा भर-भर कर अजगर का मांस ढोये जा रहे थे।

मन्त्र पढ़ते-पढ़ते उस्ताद की आँखें बन्द हो चलीं। बूढ़े शरीर में रह-रहकर फुरफुरी उठने लगी। आग से तीव्र गन्ध का धुआँ बराबर उठता रहा।

"मोरपंख..." उस्ताद के मुख से निकला।

दौड़कर मैना मोरपंख की बनी हुई एक मोरछल उठा लाई। उस्ताद उठ खड़ा हुआ हुआ और मोरछल हाथ में लेकर उसी से युवक का वदन सहलाता हुआ दूसरा मन्त्र पढ़ने लगा।

मैना बड़े गौर से उस युवक का चेहरा देख रही थी।

कितना सलोना चेहरा है इसका!—ऐसा तो इस गाँव में किसी का नहीं। यहाँ जो भी हैं, सभी खूँखार आकृति वाले।

बेचारा नौजवान!

जी उठे तो कैसा रहे!—कितना अहसान मानेगा यह हमारा!

मैना की दृष्टि युवक की अँगूठी पर चली गई। कीमती हीरे की अँगूठी अजीब ढंग से चमक रही थी। उस चमक पर मैना की आँखें टिक नहीं पाईं। पलकें ढँप गईं उसकी।

"मैना!..."

उस्ताद ने पुकारा तो मैना चौंक पड़ी।

"बापू! जी जायगा यह!"

"तू चुप भी रह! चारपाई के नीचे से आग उठा ले और

घड़ा उठाकर इसके बदन पर खूब पानी डाल....मैं इसका बदन धोता हूँ..." उस्ताद ने कहा।

मैना ने बड़ी तेजी से सब काम किया।

वह पानी डालने लगी। उस्ताद अपने हाथों से रगड़-रगड़ कर युवक का बदन धोने लगा।

घण्टों नहलाने के बाद उस्ताद ने सूखे कपड़े से उसका सारा बदन पोंछा।

फिर झोले से एक बड़ी-सी बोतल निकाली।

उसमें था साँप का तेल—भयानक कोबरा तथा अन्य विषैले जानवरों की चर्बी से बनाया गया।

"बेटी! चल इसके बदन की मालिश कर..." बोला उस्ताद।

बाप-बेटी उस अजनबी के बदन पर साँप के तेल की मालिश करने लगे।

"जरा जोर लगाकर बेटी!....अब मौत इसे नहीं पा सकती....मालिश करती चल! इसके बदन का कालापन दूर होता जा रहा है... देख रही है न।"

मालिश चलती रही कई घण्टों तक।

उधर गाँव के बीचोबीच बड़े-से इमली के पेड़ के नीचे जलसा हो रहा था। सारे ग्रामीण आ पहुँचे थे। अजगर का मांस खाकर और कुल्हड़ पर कुल्हड़ शराब पीकर सब मतवाले हो रहे थे।

नगाड़े बज रहे थे। तुम्बियों की मधुर आवाज दूर-दूर तक गूंज रही थी। कई स्त्रियाँ और पुरुष गलबाँही डाले नाच रहे थे मदमस्त होकर। साँप की चर्बी की कई मशालें जल रही थीं।

टिकोरा और लजारो रोशनी से दूर एक अँधेरे कोने में उलझ रहे थे। टिकोरा पी रहा था, लजारो पिला रही थी। बीच-बीच में खुद भी दो-एक कुल्हड़ पी लेती थी।

"चलो नाचें रसिया !...." लजारो ने लड़खड़ाती आवाज में कहा।

"अभी नहीं रे छबीली ! अभी पिलाती चल... जब तक बदन की एक-एक हड्डी बेहोश न हो जाय, तब तक नाचने में मजा क्या आयेगा... आज तुझे निहाल कर दूँगा अलबेली। तू बहुत दिनों तक तड़प चुकी मेरे लिए..."

"अब तो कभी मैना के पास नही जाओगे मेरे राजा !..." लजारो ने टिकोरा के गले में हाथ डालते हुए पूछा।

"छोड़ उस ऐना-मैना की बात रे ! इस वक्त तो तेरे ही पास हूँ... भर ले, जी भर कर जी अपना...भर न, एक कुल्हड़ और भर...."

"लो..."

"पहले तू पी...." कहकर टिकोरा ने कुल्हड़ लजारो के होठों से लगा दिया। लजारो ने दो घूंट पीया—"अब मुझे दे या कुल तू ही गट कर जायगी...." लजारो से छीनकर टिकोरा ने कुल्हड़ खाली कर दिया।

"नाचेगी तू ?..."

"तुम्हारी महुवर की आवाज पर मेरे छैला, मैं नाचते-नाचते जान न दे दूँ तो कहना...चलते हो...नगाड़े गड़गड़ा रहे हैं कब से..."

"पैरों में घुँघरू बाँध रखे हैं या नहीं ?..."

"देखो रसिया !...देख लो..." कहकर लजारो ने घुँघरू बँधे हुए अपने पैर हिलाये। घुँघरू का मादक स्वर तुम्बी और नगाड़े की आवाज में घुल-मिल कर विलीन हो गया।

"रसीली ! तू तो आज खूब बन-ठनकर बैठी है..." टिकोरा ने कहा—"चल, फिर देखूँ तो कितना नाचती है....मन्तर फूंक कर महुवर बजाऊँगा, समझ ले "

"मुझे क्या डराते हो अलबेले। एक-एक तान पर हजार-हजार बल खाऊँगी...."

दोनों उठकर डगमगाते पैरों से बीच जलसे में आ खड़े हुए।

उन्हें देखकर नगाड़े की आवाज और तेज हो गई!

महुवरें जोर-जोर से बजने लगीं।

"चल री छबीली!...." मुँह से महुवर लगाते हुए बोला टिकोरा।

और जबाव में लजारो के पाँव बोल उठे—छम्! छम्!

टिकोरा ने महुवर फूँक मारी। दूसरी महुवरों का बजना रुक गया।

नगाड़ा बज उठा—टक-टक-धिन!

लजारों के पाँव बोले—छूमछननन्!

महुवर मीठी आवाज में गाने लगी। लजारो बेहोश-सी हो नाचने लगी।

उधर उस बेहोश युवक के बदन में साँप के तेल की मालिश हो रही थी। महुवर की सुरीली तान, नगाड़े की गड़गड़ाहट तथा घुँघरू का छूमछननन् वहाँ तक सुनाई पड़ रहा था।

"तू जलसे में नहीं जायगी मैना?" उस्ताद से पूछा।

"नहीं बापू!...."

"जा देख आ न!....अब तो इसकी साँस भी चलने लगी है। थोड़ी देर और मालिश करने पर यह होश में आ जायगा...."

"बापू यह कौन होगा?" उत्सुक वाणी में पूछा मैना ने।

"मैं क्या जानूँ! होगा कोई अमीर शहर का! इसकी मौत वहाँ खींच लाई थी, मगर हमारे हाथों बच गया बेचारा!"

"इसकी अँगूठी बड़ी अच्छी है बापू ! अँधेरे में कितनी चमक रही है।

"अमीरों के घर के पत्थर तक चमकते हैं बिटिया ! फिर यह तो सोने की अँगूठी है ! इसका नग भी हीरे-पन्ने का होगा..."

"पत्थर भला कैसे चमकते होंगे बापू ! ऐसे ही पत्थर होंगे इन परदेसी बाबू के घर भी ?" नादान मैना को पत्थरों के चमकने की बात पर बेहद आश्चर्य हो रहा था !

"यह सब तू नहीं समझ पायेगी मैना...."

"समझने की कोशिश करूँगी बापू ! तुम बताओ तो सही.... सुनती हूँ, शहरों में चाँद की तरह उजले पत्थर होते हैं...."

"होते हैं जरूर....उन्हें संगमरमर कहते हैं...."

"तो वे चाँद की तरह चमकते होंगे, क्यों बापू ? जब तो घर में मशाल भी न जलानी पड़ती होगी। वैसा ही एक पत्थर का टुकड़ा तुम भी लाओ न बापू !"

"अरी चुप भी रह छोकरी ! समझ नहीं सकती कुछ तो क्या फजूल माथा-पच्ची करती है....जबान के साथ-साथ अपने हाथ भी तनिक तेज चला....अब यह परदेसी होश में आता जा रहा है.... जोर-जोर से मल न....और लगा ले तेल....बस कर या पूरी बोतल ही ढाल देगी....इसके पैर के तलवे की मालिश कर...."

मैना तेजी से तेल मलने लगी। मगर उसकी निगाहें युवक के निस्तेज मुख पर लगी रहीं।

"बापू...."

"क्या है छोरी !"

"इसे अजगर निगल गया था, फिर यह जिन्दा हो गया, कितने अचरज की बात है....है न बापू !"

"इसमें कोई अचरज नहीं....अजगर के पेट में जाकर जीव कई घण्टों तक जिन्दा रहता है....धीरे-धीरे उसकी जान निकलती है मैना !....तू बात सुनने लगती है तो अपना हाथ क्यों रोक देती है छोरी !...."

उसी समय अजनबी युवक के गले से एक धीमी-स्पष्ट कराह की आवाज निकली।

"बापू !....परदेसी जिन्दा हो गया बापू !...." खुश होकर बोली मैना।

"बिटिया ! अन्दर जाकर थोड़ी शराब उठा ला....इसके बाद खाना पकाने का इन्तजाम कर...लोग जलसा मना रहे हैं और हम यहाँ अब तक भूखे पड़े हैं...." उस्ताद बोला।

"इसकी जान बचाकर हमने कितना पुन्न कमाया बापू सो तो न कहोगे...."

कहकर मैना झोपड़ी में चली गई।

कुछ ही देर बाद मिट्टी के एक कुल्हड़ में थोड़ी-सी तेज शराब भर लाई।

"मैं इसका मुँह खोलता हूँ...." बोला उस्ताद—"तू इसे पिला दे....देखूँ, कितनी है ? हाँ ठीक है सब पिला दे ..."

मुख में शराब पड़ते ही युवक के बदन में हलका-हलका कम्पन हुआ।

"अब ठीक है बेटी ?....तू चूल्हा जला...जरा जल्दी करना !"

मैना चली गई।

बूढ़ा बैठा हुआ युवक के तलवे सहलाता रहा। क्षण-क्षण पर उनमें जीवन के लक्षण प्रकट होते जा रहे थे।

कुछ ही दूर पर होता हुआ जलसा अब पूरे जोर पर था।

महुवर की आवाज बड़ी स्पष्ट सुनाई पड़ रही थी।

एकाएक बूढ़े उस्ताद ने देखा—युवक का एक हाथ उठा फिर दूसरा और तब दोनों महुवर की गति पर नृत्य के भाव प्रदर्शित करने लगे।

उस्ताद चौंककर उठ खड़ा हुआ।

युवक की आँखें बन्द थीं, मगर हाथ नाच रहे थे, पैरों में भी अब गति आ रही थी धीरे-धीरे।

उस्ताद कुछ देर तक यह विचित्र घटना देखता रहा। वह निश्चिन्त था कि युवक होश में नहीं आया था। फिर उसके हाथ और पैरों के इस नृत्य का क्या तात्पर्य था।

और अब तो महुवर की ताल पर युवक का सर भी झूम रहा था, जैसे मदोन्मत्त कोई नाग उस मादक स्वर-लहरी पर मुग्ध हो अपने फन निकाल झूमता है।

"मैना !....ओ मैना...." पुकारा उस्ताद ने।

उसके स्वर में इतनी हैरानी थी कि सारा काम छोड़ मैना दौड़ी आई।

"है क्या बापू !...."

मगर तुरन्त ही उसकी दृष्टि युवक की उस विचित्र भाव-भंगिमा पर पड़ी। वह काँप कर बूढ़े बाप से लिपट गई। अँधेरी रात में बेहोश युवक का वह अंग-संचालन वास्तव में भयंकर लग रहा था।

"बापू !....यह क्या है बापू....क्या हो गया है इस परदेसी

को ?" मैना का स्वर भयभीत था।

"मैं सोच रहा हूँ...." उस्ताद गम्भीर आवाज में बोला—"बेटी दौड़कर जा और जलसे से आती हुई महुवर की आवाज बन्द करा दे....कह दे, जलसा हो मगर महुवर न बजे....दौड़कर जा मैना !"

मैना आज इतनी तेज दौड़ी, जैसे उसके शरीर की भरपूर जवानी का बोझ एकदम हल्का हो गया हो।

उस्ताद हैरत में भरा खड़ा ही रह गया।

थोड़ी ही देर में जलसे से आती हुई महुवर की मीठी आवाज बन्द हो गई। उस्ताद ने आश्चर्य से देखा कि अब युवक का अङ्ग-संचालन भी बन्द हो गया है।

मैना भी आ पहुँची, युवक को निश्चल देखकर उसे कुछ सन्तोष हुआ।

"क्या बात थी बापू !...."

"मेरा ख्याल ठीक उतरा....इस पर अजगर की छाप पड़ गई है, तभी महुवर की आवाज पर यह नाचने लगा....इसका दिमाग डर से इतना बिगड़ गया है कि यह अब अपने को भी अजगर ही समझने लगा है....होश में आ जाने पर सब ठीक हो जायगा....तू थोड़ी शराब और ला...."

युवक को एक कुल्हड़ शराब और पिलाई गई।

"अच्छा तू बैठ इसके पास—मैं खुद खाना बनाये लेता हूँ—देख, अब इसने आँखें खोल दी है! जल्द ही यह पूरे होश में आ जायगा, तू इसके तलवे सहलाती बैठी रह....इसे धीरे-धीरे बुलाने की कोशिश कर...."

बूढ़ा उस्ताद अन्दर चला गया। मैना परदेसी का तलवा मलने लगी।

युवक की आँखें खुल गई थीं। साँस भी मजे में चल रही

थी। कभी-कभी अङ्गों में हरकत भी हो जाया करती थी।

"परदेसी !....होश में आओ परदेसी !...."

परदेसी की जगह अगर कोई पत्थर का पुतला भी होता तो मैना की मीठी पुकार सुन उसकी जबान हिल उठती।

मगर युवक न हिला, न डुला।

उसके नेत्र एकटक ऊपर लगे हुए थे....आसमान की छाती पर जहाँ छोटे-बड़े तारों की विचित्र आँख-मिचौनी हो रही थी।

"बोलो जी परदेसी ! उधर आसमान पर क्या देख रहे हो ? मर गये होते तो वहाँ जाते....अब तो जी उठे हो....आँखें नीची करो न ! देखो तुम्हारा पैर सहला रही हूँ मैं...."

मगर परदेसी के नेत्र आसमान की सवारी छोड़ नीचे नहीं उतरे।

"अजी ओ बाबू !...सुनते हो ?...या आँखें खोलकर भी कानों का फाटक बन्द ही किये रहोगे ?"

"......"

"मैंने कहा, आसमान के तारों का गिनना छोड़ो और जमीन पर के चाँद गिना करो परदेसी ! जरा अपने आस-पास तो देखो...तनिक पलकें भी झपका लिया करो, वरना एकटक देखते-देखते आँखें जवाब दे डालेंगी...."

परदेसी की पलकें जरा-सी हिलीं, आँखों की पुतलियाँ नीचे उतरकर मैना के सलोने नेत्रों पर आ टिकीं।

हाथ-पैर हिले और उसने करवट बदली।

"लेटे रहो अभी चुपचाप ! करवटें बदलते-बदलते रात तो भले ही कट जायगी मगर बदन में दर्द भी खूब होगा...." बोली मैना।

तभी उस्ताद ने पुकारा—"ओ मैना...."

"क्या है बापू !...हाथ जल गया क्या ?...."

"नहीं तो....बाहर मेरा थैला रखा है, उसे लाकर यहाँ रख जा तो...."

मैना थैला लेकर अन्दर आई।

"लो बापू....परदेसी होश में आ गया है। अब घूर-घूर कर ताक रहा है। अभी उसने अपने-आप करवट भी बदली है...."

"भगवान का गुन गा रे लड़की ! जिसने मेरे हाथों उसकी जान लौटाई...चल उसके पास बैठ। उठकर बैठना चाहे तो थोड़ा-सा सहारा दे देना। परदेसी है न, मुसीबत का मारा...."

उस्ताद फिर चूल्हा फूँकने में तल्लीन हो गया।

मैना अभी दरवाजे के पास ही पहुँची थी कि बाहर किसी भयानक अजगर की फुफकार सुनाई दी और अँधेरे में जमीन पर कोई बड़ा-सा जन्तु रेंगता हुआ दिखाई पड़ा।

"बापू !...."

चिल्लाती हुई मैना भीतर भागी।

"क्या है रे ? डरती क्यों है ? कोई साँप या अजगर ही तो होगा ..." बोला उस्ताद—"सँपेरे की बिटिया होकर साँप से डरती है...."

"नहीं बापू ! वह दूसरी तरह का जानवर है...बिलकुल दूसरी तरह का..." मैना हांफती हुई बोली।

"दूसरी तरह का ? कैसा रे !"

"अँधेरे में ठीक से देख भी न पाई बापू !"

"चल, मैं चलता हूँ..."

बूढ़े ने मशाल उठाई और दरवाजे पर आया। पीछे-पीछे मैना भी थी।

तभी फिर अजगर जैसी गहरी फुफकार सुनाई पड़ी।

मशाल की रोशनी में कुछ देखकर मैना बोल उठी—"यह तो वही है बापू !"

सचमुच वही था।

बिलकुल वही !

वही युवक ! वही परदेसी !

ठीक अजगर की तरह मुँह से फुफकारता हुआ, जमीन पर उसी ढंग से घिसटता आगे बढ़ रहा था।

"बापू !...."

"चिल्ला मत छोरी !...." उस्ताद आश्चर्य में भरकर खड़ा था।

"फों !...."

"बापू ! यह आदमी है या अजगर ?

"हट मैना। भाग उधर से...अरेरेरे !..." उस्ताद के मुख से घबराहट की आवाज निकल पड़ी।

जमीन पर रेंगता हुआ वह मानव अजगर मैना के पास तक पहुँच चुका था।

उस्ताद ने पुकारा मगर मैना सँभल न पाई और उस मानव अजगर ने उसे अपने हाथों में जकड़ लिया और उसका सर अपने मुँह के पास ले जाकर निगलने का प्रयत्न करने लगा।

घबड़ाये हुए उस्ताद ने शीघ्र ही अपने को सँभाला। मैना चीख रही थी, वह बोला—"घबड़ाती क्यों है ?...तुझे निगल थोड़े ही जायगा ? है तो आदमी ही।...शैतान की एक-एक हरकत अजगरों जैसी है, वैसे ही फुफकारना, वैसे ही रेंगना...मैं अभी इसके होश ठिकाने लगाये देता हूँ...."

उस्ताद मन ही मन कुछ बुदबुदाने लगा।

देखते ही देखते उस मानव अजगर का शरीर ढीला पड़ने लगा और वह मैना को छोड़कर उस्ताद के पैरों पर आ लेटा।

"अब बच्चू का दिमाग ठिकाने आया...." उस्ताद हँसकर बोला।

मैना उठकर हाँफती-काँपती खड़ी हो गई एक किनारे।

"इस मैना को क्या हो गया है उस्ताद!....इस तरह घबड़ाई-सी क्यों है!" तभी भीतर आता हुआ टिकोरा बोला—"अरे, यह जवान अच्छा हो गया क्या?"

"अच्छा तो हो गया बेटा!...." उस्ताद ने कहा—"मगर इसके दिमाग में अजगर का भूत आ घुसा है..."

"कैसा?...."

"यह बोलता है अजगर की तरह, चलता है वैसे ही जमीन पर रेंगकर... अजीब जानवर से पाला पड़ा है टिकोरा!....अभी यह मैना को पकड़ कर निगल जाना चाहता था?"

"अच्छा! तो हुक्म दें, इन अजगर बाबू को ठिकाने लगा दूँ..." टिकोरा के मुख पर क्रूरता के भाव आ गये थे।

"नहीं टिकोरा! जिसकी जान बचाई है, उसे चंगा करने की कोशिश करूँगा....ऐसा सुन्दर जवान पता नहीं किस घर का चिराग होगा...इसे ले चलकर बाहर चारपाई पर लिटा दे बेटे!...इसे मन्तर से बाँध दिया है मैंने! अब बिना मेरी मर्जी के हिल-डोल नहीं सकेगा यह..."

"इसका पिण्ड छोड़ो उस्ताद! अब यह नहीं जी सकता.... अगर जीयेगा भी तो अजगर बनकर ही रहेगा।...."

"चुप रहो तुम टिकोरा!" उस्ताद बिगड़ कर बोला—"ऐसी बात फिर कभी मत कहना। मैं इसे अभी ठीक करूँगा...ले चलो—उठाओ इसे..."

जलती आँखों से उस्ताद को घूरता हुआ टिकोरा बोला—"बिगड़ो मत उस्ताद ! सच पूछो तो इसकी जान मैंने ही बचाई है। मैं उस अजगर को यहाँ न लाता तो क्या तुम कभी इसका पता पा सकते थे !...."

कहते-कहते टिकोरा ने उस युवक को पीठ पर लादा और बाहर चारपाई पर ला पटका। युवक यद्यपि होश में था ! आँखें भी खुली थीं फिर भी उस्ताद के मन्त्र-बल से वह निश्चेष्ट पड़ा था।

"इसे जिला नहीं सकते उस्ताद ! अजगर के बदन की गर्मी ने इसे पागल बना दिया है। अब यह दो-चार दिन और चल ले—बस !...." टिकोरा ने कहा।

कुछ सोचता हुआ उस्ताद बिगड़ा—"तू चल दे बस यहाँ से अभी !... अपने उस्ताद की करामात देखनी हो तो जबान पकड़े खड़ा रह—"

मगर टिकोरा वहाँ न रुका, पैर पटकता हुआ चला गया ?

वह उदण्ड युवक उस परदेसी को अपना प्रतिद्वन्द्वी समझने लगा था। उसे डर था कि यह होश में आकर मैना का प्यार न पा ले।

"बेईमान कहीं का ! अपने को लगाता है।" उस्ताद बड़बड़ाया—"मैना ! मेरा थैला ला और आग की कड़ाही भी.... मौत का भूत इसके सर से उतारा तो अजगर का भूत कैसे नहीं उतरेगा ?"

चारपाई के नीचे आग सुलगाई गई।

थैले में से कोई दूसरी जड़ी निकाल कर उस्ताद ने आग पर रख दी ! धुआँ काफी निकला मगर पहले जैसा तीव्र गन्ध वाला नहीं।

थोड़ी-थोड़ी देर पर मन्त्र पढ़कर वही जड़ी आग में डालने लगा उस्ताद।

बहुत देर बाद मदहोश युवक के मुख से धीमी आवाज निकली—"धुआँ लग रहा है, आग हटाओ...."

परदेसी के मुख से मानव स्वर सुनकर मैना खुशी से उछल पड़ी।

उठता हुआ बोला उस्ताद—"अब यह आदमी बन गया... भगवान की दया है....ओ छोरी, चल खाना परस दे। बूढ़ी ठठरी में जब भूख उठती है तो रहा नहीं जाता...."

मैना झोपड़ी के अन्दर चली गई।

उस्ताद फेरई ने चारपाई के नीचें की आग हटा दी और तब परदेसी को उठाकर धीरे से बैठा दिया।

• •

"क्या है ?...."

"अजगर का मांस ?...थोड़ा खा लो परदेसी ! बदन में ताकत आ जायगी ...क्यों, क्या सोचने लगे ?...."

"कुछ तो नहीं...."

"कुछ तो जरूर सोच रहे हो... हम गरीब सँपेरे हैं न ! हमारा खाना ही यही है। तुम लोग अमीर हो, रोज ही पकवान खाते रहे होगे, फिर यह खाना क्यों पसन्द आये ?..."

"सो बात नहीं..." परदेसी बोला—"कुछ याद नहीं आता कि मैं अमीर था या गरीब। यह भी मालूम नहीं कि किसी

जानवर का मांस खाया हूँ या नहीं....."

"इसे तो खाना ही पड़ेगा...हम भी तो तुम्हारी ही तरह आदमी हैं। फिर जब हमें इसमें स्वाद मिल सकता है तो तुम्हें क्यों न मिलेगा ?... खा लो जी ! मुझसे हठ करोगे तो अच्छा नहीं होगा..."

"तुम तो व्यर्थ नाराज होती हो...." कहा परदेसी ने—"लाओ खा ही लूँ..."

परदेसी खाने लगा।

"यह तो बड़ा स्वादिष्ट है— तुमने पकाया है इसे ?"

"नहीं तो कौन ?"

"तुम बता नहीं देती तो इसे हलवा ही समझता... तुम मेरे लिए बड़ा कष्ट उठाती हो...किस तरह तुम्हारा बदला चुका सकूँगा ?...."

"रहने दो जी, बात बनाने की आदत अच्छी नहीं होती.... हमारा बदला क्या चुकाओगे तुम ? पहले अपना बदला चुका लो उस अजगर से जिसने तुम्हें निगला था और जिसका मांस तुम इस वक्त खा रहे हो ...."

"तुम्हारा नाम क्या है ?" परदेसी ने खाते-खाते पूछा।

"मेरा नाम ! नहीं जान सके तुम अब तक ?...अभी ही तो बापू ने मुझे मैनावती कहकर पुकारा था ! गाँव का एक-एक बच्चा तक जानता है। यकीन न आये तो पूछ देखो किसी से...."

"तुमसे तो पूछ ही लिया, दूसरों से पूछने की क्या बात है ?...."

"यहाँ तुम्हारी तबीयत तो लग रही है ?...." मैना ने पूछा।

"तबीयत ?....हाँ लगेगी क्यों नहीं ?....मुझे तो कुछ याद

भी नहीं मैना कि तुम लोगों के अलावा और भी किसी को अपने इस जीवन में देखा है कभी....लगता है, यह गाँव ही मेरा अपना है। इससे दूर की बात तो कुछ सोच भी मैं नहीं पाता ! मैं कौन था, कहाँ से आया, क्यों आया, इन प्रश्नों पर विचार करता हूँ तो मस्तिष्क में अन्धकार के आगे कुछ नहीं दिखाई पड़ता। ज्यादा सोचने लगता हूँ तो अन्तर में आँधी-सी चलने लगती है, खोपड़ी उद्वेग से फटने-फटने को हो जाती है। मेरे स्थान पर तुम होती तो समझ पाती मेरी विवशता...."

"जाने क्या बकने लगे तुम ?...." मैना ने ठुड्ढी पर गुलाब की टहनी जैसी सुकुमार उँगलियाँ रखकर आश्चर्य का भाव प्रदर्शित किया—"अच्छा, तुम्हारा नाम क्या है ?"

"नाम ?....." परदेसी ने दोनों हाथों से अपना मस्तक पकड़ कर जोरों से दबाया—"यह न पूछो मैना ! ऐसे सवालों से मुझे बेहोशी-सी आ जाती है। मैंने कहा न, मुझे कुछ याद नहीं जो तुम्हें बता सकूँ। सोचने की बहुत कोशिश करता हूँ मगर अतीत के दृश्य कभी मानस-पट पर उभरते ही नहीं।"

"अरे ! तुम्हें अपना नाम भी याद नहीं रहा !" मैना अगम आश्चर्य में भर कर बोली—"दइया रे, यहाँ के साँपों को तो चाहे जितना दूध पिलाओ मगर वे जहर उगलना नहीं भूल पाते और तुम आदमी होकर अपना नाम-पता तक भूल गये ?..."

मैना ने परदेसी का हाथ अपनी कोमल हथेलियों में भर लिया—"तुम झूठ बोलते हो परदेसी ?....बोलते हो न ?...."

"नहीं तो ? तुमसे झूठ नहीं बोल सकता मैना ! तुम्हें देखकर दिल कहता है मैं तुम्हारे साथ बहुत दिनों से रहता आ रहा हूँ....

मैं तुमसे बहुत सालों से परिचित हूँ....मुझ पर अविश्वास मत करो तुम !"

"ऐसी क्या बात है परदेसी ! तुम भी तो मुझे बहुत अच्छे लगते हो....सच जानो, इतनी बड़ी हुई, गाँव का कोई आदमी मुझे इतना अच्छा नहीं लगा था अब तक—तुम जाना चाहो कभी तो शायद मैं तुम्हें जाने भी न दे सकूँ...अब तो..."

"मैं जा ही कहाँ सकता हूँ ..." परदेसी विवश करुण स्वर में बोला—"तुम लोगों को छोड़कर अब जा ही कहाँ सकता हूँ मैना !"

"तुम तो बड़े भुलक्कड़ हो परदेसी !...." कहा मैना ने—"अपनी जिन्दगी में मैंने तुम्हारे जैसा लापरवाह आदमी नहीं देखा। कम से कम इस गाँव में तो ऐसा कोई नहीं....टिकोरा है न ! वही टिकोरा ! जिसने तुम्हें अजगर के पेट से निकाला था... ओ मेरी मइया ! उसे तो एक-एक बात सालों तक याद रहती है...."

"सालों तक ?..."

"हाँ जी, झूठ थोड़े ही कह रही हूँ मैं....अब मैं बड़ी हो गई हूँ न !... जब छोटी थी और टिकोरा के साथ खेला करती थी तो जाने कब कह दिया था, मुझे तो कुछ याद नहीं। अब टिकोरा कहता है कि मैंने उससे ब्याह रचाने का वादा किया था...."

"टिकोरा... उससे ब्याह करोगी तुम मैना !"

"नहीं जी, उसकी बात कह रही हूँ सिर्फ....बड़ी-बड़ी मूछों से भला कौन लड़की खेल सकेगी ? लजारो भले ही रीझ जाय उसकी डरावनी आँखों पर...मुझे तो बाबा, डर लगता है टिकोरा को देखकर ही...एक दिन तो जाने क्या मुझसे माँग रहा था... क्या कहते हैं उसे—बोसा ! क्या मरद औरत का बोसा भी लेता

है परदेसी ! तुमने कभी लिया है किसी का ?"

"मुझे याद नहीं कुछ..." परदेसी हैरान था उस अबोध युवती की बातें सुनकर, जो जवान हो गई थी मगर जवानी किसे कहते हैं यह नहीं जानती थी—जैसे बाल्यावस्था के ही वृक्ष में कुदरत ने जवानी के फल लगा दिए हों—"मुझसे बेकार की बातें मत करो मैना !...."

"तुम बड़े ढीठ हो परदेसी ! मुझे डाँटते हो ? बेकार की बातें तो तुम्हीं करते हो—मुझे यह नहीं याद, वह नहीं मालूम.... मैं तो, जो नहीं जानती वह पूछ रही हूँ। शहर के बाबू हो, थोड़ी सीख मुझे दे दोगे तो हमारे जैसे छोटे नहीं हो जाओगे !....सुना तुमने, बापू कह रहे थे, तुम किसी बड़े खानदान के हो...."

"रहा होऊँगा कभी...." परदेसी शुष्क स्वर में बोला—"अब तो सब-कुछ भुलाकर तुम्हीं लोगों का हो चला हूँ....यह लो इसे...."

"खा चुके सब ?....लो हाथ धो डालो....पेट भरा या नहीं ?...."

"वह तो तुम्हें देखकर ही भर चुका था...." बोला परदेसी।

"जाओ जी, बड़े वैसे हो तुम ! भला मुझे देखकर किसी का पेट क्या भरेगा ?....टिकोरा कहता है, मैं बड़ी सुन्दर हूँ....तुम्हें कैसी लगती हूँ परदेसी ! सुन्दर ही तो ? या और कुछ ?...."

"........"

"बोले नहीं कुछ ?"

"सोच रहा हूँ...." एकटक मैना की आंखों में देखता हुआ बोला परदेसी।

"सोच लो खूब, मगर इस तरह मेरी ओर मत देखो। देख तो रहे हो तुम मेरी आँखों में, लगता है कलेजा तक जला जा रहा हो मेरा....देखो न, कितनी जोर-जोर धड़कने लगा है!"

कहकर मैना ने परदेसी का हाथ अपने सीने पर रख लिया।

"देखा ?"

"हाँ !..."

"क्या मिला !"

"थोड़ी-सी राहत !...." परदेसी ने कहा !

"मैं पूछती हूँ, मेरा कलेजा धड़क रहा है या नहीं !"

"धड़क तो रहा है...."

"तो फिर इस तरह मेरी ओर मत देखो...." मैना बोली—"देखते-देखते तो तुम मेरा कलेजा निकाल लोगे परदेसी ! तुम्हारा इस तरह से देखना मुझे अच्छा तो लगता है फिर कलेजा क्यों धड़कने लगता है ? ऐसा तो पहले कभी नहीं हुआ था। तुम क्या आये, मेरी जिन्दगी में दर्द भरते आये....तुम तो अब ठीक हो न परदेसी ! कोई दर्द, कोई दुख ?"

"कुछ नहीं..."

"मुझे भी अपने साथ ले चलोगे न ?"

"कहाँ..."

"अपने घर !....कैसा है तुम्हारा घर परदेसी ? तुम्हारे यहाँ के पत्थर भी चमकते हैं क्या ? बापू कहते थे कि अमीरों के घर के पत्थर भी चमकते हैं..."

"मैं जा ही कहाँ रहा हूँ मैना !... किधर जाऊँ ? जानती हो मेरा घर तो पहुँचा दो..."

"भूल गई थी परदेसी ! कि अब तुम्हारा कोई घर नहीं.... बापू... ओ मेरे बापू ।"

"क्या है री छोरी ?" झोपड़ी में से चिल्लाकर बोला उस्ताद—"चिल्लायेगी तो ऐसा, जैसे कोई अजगर ही निगल रहा हो—है क्या ?...."

"सुनते हो इस परदेसी की बात !...." मैना पुकार कर बोली—"कहता है...."

"क्या कहता है..."

"तनिक बाहर निकलो बापू !....इधर आओ तो बताऊँ ...."

उस्ताद झोपड़े से निकलकर बाहर आ खड़ा हुआ । हाथ में उसके एक विकराल साँप था ।

"क्या है रे ?"

"बापू ! यह परदेसी कहता है कि इसे कुछ भी याद नहीं... अपना नाम, अपना घर, सब कुछ भूल गया है यह बापू !...भूल गया या झूठ बोल रहा है, तुम्हीं पूछ देखो...."

"क्यों बाबू ! घर जाने का इरादा नहीं है क्या...." उस्ताद ने पूछा ।

"काश, मैं जा सकता !...." परदेसी एक दीर्घ निःश्वाँस लेकर बोला—"मुझे तो कुछ भी याद नहीं आता उस्ताद ?..."

"कुछ भी नहीं ?"

"नहीं !...."

उस्ताद बेहद गम्भीर बनकर कुछ सोचने लगा ।

"अजीब बात है..." बोला वह—"ईश्वर का नाम लो बाबू ? वही पार लगायेगा । इस बीमारी की कोई दवा मेरे पास नहीं..."

"तो अब यह परदेसी यहीं रहेगा बापू ?..." मैना ने पूछा।

"रहने दे बेटी !....इस बदनसीब को अपने दिन गुजारने दे यहाँ...कभी इसकी याद लौटेगी तो हमारे दिन फेर देगा। यह बड़े घर का लाल है मैना ! इसकी सेवा कर। कोई तकलीफ इसे न हो बेटी !...."

"नहीं होगी इसे कोई तकलीफ बापू !" मैना ने कहा।

"उस्ताद, अब कैसा है यह आदमी ?"

उस्ताद ने देखा—आँखों में क्रूर लालिमा और चेहरे पर भयानक भाव लिए खड़ा था टिकोरा।

"आ टिकोरा !...." उस्ताद बोला—"हाँ ! अब तो इसकी तबीयत सँभल गई है।"

"तो लाओ, इसे मैं इसके घर पहुँचा दूँ...ज्यादा दिनों तक यहाँ रहकर क्या करेगा ?"

"सो तो ठीक है, मगर इसका घर कहा है, यह कौन था, कुछ बताता ही नहीं..."

"यह कहता क्या है !...." टिकोरा ने पूछा।

"यह सब भूल गया है बेटे !...." बोला उस्ताद।

"क्या अनहोनी बोलते हो उस्ताद !" टिकोरा विचित्र तरीके से हँस पड़ा—"बनता होगा उस्ताद यह। भला कोई अपना घर भी भूल सकता है !"

"मगर यह तो सचमुच भूल गया है टिकोरा ! इसके चेहरे से यह नहीं मालूम होता कि झूठ बोल रहा हो....भगवान की लीला के आगे हमारी हस्ती ही क्या ?"

"मगर यह यहाँ नहीं रह सकता उस्ताद !...." टिकोरा के स्वर में भयानक दृढ़ता छिपी थी।

"तो फिर यह जायगा ही कहाँ ?" उस्ताद का स्वर स्थिर था।

"जहाँ इसका जी चाहे चला जाय यह !...." टिकोरा की आवाज और भी तेज हो गई थी—"दुनिया भर के लोगों की परवरिश करने का कोई हमने ठेका ले रखा है क्या ?...."

"इन्सानियत का तकाजा है बेटे !...." उस्ताद गम्भीर स्वर में बोला—"तुझे परेशान होने की कोई जरूरत नहीं। यह बोझ भी बनेगा तो मेरे सर का....तेरे घर कभी भीख माँगने नहीं जायगा..."

"मगर उस्ताद ! गाँव वाले इसे बर्दाश्त नहीं कर सकते...."

"किसे ?...."

"इसका इस गाँव में रहना..." टिकोरा ने कहा।

"गाँव वाले नहीं बरदाश्त करेंगे या तू ?....तेरे सिवा किसमें इतनी हिम्मत है जो उस्ताद के सामने सीना तानकर खड़ा हो सके ? तुझे मैंने बहुत दफे माफ किया और तू बराबर शैतान ही होता जा रहा है। मेरी ताकत न भूल टिकोरा...."

"तुम्हारी ताकत जानता हूँ उस्ताद ! तुम्हीं मेरी ताकत नहीं जानते... अब तक तुम टिकोरा को बच्चा ही समझ रहे हो.... तुम्हारे हाथ में साँप है न ? ताकत आजमाना चाहो तो चलाओ ..."

"यह बात !.. " उस्ताद की बूढ़ी नसें आवेग से फूल आईं—सँभल छोकरे ?...तुझे आज मजा न चखाया तो अपने उस्ताद का चेला नहीं...."

"डराओ मत उस्ताद !....चलाओ साँप..."

कहता हुआ टिकोरा वहीं जमीन पर बैठ गया।

उस्ताद भी उससे चार गज की दूरी पर, हाथ में साँप लिए जा बैठा।

"बापू !...." मैना दौड़कर उस्ताद के गले से लिपट गई— "इसे माफ कर दो बापू !...टिकोरा को माफ कर दो। इसकी जान मत लो बापू !...मेरे अच्छे बापू !...."

"चल हट छोरी !...." उस्ताद उसे ढकेल कर बोला— "इस छोरे की इतनी हिम्मत की मुझे ललकारे !"

"उस्ताद, जरा जल्दी करो..." व्यङ्ग्यपूर्ण स्वर में टिकोरा ने कहा।

उस्ताद ने हाथ का विकराल साँप जमीन पर छोड़ दिया। फिर कोई मन्त्र पढ़कर एक चुटकी धूल उस पर फेंकी।

देखते ही देखते शान्त पड़ा हुआ साँप फुफकार मारकर फन निकाल खड़ा हो गया।

मन्त्रों से सनी धूल की दूसरी चुटकी पड़ते ही वह प्रबल वेग से दौड़ा टिकोरा की ओर।

टिकोरा मन ही मन कुछ पढ़ रहा था। तेजी से दौड़े आते हुए साँप पर उसने सात कोड़ियाँ फेंक मारी।

कौढ़ियाँ जाकर साँप के सर पर ताज-सी चिपक गईं और साँप मुर्दे की तरह होकर पड़ रहा।

"देख लिया उस्ताद, टिकोरा की ताकत को ?...." बड़ी जोर से हँसा टिकोरा !

"फिर सँभल छोकरे !...."

उस्ताद ने जमीन से एक चुटकी धूल और उठाई और साँप की तरफ मुँह करके हवा में फूंक दी।

इस वार साँप इतनी फुर्ती से सजग हुआ कि टिकोरा भी दंग रह गया।

उसने कौड़ियाँ फेंकी, धूल फेंकी मन्त्र पढ़े—

मगर सब बेकार !

साँप भयानक फुफकार छोड़ता हुआ बढ़ता गया।

उस्ताद बराबर मन्त्र पढ़ रहा था। आँखें क्रोध से लाल-लाल हो उठी थीं।

चिल्लाया उस्ताद—"चला छोकरे ! अपने सभी मन्त्र इस साँप पर...रुक नहीं सकता यह....रुकेगा नहीं कभी..."

टिकोरा मन्त्र पढ़कर साँप को रोकने की कोशिश करता हुआ भाग रहा था बेतहासा और क्रोधित साँप आँधी की तरह उसका पीछा कर रहा था।

"बापू !....इसे छोड़ दो बापू !...." मैना चिल्ला रही थी।

"नहीं...."

अङ्गार-सी आँखें लिए उस्ताद तनकर खड़ा था।

"उस्ताद !....मुझे बचाओ उस्ताद ?...." टिकोरा की चीख सुनाई पड़ी।

साँप ने टिकोरा को पकड़ लिया था और अपने शरीर से उसका पैर बाँधता जा रहा था। टिकोरा भय से काँपता हुआ खड़ा चीख रहा था।

"क्यों छोरे ! और लड़ेगा ?..."

"मैं हार बैठा उस्ताद ! मुझे माफ कर दो...."

"माफ कर दूँ ? नमकहराम ! तुझे मन्तर सिखाया था मैंने तो क्या इसीलिए कि तू मुझ पर ही अपना बल दिखा ?...." उस्ताद गरजा।

"अब कभी गुस्ताखी नहीं करूँगा उस्ताद !..."

"उस्ताद के बच्चे ! अभी चाहूँ तो यह साँप ऐसा काट

खाये कि दुनिया की कोई भी ताकत तुझे मौत से न बचा सके..."

"नहीं उस्ताद ! ऐसा न कहो....हाथ जोड़ता हूँ....अब कभी कोई गलती हो जाय तो कहना।" गिड़गिड़ा रहा था टिकोरा।

"जाने दो बापू !...छोड़ दो इसे...." मैना ने भी मिन्नत की।

"छोड़ देता हूँ...."

कहा उस्ताद ने और पुनः मन्त्र पढ़ने लगा।

उदण्ड साँप ने अपने बन्धन ढीले कर दिये और धीरे-धीरे उस्ताद के पास आ रहा। उस्ताद ने उसे उठाकर अपने हाथ में ले लिया !

छूटते ही टिकोरा इस तरह भागा कि उसकी पीठ तक दिखाई न दी। मगर जाते-जाते भी मैना ने उसकी आँखों का क्रूर भाव पढ़ ही लिया।

"यहाँ के लोग तो बड़े भयानक हैं..." परदेसी धीरे से बड़बड़ाया।

"डरने की कोई बात नहीं बाबू !...." उस्ताद बोला—"यह तो यहाँ की नित्य की घटना है। ऐसी लड़ाई तो तुम अब अक्सर देखा करोगे...."

"मेरे तो रोंगटे खड़े हो गये उस्तादजी !" परदेसी के स्वर में अब तक भय की छाप थी।

"यह टिकोरा जाने क्यों तुमसे जलने लगा है शैतान !.... मगर बाबू ! मेरे रहते तुम्हारी आँख में एक किरकिरी भी न खटकने पायेगी। खूब आनन्द से रहो तुम...दिमाग ठीक हो जाय और अपने वतन की याद आये तो चले जाना खुशी-खुशी। हमारे

मेहमान हो तुम—और हम गरीबों के साथ भरसक तुम्हें तकलीफ नहीं होने पायेगी..."

"बापू ! देख लेना, यह टिकोरा अब भी अपनी करनी से बाज नहीं आएगा। जाते-जाते ऐसी आँखों से मुझे घूरता गया कि हाय दैया !....बापू ! टिकोरा से हमने कभी ब्याह रचाने का वादा किया था क्या ?...." मैना थी।

"कब ?..."

"कहता है बचपन में !—टिकोरा से कभी मैंने ऐसा कहा होगा बापू ? झूठ ही तो बोल रहा था हरामी ! बचपन की बात तो मुझे याद नहीं रही..."

"उसे बकने दे तू मैना !...." उस्ताद बोला—"उस्ताद की बेटी के साथ ब्याह रचाने के लिए बहुत बड़ी हस्ती चाहिये... वह दो दिन का काँटा अपने को बड़ा तीखा समझने लगा है..."

"तुमने उसे इतने मन्तर क्यों सिखा दिए बापू !..."

"अरी छोरी !...अक्ल जो उसकी बड़ी तेज है..." उस्ताद बोला—"अपनी शैतानी वह छोड़ दे बस, तो ऐसा बन जाय कि सारे गाँव के ऊपर...मैना ! अन्दर मैं तेल तैयार कर रहा था। चलकर मुझे कुछ मदद ही दे दे....इस बाबू को भी लेती चल...."

तीनो झोपड़े में आये।

चूल्हे में आग जल रही थी। कड़ाही में तेल खौल रहा था। जलते हुए तेल से बदबूदार धुआँ उठ रहा था कि परदेसी को अपनी नाक तक बन्द कर लेनी पड़ी।

उस्ताद चूल्हे के पास जा बैठा। हाथ के साँप को उसने गले में लपेट लिया। भयानक साँप सिद्धहस्त मदारी के गले में फूल की

माला बना पड़ रहा।

"मैं क्या काम करूँ बापू !...." मैना ने पूछा फिर परदेसी की ओर देखकर बोली—"परदेसी ! तुम बैठ क्यों नहीं जाते ?...."

परदेसी बैठ गया।

उस्ताद बोला—"तू उन पिटारियों को इधर ला बारी-बारी से और उन्हें खोलकर साँप को कड़ाही में छोड़, तब तक मैं आँच ठीक किये दे रहा हूँ...."

उस्ताद चूल्हा फूंकने लगा।

मैना कोने में रखी पिटारी उठा लाई। खोलते ही एक विकराल गेहुँअन फन निकाल खड़ा हो गया। मैना ने हाथों से उसका फन पकड़ लिया और उसे उठाकर खौलते हुए तेल में जिन्दा ही छोड़ दिया।

परदेसी का कलेजा फड़क उठा। आँखें आश्चर्य से फैल गईं।

मैना दूसरी पिटारी लाई।

फिर तीसरी, चौथी तब पाँचवीं, छठीं और सातवीं...

"अब रहने दे बेटी !....वह मटकी उठा ला। जरा सँभाल कर ! बड़े-बड़े पहाड़ी बिच्छू भरे हैं उसमें। हाथी को डंक मार दें तो उसका सारा बदन पिघल कर बह चले, पत्थर की चट्टान को एक ही डंक से दो टुकड़े कर दें...ऐसे बिच्छू हैं...."

मैना मटकी उठा लाई। बड़ी वजनी थी।

"धीरे से उसका ढक्कन खोलकर एक-एक बिच्छू बाहर निकाल....मगर पहले मन्तर पढ़ ले....फिर इस कड़ाही में बारी-बारी से छोड़...." उस्ताद ने कहा।

मैना ने मटकी का ढक्कन खोल दिया और निश्चिन्त होकर हाथ भीतर डाला।

एक बालिश्त का बड़ा भयानक काला बिच्छू था। उसने उसे कड़ाही में छोड़ दिया।

इसी प्रकार बीसों बिच्छू छोड़े गये।

"अब उस कोने में रखी वह हरी पत्तियाँ कड़ाही में छोड़...."

उस्ताद कहता जा रहा था और मैना करती जा रही थी। इसी प्रकार उस कड़ाही में कितने ही जानवर और जड़ी-बूटियाँ छोड़ी गईं।

इसके बाद उस्ताद उठा और दूसरी कोठरी में जाकर रस्सी में बँधा हुआ तीन फीट लम्बा और एक फुट चौड़ा एक भयानक बिसखोपड़ा खींच लाया।

बिसखोपड़ा को ठीक कड़ाही के ऊपर छत से उल्टा टाँग दिया उस्ताद ने फिर एक नुकीली कील उसके मस्तक में ठोंक दी।

बिसखोपड़ा जोरों से छटपटाया। उसके मस्तक से एक-एक बूँद खून निकल कर खौलते तेल में गिरने लगा।

"अब दो घण्टे तक यह ऐसे ही रहेगा..." उस्ताद आराम की साँस लेकर बोला—"मैना, तू इस परदेसी को थोड़ा घुमा-फिरा ले....ले, यह साँप भी लेती जा! इसकी भी तबीयत बहल जायगी तेरे साथ...."

उस्ताद ने गले का साँप निकालकर मैना की ओर बढ़ाया!

मैना ने उसे लेकर उसी तरह माला बना अपने गले में पहन लिया और परदेसी से बोली—"चलो परदेसी!..."

"कहाँ?..." चौंककर बोला परदेसी। यहाँ की भयानक कार्य-प्रणाली देखकर वह विस्मित था।

"घूमोगे नहीं कुछ ?..." बोली मैना—"पड़े-पड़े पैरों में जंग लग जायगी...."

"चलो देखूँ तो क्या-क्या चीजें अभी और दिखाई पड़ती हैं...." डरता हुआ बोला परदेसी।

"तुम तो अभी से डर गये जी !... फिर हमारा साथ क्या दोगे ?...." हाथ पकड़कर मैना परदेसी को बाहर निकाल ले गई।

दोनों गांव की दुबली-पतली पगडण्डी से आगे बढ़े।

"यह !...." रुकती-सी आवाज में बोला परदेसी, जब उसकी दृष्टि मैना के गले में पड़े हुए सांप पर पड़ी।

"ओह !....यह सांप ?..." मैना हँसी—"यह भी तो घूमने चल रहा है ? यह बापू का पुराना साँप है। इसके पास मनी है और यह उड़ भी सकता है....हमारे साथ रहकर भी तुम इतना डरते हो परदेसी ! उतने बड़े अजगर के पेट में उतर गये, तब तो डर नहीं लगा तुम्हें ?...."

"कहाँ ले चल रही हो मैना !..." परदेसी ने थोड़ी देर बाद कहा—"गांव तो पीछे छूट गया।"

"मेरा साथ तुम्हें अच्छा नहीं लगता क्या ?"

"लगता तो है—कैसे मालूम कि नहीं लगता ?...मगर चलोगी कहां तक इस तरह ?..."

"सामने देख रहे हो ?...." मैना बोली।

"देख तो रहा हूं..." परदेसी ने उंगली उठाकर कहा—"थोड़े पेड़ हैं और ऊंचा टीला !"

"टीला नहीं जी...बापू कहते हैं, वहाँ किसी जमाने में एक

महल था, जिसकी छत पर चढ़कर वहां के लोग तारे तोड़ लाया करते थे, बादलों को पकड़ कर पानी पीया करते थे....मगर सूरज को नहीं पकड़ सकते थे। मैं पूछती हूँ बापू से क्यों, तो कहते हैं बड़ा गरम होता है सूरज, कि उसे छूओ तो हाथ में छाले पड़ जायँ ...हाँ, परदेसी ! एक बात मुझे बताओ तो ?..."

"क्या ?" परदेसी ने पूछा।

दोनों आगे बढ़े ज़ा रहे थे, बातें करते हुए।

"यही कि सूरज और चन्दा तो एक ही आसमान में रहते हैं न ! फिर एक गरम और एक ठण्ढा क्यों होता है ? सूरज चमकता है तो गर्मी से पसीना छूटने लगता है, चांद चमकता है तो ठण्ढक से हवा तक ओस बन जाती है...ऐसा क्यों होता है बाबू !"

कहकर मैना ने परदेसी का हाथ पकड़ लिया।

परदेसी बोला—"तुम तो ऐसी बात पूछती हो जिसका कोई जवाब ही नहीं... क्या बताऊँ तुम्हें !"

"यह कहो कि तुम्हें मालूम ही नहीं शहर के लोग भी यह सब नहीं जानते, बड़ा अचम्भा है इस बात का....मगर इस महल में रहने वाले उस बात को जानते रहे होंगे...."

"तो क्या यह टीला सचमुच कोई महल था ?...."

"हाँ जी ! मैना की जीभ कभी झूठ नहीं बोलती...अभी वहाँ चलकर देख लोगे खुद तुम !....टीले के नीचे टूटी-फूटी कितनी ही कोठरियाँ हैं...."

बातें करते-करते दोनों टीले पर पहुँच गये।

टीले के उस पार उतरते ही किसी समृद्धशाली भवन के ध्वंसावशेष मिलने लगे।

दीर्घाकार बड़े-बड़े खम्भे, पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े चारों ओर पड़े थे। ऐसा लगता था कि उस युग का जीता-जागता खड़ा भवन, आज थककर पाँव पसारे जमीन से लिपटा सोया पड़ा हो।

"उसमें कहाँ घुस रही हो ?..." परदेसी ने टोंका।

"आओ न !...डरते क्यों हो जी ?..." मैना बोली—"जरा सिकुड़ कर मेरी तरह इस दरार में घुसो तो !"

"बड़ी सँकरी दरार है यह तो...उस पार न जानें क्या होगा...."

"उस पार समूचा कमरा है जी ? एकदम साबूत !.... बैठने-लेटने की काफी जगह है...इसे कोई जानता नहीं...एक दिन बापू मुझे यहाँ ले आये थे...बापू बहुत बूढ़े हैं न ! वे तो इस जगह की इतनी बातें जानते हैं कि गाँव का आदमी सपने में भी न देख सका होगा, आओ न !..."

उस पतली-सी भयावनी दरार की राह सिकुड़कर मैना भीतर जा घुसी। बड़ी मुश्किल से परदेसी भीतर हो पाया।

"उफ् ! बड़ा अँधेरा है यहाँ तो मैना !..." परदेसी घबड़ा कर बोला—"कुछ दिखाई भी तो नहीं पड़ता... कहाँ घुमाने लाई हो मुझे...."

"अरी मैया !....मरद होकर भी बड़ा डरते हो तुम तो परदेसी !....यह कोठरी ही तो है ! बापू को जब कोई मन्तर जगाना होता है तो इसी जगह आते हैं कि कोई जाने भी नहीं।

"इस अँधेरे में तो मैं रुक नहीं सकता मैना !..." परदेसी मैना के शरीर से सटकर खड़ा हो गया।

मैना का शरीर सिहर उठा परदेसी के स्पर्श से। वह उसके और पास खिसक आई। परदेसी का स्पर्श उसे जाने कैसा मादक

लग रहा था। भोली मैना ने कभी किसी पुरुष के स्पर्श में इतनी विह्वलता का अनुभव नहीं किया था।

"मैं अभी उजाला करती हूँ..."

कहकर मैना ने अपने गले का साँप निकाल जमीन पर रख दिया और कुछ बुदबुदाने लगी। अँधेरे के कारण परदेसी कुछ देख भी न सका।

एकाएक उस अँधेरी जगह में हल्के हरे रङ्ग की मद्धिम रोशनी फैल गई।

चौंककर परदेसी ने उस ओर देखा।

चमक रही थी कोई छोटी-सी चीज जमीन पर जिसके चारों ओर घेरा डाले मैना का साँप पड़ा था चुपचाप।

"यह क्या है मैना !...यह कौन-सी चीज चमकने लगी ?" परदेसी ने आश्चर्य की दृष्टि से मैना की ओर देखा और सहम कर उसके और नजदीक हो रहा।

मैना ने हँसकर अपना दाहिना हाथ उसके गले में डाल दिया।

बोली—"नहीं जानते ? यह मनी है, जो चमक रही है..."

"मनी...कहाँ से आई ?...."

"यह इसी साँप के अन्दर रहती है...बापू कहते हैं, यह चीज अनमोल है। ऐसा साँप गाँव में किसी के पास नहीं...."

"अजीब साँप है यह तो मैना..."

"हाँ, मगर मन्तर के बल पर ही यह मनी उगलता है, नहीं तो किसी आदमी के सामने साँप अपनी मनी नहीं निकालते... अब भी अगर कोई इसकी मनी छूने की कोशिश करे तो यह उसे जिन्दा न छोड़े....बैठो परदेसी ! देखा कितनी साफ जगह है। इस चट्टान पर बैठो...."

परदेसी बैठ गया। मैना भी उसके गले में बाँहें डाल बैठ रही।

परदेसी ने हलके उजाले में चारों ओर देखा। कोठरी लम्बी-थी और अधिक कूड़ा-करकट भी वहाँ नहीं था। साफ हवा पता नहीं किधर से आ रही थी।

कोठरी की छत ऊबड़-खाबड़ थी। मालूम होता था कि बड़ा-सा आलीशान मकान पूरी तरह गिर नहीं पाया और यह कोठरी साफ बच गई। कोठरी में कई दरवाजे भी दिखाई पड़ रहे थे। मगर सबके अन्दर धराशायी भवन के कंकड़-पत्थर भरे हुए थे।

"ये दरवाजे कैसे हैं मैना !..."

"महल के गिरने से सभी बन्द हो गये...." मैना बोली—"सिर्फ वह सामने वाला दरवाजा ठीक है। बापू कहते हैं इसमें का रास्ता कहीं दूर जाकर निकल गया है। बापू ने उसमें पैठने से मना कर दिया है...."

"जगह तो बहुत अच्छी, मगर भयानक बहुत है....तुम न होती तो मेरी हिम्मत छूट जाती....तुम यहाँ अक्सर आती हो क्या ?...."

"कभी-कभी जी, बापू के साथ..." मैना बोली—"आज सोचा तुम्हें भी यह जगह दिखा दूँ....बापू से मत बताना परदेसी ! सुनेंगे तो आँखें कपार पर चढ़ा लेंगे।"

"किसका था यह मकान ?..."

"मकान ?....महल कहो जी इसे....महल ही था यह। बापू कहते हैं, कभी यहाँ बड़े अमीर लोग रहा करते थे.. एक बार इधर बहुत बड़ा भूडोल आया और महल की यह गत बन गई। कोई न बचा परदेसी !..."

"भूडोल !...."

"सच जी ! बहुत बड़ा भूडोल !....भला कितना बड़ा रहा होगा वह भूडोल परदेसी !"

"मैं क्या जानूं ?...."

"भूडोल भी नहीं जानते तुम ?....जरा ठीक से बैठो, मैं लेट जाऊँ....दो रात तुम्हारी वजह से सो भी नहीं पाई.. " मैना परदेसी की गोद में सर रख कर लेट गई—"देखो, अब कितना आराम मिला मुझे !....हाँ तो भूडोल जब आता है तो यह जमीन काँपने लगती है, जैसे साँप को देखकर तुम शहरी लोग काँपते हो..."

"मैं जानता हूँ...." परदेसी ने अपना हाथ मैना के सर पर रख दिया और धीरे-धीरे सहलाने लगा।

"तुम जादू जानते हो क्या परदेसी !..." मैना इस तरह से बोली, जैसे धीरे-धीरे बेहोश हो रही हो।

"नहीं तो..."

"तुम मेरा सर सहला रहे हो न ?....लगता है जैसे मेरे दिल में कोई साँप चलने लगा हो....हटाना चाहकर भी तुम्हारा हाथ नहीं हटा पा रही हूँ...जादू ही तो है यह ?..."

परदेसी की हथेली मैना के सर पर दौड़ती रही।

"परदेसी !...."

"बोलो..."

"भूडोल भला क्यों आता है ?...."

"तुम्हीं बता दो..."

"दैया रे ! तुम्हारी उँगलियाँ साँप-सी रेंगने लगी हैं मेरे बालों में....मन्तर जानकर भी बच नहीं पा रही हूँ...यह सब क्या है परदेसी..."

"कुछ नहीं...." परदेसी का क्रम चलता रहा—"तुम कहती चलो भूडोल की बात...क्यों आता है भूडोल !...."

"बापू कहते थे—यह पिरथी नाग भगवान के फन पर टिकी है। सैकड़ों बरस पर नाग भगवान जब साँस लेते हैं तो उनका बदन हिल जाता है और जमीन काँपने लगती है...."

"वही नाग न, जिसे तुम लोग खाती हो और जिसका चमड़ा पहनती हो ?...."

"धत् ! नाग भगवान की तो हम लोग पूजा करते हैं... सभी साँप तो नाग नहीं होते परदेसी ! हम लोग नाग कभी नहीं पकड़ते....उफ् ! अपनी उँगली रोक लो बाबू ! नहीं तो मैं साँप बाँधने का मन्तर पढ़ती हूँ...."

"मैना !...." परदेसी की आवाज अगाध प्रेम से सनकर बड़ी ही लुभावनी बन गई थी। हाथ नहीं रुक सका।

"परदेसी !...." मन्त्र पढ़ने के बदले बेहोश होती-होती बोली मैना। उसके दोनों हाथ परदेसी के गले में जा पड़े।

"मन्तर न पढ़ो मैना !...ऐसे ही चलने दो इन हाथों को .. कई रातों से जग रही हो न ? इस तरह से क्या कुछ आराम नहीं मिलता तुम्हें ?..."

"आराम ?...मिल तो रहा है...मगर अब तुम्हारी आवाज भी साँप बन गई है और मेरे कानों में चल-फिर रही है...मुझे सँभलने दो परदेसी ! बापू कसम ! इतना नशा तो बापू के घड़े भर शराब में भी नहीं होगा...."

"तुम शराब भी पीती हो रानी ! परदेसी का मुख झुकते-झुकते मैना के मस्तक तक आ गया था। उसकी एक-एक साँस मैना के चेहरे पर लोटने लगी थी !

"रानी !...क्या-क्या कह रहे हो परदेसी ! अपनी एक-एक बात से तुम डँसे जा रहे हो ..."

मैना का स्वर अब पूरा मदहोश हो चला था—"शराब की बात पूछते हो ! हम सभी तो शराब पीते हैं, मगर लड़कियाँ इतना कहाँ पी सकती हैं मरदों के मुकाबले ! तुम नहीं पीते क्या परदेसी ?... उफ् !..."

"क्या हुआ मैना !...."

"अपना मुँह ऊपर उठा लो परदेसी ! तुम्हारी साँस बड़ी गरम लग रही है...मैं पागल हो जाऊँगी..."

मगर परदेसी ने अपना मुँह दूर करने के बदले होंठ मैना के मस्तक पर रख दिये।

"यह क्या हुआ बाबू !..."

"क्या ?...."

"यही मेरे माथे पर...क्या चीज रख दी तुमने ?..."

तभी मैना की खुली आँखें बन्द हो गईं, परदेसी के अधरों को अपनी ओर बढ़ता देखकर।

आँखों पर हल्का बोझ-सा पड़ा फिर उठ गया।

मैना ने नेत्र खोल दिए तो वे परदेसी की आँखों से जा टकराये।

"रानी !"

"मेरे बाबू ! तुम तो बापू से भी ज्यादा जानते हो।"

"जानता तो कुछ नहीं था मैना....अब तुम चाहे जो सिखा दो...."

परदेसी ने मैना की ठुड्ढी जरा-सी ऊपर उठाई। मैना की आँखें फिर बन्द हो गईं। होंठ कुछ कहते-कहते बेहोश हो गये। ललाम गालों की एक-एक नस काँप-काँप उठने लगी।

"मैना !...."

"परदेसी !...."

"आँखें खोलो मैना !...मेरी ओर तनिक देखो..."

"नहीं....अब नहीं परदेसी ! देख सकती तो देखती ही मगर पलकें उठ नहीं रही हैं। तुमने क्या कर दिया है मुझ पर बाबू ! अपना कुछ भी तो नहीं रहा मेरे वश में....बापू से भी बढ़कर तुमने जगह पा ली मेरे दिल में परदेसी ! सोचती हूँ, तुम मुझे इतने अच्छे जो लगने लगे, कभी चले गये तो क्या हाल होगा मेरा ?...."

"कभी यहाँ से जाने लायक हुआ तो तुम्हें भी अपनी छाया बनाकर ले चलूँगा मैना !..."

परदेसी के होंठ मैना के बेहोश अधरों पर हल्की-सी दौड़ लगा गये तो मैना का शरीर एकाएक इस तरह से सिहर उठा कि परदेसी ने उसके धड़कते हुए दिल को अपने सीने में छिपा लिया।

"चलो परदेसी ! कितनी देर हो गई। बापू घबराते होंगे...." उठती हुई मैना बोली।

"चलो...."

दोनों दरार से बाहर आये। देखा तो चारों ओर घड़ी भर रात का अन्धकार छा चुका था।

"दैया रे ! देखो, बापू आज कितना बिगड़ते हैं..." मैना ने भयभीत स्वर में कहा।

"तुम्हारा साँप तो भीतर ही रह गया मैना !...."

"नहीं जी, यह पीछे क्या पड़ा हुआ है जमीन पर ?..." कहकर मैना ने पुनः साँप की माला पहन ली।

"और इसकी मणि ?

"इसने अपने पेट में डाल ली..." बोली मैना—"अपनी मनी छोड़कर भला यह हट सकता है कहीं ? अब जरा पैर बढ़ाओ परदेसी ! .. लो, मेरा हाथ पकड़ लो—कहीं ठोकर न लग जाय ..."

दोनों तेजी से गाँव की ओर चले। एक दूसरे का हाथ पकड़े रहने के कारण उन्हें बड़ा सहारा मिल रहा था और हृदय को एक अजीब आनन्द भी।

"परदेसी ! मुझे भी ले चलोगे अपने साथ ?...."

"ले तो चलूँगा ही...." बोला परदेसी—"तुम्हें यहाँ छोड़कर मेरे पैर एक पग भी नही बढ़ सकेंगे आगे...."

"कैसा होता है शहर ?....शहर में क्या-क्या चीजें होती हैं जी ?"

"यह सब तो मुझे याद नहीं रहा मैना ! कभी शहर पहुँचा तो शायद सब कुछ याद पड़ जाय....अरे, वह क्या है ?...."

चलता-चलता परदेसी डरकर रुक गया। दूर अँधेरे में उँगली उठाकर मैना को कोई चीज दिखाई उसने।

"कुछ तो नहीं है जी ! बहुत डर जाते हो तुम...." मैना ने हँसकर कहा।

"बीच पगडण्डी पर कोई छाया खड़ी थी मैना !...अभी अभी मैंने देखा है...दौड़कर वह उस बरगद के पीछे चली गई..."

"धत् !....बढ़ो आगे...."

दोनों फिर तेज चलने लगे।

"शहर में इतनी छोटी पगडण्डियाँ तो होती न होंगी—क्यों परदेसी ?" पूछा मैना ने।

"अब तो तुम्हें ले ही चलूँगा कभी....चलकर खुद देख लेना...."

"हा-हा-हा....चलकर खुद देख लेना...." बरगद के पेड़ के पीछे इतना प्रबल अट्टहास सुनाई पड़ा कि दोनों सहम कर गिरते-गिरते बचे। सुनसान अँधेरी रात में वह हँसी बड़ी भयानक लगी।

"भूत !...." जोरों से चिल्लाई मैना और परदेसी से ला लिपटी—"कोई भूत है परदेसी, बापू कहते थे इस महल के सभी आदमी मरकर भूत बन गये हैं...."

स्वर काँप रहा था मैना का।

"भू !....हा-हा-हा !...." फिर वैसा ही विकट अट्टहास।

और तब बरगद के पीछे से एक धुँधली-सी छाया निकल कर इनकी ओर बढ़ी।

अब तो परदेसी का भी शरीर भय से काँपने लगा था।

"परदेसी !...." बदहवास परदेसी को मैना ने सजग किया।

"क्या यह सचमुच भूत है मैना !...."

"नहीं जी ! कोई आदमी है...." शंकित स्वर में मैना बोली—"देखो अब आ पहुँचा....अरे यह तो .."

"टिकोरा है मैना ! तुम्हारा टिकोरा !" आती हुई अदृश्य छाया कुछ-कुछ स्पष्ट होती बोली।

"तुम ?....टिकोरा तुम इधर ?...." मैना अब और भी डर गई थी। क्योंकि टिकोरा तो भूत से भी ज्यादा खतरनाक था।

"चला आया था मैना !...." अजीब क्रूर स्वर में बोला टिकोरा—"अँधेरी रात में तुम दोनों को गाँव पहुँचने में तकलीफ होती न !"

"हम पहुँच जायेंगे खुद ! तुम्हारी मदद की जरूरत नहीं छोड़ो रास्ता...." मैना बोली।

"भला उस्ताद की बेटी का रास्ता कौन रोक सकेगा....कुछ बात तो सुन लो, फिर चली जाना। इतनी जल्दी भी क्या है ?... दो-चार घड़ी इस परदेसी के साथ गुजरे, अब टिकोरा को दो-चार पल ही दे दो ...किधर गई थी इस छैला के साथ ?...."

"तुमसे मतलब ?...." मैना बिगड़ी।

"इन्सान को जब भूख लगती है मैना, तब वह पेट भरने की जगह खोज ही लेता है....मगर तुमने तो ऐसी जगह खोज निकाली कि वह टिकोरा भी न जान सका....चला तो था तुम दोनों के पीछे ही मगर उस टीले के पास जाकर तुम ऐसी गायब हुई कि खोजते-खोजते आँखों की पुतलियों में दर्द हो चला, फिर भी तुम नहीं मिली....लाचार यही बैठा रहा कि कभी तो तुम लौटोगी ही इस रास्ते।"

"बापू की मार को तुम इतनी जल्दी भूल गये..."

"नहीं मैना ! भूल सकता तो तुम्हारे पीछे क्यों लगता ?.... इन्सान जब ताकत से नहीं जीत सकता किसी को, तो पीछे से वार करता है, धोखा देता है, दगाबाजी पर चलता है....तुम, या यह परदेसी कोई भी टिकोरा का वार नहीं बचा सकता।"

टिकोरा दो पग आगे बढ़ आया। मैना और परदेसी सहमकर पीछे हट गये।

"मैना रानी ! तुम्हारे गले में तो वही साँप है न ?....वही मनी वाला, जो उड़ सकता है...वही तो है...जानती हो न ? किसी को काट ले यह तो उस्ताद के भी सब मन्तर छूमन्तर हो जायें...."

"एक दिन तुम्हीं को काटेगा यह कि साँस भी न ले पाओगे तुम ?...."

"काटेगा कभी, आज तो नहीं न !....सन्नाटा तो है, तुम्हारा चीख भी शायद उस्ताद के कानों तक नहीं पहुँच पायेगी..."

"हे भगवान ! क्या करना चाहते हो तुम टिकोरा ?...." मैना बहुत भयभीत हो उठी थी।

"मैं ? .. मैं इस साँप पर मन्तर डालना चाहता हूँ ..." तेज आवाज में बोला टिकोरा—"अब कोई भी इस साँप से परदेसी को नहीं बचा सकता... मन्तर को एक चुटकी धूल पड़ते ही यह तुम्हारे परदेसी के बदन में अपना जहर उगल देगा.. हा-हा-हा !..."

"टिकोरा ! दगाबाजी ठीक नहीं...वार करना हो तो बराबरी का वार करो....इस भोले-भाले परदेसी की जान तुम क्यों लेना चाहते हो ?...."

"इसलिए कि यह मेरी राह का काँटा है...इसे छोड़कर तू मेरी न बनेगी ? नहीं न !....तभी तो मैं इसे हटाना चाहता हूँ। अब भी तू आकर मेरे गले में हाथ डाल दे तो देख यह परदेसी जीता रहता है या नहीं ?....मंजूर है ?...."

"नहीं... नहीं....नहीं...."

"ठीक है..."

टिकोरा दो पग पीछे हटा। झुककर जमीन से एक चुटकी धूल उठाई उसने।

"मैना चिल्ला उठी—"टिकोरा, इस बेगुनाह की जान न ले...पैरों पड़ती हूँ तेरे..."

"मैना.. ओ मैना !...."

तभी दूर से बूढ़े उस्ताद की पुकारती हुई आवाज आई।

मैना हर्ष से उछल पड़ी—"बापू आ पहुँचे...खड़ा रह शैतान ! अब भागा तो मरद का बच्चा नहीं....देख तेरी क्या दुर्गत बनती है अभी...."

मगर उस्ताद की आवाज सुनते ही टिकोरा को तो जैसे पर लग गये।

"मैना !...."

"यहाँ हूँ बापू ! चले आओ इधर...."

"यहाँ क्या कर रही है रे कमीनी अँधेरे में खड़ी होकर ? परदेसी बाबू कहाँ गये ?..."

"यह तो हैं...."

"या भगवान ! यह लड़की भूतों की तरह अँधेरे में घूमा करती है...इधर कहाँ आई थी ?...."

"उस टीले पर तो बैठी थी....नीचे नहीं उतरी थी बापू ! परदेसी से पूछ लो—हम दोनों को थोड़ी-सी नींद आ गई थी !..."

"कितनी दफे कह चुका कि इधर न आया कर....हाँ टिकोरा दीख पड़ा था इधर ?"

"क्यों बापू !"

"चमकू कह रहा था कि वह गाँव भर में पागलों की तरह घूमकर लोगों को धमका रहा है ...बदला लेगा कमीना ! बचकर रहना उससे बेटी। पूरा करैत है लुच्चा !..."

"इधर तो नहीं आया बापू...." मैना झूठ बोल गई, नहीं तो शायद व्यर्थ का झगड़ा उठ खड़ा होता।

"अच्छा चलो तुम लोग..."

आगे-आगे उस्ताद फेरई और उनके पीछे मैना तथा परदेसी चल पड़े।

× × ×

"परदेसी !....ओ परदेसी बाबू !...."

परदेसी ने घूमकर देखा तो एक युवती थी, अपरिचित, अनजान।

वह रुक गया। गौर से उसकी ओर देखने लगा।

उसे रुका देखकर युवती अपनी नाजुक कमर पर लाख-लाख बल देती और अपनी आँखों के कमान से हजार-हजार तीर चलाती आ खड़ी हुई उसके सामने।

परदेसी के नेत्र उस युवती के मुख से उतरते-उतरते, उसके सारे सौन्दर्य का निरीक्षण करते, पैरों तक आ रहे।

सुन्दरता तो है, मगर मैना जैसी नहीं। कुछ अदाओं में तो मैना से भी बढ़-चढ़ कर है यह !'

"क्या है ..." परदेसी ने पूछा।

"आज अकेले ही हो क्या ?"

"हाँ, बैठे-बैठे घूमने का जी चाहा तो इधर निकल आया...."

"और मैना ?..." युवती ने पूछा।

"उस्ताद और मैना कहीं गये हैं...क्या चाहती हो तुम मुझसे ?...."

"गाँव की लड़की परदेसी से जो कुछ चाह सकती है, वह तो तुम मैना को दे चुके हो पहले ही....अब मेरे लिए बचा ही क्या रह गया है तुम्हारे पास ? तुम्हारा दिमाग भी तो सही नहीं कि तुम मुझमें और मैना में फरक देख सको... मैना के भाग बड़े अच्छे हैं बाबू ! तुम्हें पाकर कौन निहाल नहीं होगी ?..."

"मैं चलता हूँ अब...."

"बैठो न थोड़ी देर और परदेसी !" युवती ने परदेसी का

हाथ पकड़ लिया—"इस पत्थर पर बैठ जाओ,...सन्नाटा तो है ... कोई देखेगा भी नहीं। कुछ बातें ही कर लो मुझसे। कोई देखेगा तो कुछ नहीं बोलेगा,...इस गाँव में सब कुछ चलता है। जिससे जिसका दिल लगे, उसे ले बैठे...."

परदेसी को बैठना पड़ा। युवती भी परदेसी से इतनी सटकर बैठी कि बीच से हवा का गुजरना मुश्किल।

परदेसी को कुछ घबराहट हुई तो युवती ने अपने नाजुक हाथ उसके कन्धे पर रख दिए।

"घबरा क्यों रहे हो परदेसी ?..."

"नहीं तो .. मगर मुझे गाँव घूमकर जल्द ही लौटना है..."

"लौट जाना, इतनी जल्दी क्या है ? .. तुमने अभी मैना को ही देखा है बाबू ! मगर गाँव में एक मैना ही तो नहीं है ? कितनी ही तो और हैं, जो तुम्हारे एक इशारे पर लुट सकती हैं....मुझे ही देखो, टिकोरा कहता है मुझसी इस गाँव में कोई नहीं। उस्ताद की बेटी होकर मैना चाहे जितने ऊँचे उठ जाय, मगर खुद अपनी हस्ती के बल पर वह लजारो को जीत नहीं सकती...."

"लजारो कौन है ?...."

"मैं और कौन ?....मुझे नहीं जानते ? यहाँ के नौजवानों की आँखों से पूछो, जिनमें मैं घर किए बैठी हूँ। सँपेरों की आहों से पूछो, जो मेरी जवानी देखकर निकला करती हैं। गाँव के बेजान पत्थरों से पूछो, जिन पर मेरे पैरों के निशान हैं। यहाँ की मस्तानी हवा से पूछो जिसके एक-एक झोंके पर नाच की गत लहरा रही है। इन पेड़-पत्तों से ही पूछ देखो, जो मुझे आते देख खुशी से पागल हो झूम-झूम उठते हैं....सभी तो मुझे जानते हैं

परदेसी ! एक तुम्हीं नहीं जान पाये अब तक और मैना के आगे लुट बैठे...."

लजारो परदेसी के और पास खिसक आई। परदेसी और दूर सरकने लगा तो लजारो ने उसे अपनी बाहों में जकड़ लिया।

"मुझे जाने दो लजारो !...."

"भाग नहीं सकोगे परदेसी !....जब से आए हो, मेरा दिल छीन बैठे हो....लजारो तुम पर कुर्बान हो गई बाबू....मुझसे दूर न भागो...."

"मैं भागूंगा नहीं....छोड़ दो मुझे...."

"ताकत हो तो छुड़ा लो अपने आप...." लजारो ने परदेसी को और कसते हुए कहा—"परदेसी ! मेरे दिल की आग देखकर घबड़ाओ मत....जल नहीं जाओगे तुम ! मेरी प्यास बुझा दो। मेरे रसिया, सिर्फ एक चिल्लू मीठे पानी से....लजारो ज्यादा नहीं चाहती, सिर्फ एक चिल्लू....देख रहे हो न, यह सुनसान जगह, यह मस्त हवा के धीमे झकोरे, चुपचाप खड़े हुए ये बेजान पेड़, तुम्हारे गले में माला बनी हुई मेरी नाजुक बाहें....और तुम्हें चाहिए ही क्या मेरे राजा ?...."

"मुझे कुछ नहीं चाहिए लजारो....मुझे छोड़ दो... मुझ आफत के मारे पर रहम करो...."

मगर लजारो की आँखों में तो साँप खेल रहा था। उसने आवेश में आकर परदेसी का मुंह चूम लिया।

और परदेसी ने उसे इतनी जोर से ढकेला कि लजारो का सारा बदन धूल से नहा उठा और सूरत बड़ी ही भयावनी बन गई।

वह फुफकारती हुई उठी तो उसने परदेसी को भागकर दूर जाते हुए देखा।

"कमीना कहीं का !....सामने खाना देखकर भी भूख नहीं लगती हरामी को...."

"चोट ज्यादा तो नहीं आई ?....हा-हा-हा !"

लजारो ने चौंककर दृष्टि घुमाई।

"मैं ही तो हूं लजारो ! अरे, मुंह पर इतनी धूल लग गई है तेरे ? उस्ताद कसम यह परदेसी पूरा बैल है....कितनी जोर से धक्का दिया था तुझे...."

"टिकोरा....मेरे छैला !...."

टिकोरा ही था—आंखों में भयानक मुस्कराहट खेल रही थी। तनकर खड़ा था जैसे ताड़।

"छैला कहती है मुझे !..." विचित्र तरह से हंसकर बोला टिकोरा—"छैला तो तेरे सभी हैं ! पूजा के वक्त जो पत्थर सामने पड़ जाय, वही भगवान !...हा-हा-हा ! तेरी भूख भी अजीब है लजारो ! रोज नया-नया खाना मांगती है तेरी जीभ !...."

"मुझे जलाओ मत रसिया !...."

"तू तो खुद जलते-जलते काजल की डली बन गई है अलबेली कि हर किसी की आंख में जा गड़ती है....दिल तो तेरा एक चीज पर टिक भी नहीं पाता कभी...सीना इतना चौड़ा हो गया है तेरा कि हर किसी का दिल समा जाय...पहले चमकू था, फिर टिकोरा...और अब तो परदेसी की बारी है !"

"मैं तो यों ही उससे कुछ बातें कर रही थी मेरे राजा !"

"बातों-बातों से ही तो बात बढ़ती है रे !...अच्छा है, यह परदेसी कोई बुरा तो नहीं....इसे फाँस ले तो मेरा भी रास्ता साफ हो जाय..."

"मेरा दिल तो सिर्फ तुम्हें चाहता है छबीले !..."

"तभी तो !...बैठेगी नहीं थोड़ी देर !...."

"बैठूँगी नहीं...भला तुम्हारे साथ ?...."

दोनों पत्थर पर आ बैठे।

"मुझे माफ कर दो मेरे रसिया ! सच जानो, अपना दिल बहला रही थी मैं..." टिकोरा का हाथ पकड़कर बोली लजारो।

"मैं जानता हूँ....एक काम करेगी तू लजारो ?"

"करूँगी मेरे राजा !...कहो तो तुम्हारी आँखों में डूबकर दिल में तैरने लगूँ...."

"काम बड़ा मुश्किल है... उस्ताद का डर भी..."

"उस्ताद से मैं नहीं डरती... बोलो क्या करना है ?...."

"परदेसी को इस गाँव से हटा दे, या उसे अपना बनाकर मैना की तरफ से उसका दिल मोड़ दे...."

"मैं सब समझती हूँ टिकोरा तुम्हारी चाल !" लजारो जरा तेज होकर होकर बोली—"परदेसी चला जाय या मेरे फन्दे में आ जाय तो तुम मैना को ले उड़ो..."

"नहीं रे...." कहकर टिकोरा ने लजारो का शरीर अपनी बलिष्ठ बाहों में कस लिया—"मैं तो सिर्फ उस्ताद और मैना से बदला लेना चाहता हूँ—उस्ताद ने उस दिन मेरी जान मारते-मारते छोड़ दी, सो भी इस परदेसी की वजह से....मैं अपनी बेइज्जती भूल नहीं सकता। टिकोरा के दिल का घाव इतनी जल्दी अच्छा नहीं होता अलबेली ! उस्ताद की जान लेकर ही मुझे

सच्चा सुख मिलेगा।....तुझे अपनी समझ कर बता रहा हूँ... मेरी मदद करती चल तू, फिर दस-पाँच दिनों में मुझे उस्ताद बना देखेगी...."

"और मैं ?...." टिकोरा के प्रगाढ़ आलिंगन से बेहोश होती लजारो बोली।

"तू तो मेरी रानी है ही...." कहकर टिकोरा ने उसका मुँह चूमा।

"मेरे रसिया !...." आसमान पर बेसहारे उड़ती हुई लजारो ने कहा—"तुम सचमुच मेरे हो, कभी दगा तो न करोगे मेरे साथ ? कभी मैना को पाने का सपना तो नहीं देखोगे अब ?"

"नहीं रे नहीं !....तुझे विश्वास नहीं होता क्या ?..."

"होता है मेरे राजा ! तुम्हारी आवाज कह रही है कि तुम्हारे दिल में मेरी मुहब्बत है मैं हर तरह से तैयार हूँ। मेरी जान लेकर भी तुम खुश हो सको तो लजारो का मुँह 'सी' नहीं करेगा...."

"मेरी लजारो !...." टिकोरा ने उसे अपनी गोद में बिठाते हुए कहा—"तू परदेसी को मैना से दूर कर, मैं उस्ताद की खबर ले लूँगा...."

"कैसे होगा यह सब !...."

"सुन, कान में कहूँगा, नहीं तो हवा पर तैर कर आवाज भी आजकल दूर-दूर पहुँचने लगी है...."

टिकोरा कुछ कहने लगा। उसके मुँह के पास कान लगाये लजारो सुनती रही।

एकाएक लजारो चिल्ला उठी—

"नहीं-नहीं, परदेसी की जान नहीं...."

"सुन लजारो !...." टिकोरा ने उसे मजबूती के साथ पकड़ लिया और अपनी प्रज्ज्वलित आँखें उसके हताश नेत्रों में डाल दी—"अपने फायदे की बात सोच....अपने सुख के लिए दूसरों का सुख छीनना पड़ता है... वक्त कम है छबीली ! जल्दी जवाब दे ..."

लजारो धीरे से उठ खड़ी हुई। चेहरा उतर गया था, जैसे उसके हृदय में उथल-पुथल मच रही हो।

"क्या कहती है...."

"मैं तैयार हूँ...." लजारो के मुख से निस्तेज स्वर निकला।

× × ×

परदेसी ने झोपड़े में पैर रखा, तो मैना का कहीं पता नहीं था, उसे बड़ा आश्चर्य हुआ।

"मैना..."

"........" कोई जवाब नहीं।

तभी झोपड़ी के कोने से किसी के सिसकने की आवाज आई।

परदेसी वहाँ जा पहुँचा।

देखा—जमीन पर पड़ी हुई मैना सिसक रही है। आँखों से इतना पानी गिर रहा है कि सावन-भादों भी हाय-हाय कर उठे।

"मैना !...." परदेसी ने उसे उठाया—"क्या हुआ मैना रानी ? "

"मुझे छोड़ दो परदेसी !....क्या करोगे मेरे आँसू पोंछ कर ?...."

"मेरी मैना !...." परदेसी ने मैना को उठाकर अपनी गोद में बिठा लिया—"क्यों रो रही हो तुम ? क्या हुआ है तुम्हें ?... मुझे नहीं बताओगी ?...."

"नहीं ..." सिसकी भरते हुए मैना ने कहा।

"क्यों ?"

"दिल कहता है कि तुम मुझे छोड़ दोगे, तुम मेरे साथ दगा करोगे..."

"नहीं मैना ! मैं दगाबाज नहीं....मुझ पर विश्वास करो...."

"कैसे विश्वास करूँ ?...अपनी आँखों से तो सब देख आई...."

"क्या देखा ?" परदेसी ने पूछा।

"तुम लजारो के पास बैठे थे, बातें हो रही थीं, और...."

"और तुम नाराज हो गई ?...."

"पता नहीं मैं क्यों नाराज हो गई परदेसी !...पहले तो किसी मरद के पास बैठे देखकर मुझे बुरा नहीं लगता था, मगर जाने क्यों मैं तुम्हें किसी लड़की के पास देखना नहीं चाहती.... तुमने कैसा जादू कर दिया है मुझ पर बाबू ! मेरा दिल मेरे बस में नहीं रहा....क्या कह रही थी लजारो !...."

"बहुत-कुछ कह रही थी...." परदेसी ने उसे अपनी भुजाओं में लपेटते हुए कहा—"मगर तुमने नाराज होकर अच्छा नहीं किया। मैं तुम्हारा हूँ रानी ! और तुम्हारा ही रहूँगा...."

परदेसी ने मैना के अधरों पर एक दीर्घ चुम्बन अङ्कित कर दिया।

"ऐसा न किया करो बाबू !...." मैना सब कुछ भूलकर बोली।

"कैसा ?"

"ऐसा !...." मैना ने 'वैसा' करके दिखाते हुए कहा—"मुझे पागल कर देता है यह। तुम्हारे मुँह मिलाते ही जाने कैसा नशा छा जाता है मुझ पर...."

"नशे से परहेज तो तुम्हें नहीं मैना ?...."

"मगर यह नशा बड़ा तेज होता है बाबू ?....दो-एक कुल्हड़ दो तो पी लूँ, मगर यह शराब मुझे न पिलाया करो। होश में रहूँगी तो तुम्हें कुछ सहारा ही दूँगी, बेहोश हो गई तो बोझ बन जाऊँगी तुम्हारे सर...."

"अब भी तो बोझ ही बनी हो, सर पर न सही, गोद में ही....मगर तुम्हारा बोझ भी तो कितना प्यारा है मैना ! जी चाहता है इसी तरह तुम्हें गोद में लिए बैठा रहूँ...."

"कब तक भला ?...." मैना की आँखों में ऐसा सरल भाव था कि देखकर परदेसी दङ्ग रह गया।

"जब तक तुम चाहो....या जब तक मुझमें शक्ति रहे...."

"बिटिया !...." उस्ताद की आवाज आई।

मैना चौंककर बोली—"छोड़ो मुझे....बापू आ गये...."

"बैठी रहो ऐसे ही...."

"हट...." कहकर मैना उठ खड़ी हुई।

लाठी टेकता हुआ उस्ताद अन्दर आया। उसके हाथ में लंबा-सा एक काला साँप था, जो इस तरह फुफकार रहा था कि परदेसी का कलेजा तक दहल गया।

"आ गये बापू ?...."

"हाँ .. बड़ी मुश्किल से यह गेहुँवन मिला..." बोला उस्ताद—"देख न, कैसा तेज है ! तू इसे पकड़ कर पिटारी में बन्द कर, और मैं जरा साँस तो ले लूँ....इस शैतान ने बूढ़े तन को बड़ा थकाया आज..."

उस्ताद ने लाठी दीवार के सहारे रख दी और हाँफता हुआ चारपाई पर जा बैठा।

मैना उस्ताद के समीप आई। मन ही मन कुछ पढ़कर उसने वह भयानक साँप हाथों में पकड़ लिया और ले जाकर पिटारी में बन्द कर आई !

"परदेसी बाबू नहीं दीखते ?...." उस्ताद ने पूछा।

"यहीं तो हैं बापू ! घाम लग गया है तुम्हारी आँखों को, सो देख नहीं पा रहे हो...."

"क्या है बाबा !" परदेसी सामने आकर बोला—"कुछ कहना है क्या ?"

"नहीं बेटा !..." उस्ताद थके स्वर में बोला—"कैसे हो तुम !....यहाँ तबीयत तो लग रही है न ?"

"हाँ...."

"मैना तो कोई शैतानी नहीं करती ?"

"नहीं बाबा ! यह तो इतनी सीधी है कि जहाँ बैठा दो वहीं बैठी रहती है बिना हिले-डुले...." मुस्कुरा कर बोला परदेसी।

मैना ने तिरछे-तिरछे देखा परदेसी की ओर।

बूढ़ा उस्ताद बेटी की प्रशंसा सुन फूल गया। बोला—"मेरी बिटिया किसी को दुख नहीं पहुँचाती बाबू !... और तुम्हें तो यह खूब रिझायेगी। किसी बड़े घर में होती तो उजाला करती रहती अपने करतब से। यहाँ गाँव में इसकी कदर कौन करे ?..."

एकाएक उस्ताद को कुछ याद आया।

"वह जड़ी लाई बेटी ?..." उसने पूछा।

"ओह बापू ! मैं तो भूल ही गई..."

"क्या कर रही थी अब तक रे ?...." उस्ताद जरा बिगड़ कर बोला—"कभी कोई काम बताओ तो इसे साँप सूंघ जाता है।...."

"मैं अभी लिए आती हूँ बापू ! खफा न होवो—तुम्हारी तरह बड़ी हो जाऊँगी तब देखना कि कितना याद रखती हूँ...."

"अच्छा जा...दौड़ जा...."

मैना जाने लगी, मगर दरवाजे से पुनः लौट आई।

"क्या है ?...." उस्ताद ने पूछा।

"बापू !"

"बोल न, है क्या ?....तनिक जल्दी जबान खोल नहीं तो शाम हो जायगी..."

"इस परदेसी को भी साथ ले जाऊँ बापू ?...." मैना ने हिचकते हुए पूछा।

"परदेसी के बिना अब एक पग भी तुझसे चला नहीं जाता... क्यों रे ?...."

"मुझे डर लगेगा...."

"पहले तो नहीं लगता था...."

"मैं क्या जानूँ पहले-पीछे की बात ? साफ कहे देती हूँ, परदेसी नहीं जायगा तो मैं भी नहीं जाऊँगी...."

बूढ़ा गम्भीर हो चला। उसकी नादान बेटी को क्या हो गया है, शायद यही सोच रहा था वह।

"अच्छा ले जा इसे भी...." बोला वह—"मगर तेज जाना और जल्द लौटना....उस दिन की तरह देर की तो पूछूँगा तुमसे...."

"जल्दी ही आऊँगी बापू !..." मैना उठ खड़ी हुई—"चलो परदेसी !..."

परदेसी का हाथ पकड़कर वह अल्हड़ छोकरी खींच ले चली।

उस्ताद चारपाई पर लेट गया और सोचने लगा परदेसी और मैना की बात।

दोनों में कितना साथ हो गया है। इन दो-चार दिनों में ही परदेसी अपना सब-कुछ भूल गया है। मैना ही उसकी जान है अब। मगर जब उसकी याद लौटेगी और वह अपने घर चला जायगा, तब मैना का क्या हाल होगा? वह जो इतने सपने आजकल देख रही है, क्या भूल पायेगी इन्हें कभी?

"उस्ताद !...."

"कौन है ?...." उस्ताद की विचारधारा भंग हो गई।

"मैं हूँ—टिकोरा !...." आवाज आई और टिकोरा अन्दर आ रहा, चौकन्नी दृष्टि से देखता हुआ।

उस्ताद के माथे पर चिन्ता की रेखाएं उभरीं फिर विलीन हो गईं, लेटे ही लेटे बोला वह—"क्या है टिकोरा ?..."

टिकोरा चारपाई के पास आकर उस्ताद के पैरों के पास बैठ गया।

उस्ताद चौकन्ना हो गया। पता नहीं यह जहरीला नाग ऐसे समय चुपचाप क्यों आया है?

"उस्ताद !...." कहकर टिकोरा धीरे-धीरे उस्ताद का पैर दबाने लगा।

उस्ताद हिला-डुला नहीं। लेटे-लेटे ही उसने अपनी आँखें बन्द कर ली और कुछ सोचने लगा।

"मुझे माफ कर दो उस्ताद !...."

"टिकोरा !..."

"माँफी माँगने आया हूँ...बड़ी गलती की थी उस दिन...होश आया मगर देर से...." टिकोरा बराबर पैर दबाता जा रहा था।

"माँफी क्यों माँगता है तू !...अपने को सुधार, बस इसी से मुझे खुशी होगी...."

"मैं सुधर गया हूँ उस्ताद ! जी चाहे आजमा लो..."

"आजमाने की जरूरत नहीं बेटे ! वक्त सब कुछ जाहिर कर देगा...."

कुछ देर तक सन्नाटा रहा। टिकोरा पैर दबाता रहा। उस्ताद आँखें बन्द किये लेटा रहा।

"एक बात " टिकोरा रुक गया।

"कुछ कहना है ?..."

"हाँ उस्ताद, मगर डर लग रहा है..."

"सुना...."

"अब तो मैं काफी बड़ा हो गया हूँ उस्ताद !...है न ?...."

"पूरा जवान समझ अपने को अब तो..."

"समझ भी आ गई है मुझमें, सुधर भी गया हूँ....अब और क्या चाहते हो उस्ताद ?"

"कुछ नहीं !...." उस्ताद बोला—"इतना ही बहुत है। भगवान करे तू खुश रहे।"

फिर थोड़ी देर तक बातचीत बन्द हो गई।

"मैना घर में नहीं है उस्ताद ?"

"नहीं, मैं अकेला ही हूँ....बड़ा उलझ गया है आज तू ! साफ़-साफ कह...."

"मैना भी तो बड़ी हो गई है।"

"अभी उतनी बड़ी तो नहीं....हो ही जायगी....वही तो इस बुढ़ापे का सहारा है बेटे !"

"मुझे भी अपना बना लो उस्ताद ! मेरा सहारा कुछ कम नहीं रहेगा...मैं और मैना मिलकर तुम्हारी खूब सेवा करेंगे..."

"तेरा मतलब ?...." एकाएक उस्ताद को होश आया।

"मैना की सगाई मेरे साथ कर दो उस्ताद !...." कहते-कहते टिकोरा ने पैर दबाना बन्द कर दिया !

उस्ताद उठकर बैठ गया। कुछ तेज स्वर में बोला—"टिकोरा ! जो कुछ तू है इस वक्त, उसको देखते हुए मैना को पाने का ख्याल छोड़... मैना तेरे पास रहकर सुख नहीं पायेगी...."

"बचपन में उसने वादा किया था उस्ताद !...."

"बचपन अब बीत गया, उसके साथ वह वादा भी....तू बराबर ब्याह के लिए मैना को तङ्ग करता आ रहा है। मैना मुझसे सब कह देती थी। उससे निराश होकर तू मुझे रङ्ग चढ़ाना चाहता है ?...."

"मगर मैना को मुझसे ब्याह करना ही होगा उस्ताद !...." टिकोरा उठकर खड़ा हो गया और लाल-लाल आँखों से घूरने लगा उस्ताद को। गिरगिट ने एक ही चरण में रङ्ग बदल दिया।

"टिकोरा !" उस्ताद भी क्रोध में आ गया था—"उतर

आया न अपने असली रूप पर ?"

"चाहे जो कहो उस्ताद ! मगर मैना को मैं लेकर ही रहूँगा।....नहीं तो...."

"नहीं तो ?...."

"टिकोरा सांप नहीं है उस्ताद कि उस पर तुम्हारा मन्तर चल जायगा....तुम्हें शायद मालूम नहीं कि तुम्हारी मासूम बेटी उस परदेसी के साथ आजकल क्या खेल खेल रही है ?"

"मालूम है मुझे...." उस्ताद बोला—"तुझे इससे घबड़ाने की कोई जरूरत नहीं...."

"तो मैना तुम्हारा ही सहारा पाकर परदेसी पर डोरे डाल रही है ?"

"बन्द कर अपनी जबान टिकोरा !...."

"मुझ जैसे बिरादरी के जवान को छोड़ तुमने एक अजनबी को मैना के लिए चुना, ऐसा इस गाँव में कभी नहीं हुआ...."

"मगर अब होगा...." उस्ताद उठ खड़ा हुआ—"मैं इस गाँव का उस्ताद हूँ। कानून बनाना मेरे हाथों में है..."

"उस्ताद ! अब गाँव वाले इतने अन्धे नहीं कि तुम जिधर चाहो उनकी नकेल पकड़ कर घुमा दो....तुम्हें पंचों के सामने जवाब देना होगा..."

"मैं दे लूंगा...."

"टिकोरा को भूल मत जाना उस्ताद ! बदले की आग मेरे दिल में धधक रही है, जो तुम्हें, मैना को और जो मेरे रास्ते में पड़ेगा, सबको राख कर देगी...."

"नमकहराम !...."

"मेरी कमर का छूरा देख रहे हो न ? अगर चाहूँ तो मन्तर

पढ़ने के पहले ही तुम्हारी जबान को खामोश कर दूँ, तुम्हारी जान ले लूँ....टिकोरा से उलझना साँपों का खेल नहीं उस्ताद ! अपनी बूढ़ी हड्डियों को मुकाबले के लिए तैयार रखना..."

पैर पटकता हुआ टिकोरा चला गया !

"उस्ताद का कांपता शरीर धम्म से चारपाई पर गिर पड़ा। मुँह से निकला—"बदजात ! कमीना ! लुच्चा !...."

"बापू !....क्या है बापू !...."

परदेसी के साथ मैना भी आ पहुँची थी !

"वही हरामजादा टिकोरा था...." हाँफते हुए बोला उस्ताद।

"क्या कह रहा था बापू...."

"कहेगा क्या कमीना ? ऊल-जलूल बक रहा था....शाम को पंचायत जुटायेगा...."

"कैसी पंचायत ?"

"तू चुप रह मैना ! सवाल पर सवाल कर मेरा दिमाग खराब न कर..." कहकर उस्ताद लेट गया।

शाम को—

गाँव के सभी सँपेरे जमा थे, बड़े से इमली के पेड़ के नीचे।

पाँच बूढ़े जो उस्ताद के नीचे पंच कहलाते थे, ऊँचे चबूतरे पर बैठे थे। कई मशालें जल रही थीं। कई सौ की भीड़ थी। शोर-गुल भी काफी हो रहा था।

पंचों के पास खड़ा होकर टिकोरा तेज आवाज में बोल रहा था—

"तुम बताओ, कभी हुआ था ऐसा हमारी जमात में ?.... उन्हें उस्ताद हमने माना है इसलिए नहीं कि खुद ही कानून बनायें और अपनी मर्जी से तोड़ा करें....आखिर हम लोगों का भी कुछ दावा है....है कि नहीं ? उस्ताद परदेसी को अपनी बेटी

ब्याहना चाहते हैं जिसके न घर का पता न नाम का, न विरादरी का। क्या यह जुल्म नहीं ? . तुम लोग आँखें बन्द कर उस्ताद के पीछे चलो और उस्ताद तुम्हारी किसी बात की कदर न करें, यह कहाँ का इन्साफ है....मैंने मैना को ब्याहना चाहा तो मेरी जान जाते-जाते बची . तुम लोग बताओ कि मैं उस परदेसी से किस बात में कम हूँ ?"

"उस्ताद आये...." किसी ने चिल्लाकर कहा।

तो सारा शोर-गुल शान्त हो गया। टिकोरा की जबान भी बन्द हो गई हड़बड़ा कर...लोग उठ खड़े हुए और चबूतरे तक उस्ताद के पहुँचने के लिए जगह बना दी।

उस्ताद की कमर चिन्ता से आज और झुकी दिखाई दी !

बड़ी मुश्किल से लाठी के सहारे वह चबूतरे पर जा खड़ा हुआ।

"बैठो तुम लोग !" स्वयं न बैठकर सबको बैठने की आज्ञा दी उस्ताद ने।

सभी बैठ गये, मगर टिकोरा तनकर खड़ा ही रह गया।

"तू भी बैठ टिकोरा !..." उस्ताद गरज कर बोला।

उसके स्वर में इतना तेज था कि टिकोरा की सारी शेखी हवा हो गई और वह चुपचाप बैठ गया।

"क्या बात है ?..." उस्ताद बोला—"यहाँ इतनी भीड़ क्यों है...."

"टिकोरा ने हमें यहाँ बुलाया है...." पंचों में से एक वृद्ध ने कहा।

"टिकोरा ने बुलाया है....टिकोरा कौन है तुम्हें बुलाने वाला ?...मैं अभी तक जिन्दा हूँ, मेरा हुक्म क्यों नहीं लिया गया...."

"हम लोग अभी आपको बुलाने ही वाले थे उस्ताद।...." दूसरे पंच ने कहा।

"उस्ताद तुम्हारा बेटा नहीं, जिसे जब चाहा बुला लिया...." उस्ताद तड़प-तड़प कर बोल रहा था। सारी जमात चुपचाप बैठी थी—"मैं तुम्हारा बाप हूँ। कोई भी काम करने के पहले मेरा हुक्म ले लेना जरूरी है इस टिकोरा में अभी इतनी ताकत नहीं कि मेरा सामना कर सके, इसके बहकावे में आकर तुम लोग मेरी हस्ती भूल बैठे ?...."

एक शब्द भी किसी के मुख से नहीं निकला।

"मैं तुम लोगों की हमदर्दी और मेहरबानी से उस्ताद नहीं बना हूँ. बना हूँ तो अपनी ताकत से, करतब से....बूढ़ा शरीर देखकर मत भूलो। चाहूँ तो कल सबेरे सारा गाँव मुर्दा बनकर जगे। गाँव मे इस समय हजारों जहरीले साँप बन्द होंगे। मन्तर से बाँध दूँ उन्हें तो पिटारियाँ तोड़ बाहर निकल आवें और एक-एक को ऐसा काटें कि साँस लेने से पहले ही जान निकल जाय... तुम लोगों ने मुझे समझ क्या रखा है...."

"हमें माफ कर दो उस्ताद !" तीसरा पंच बोला—"हमसे बड़ी गलती हुई कि यहाँ आने के पहले तुम्हारा हुक्म नहीं लिया....मगर टिकोरा ने हमें जो कुछ सुनाया, उससे हम बड़े अचरज में पड़ गये हैं...."

"क्या कहा है टिकोरा ने ?...." उस्ताद का स्वर अब कुछ शान्त हो चला था।

"यह कहता है कि उस्ताद मैना का ब्याह परदेसी से करेंगे। क्या यह सच है ?"

"सच है...."

"मगर उस्ताद ? ऐसा तो कभी नहीं हुआ...."

"अब होगा—समझे !... " उस्ताद फिर गरज पड़ा—"मेरे हुक्म से होगा यह...जिसमें हिम्मत हो, मुझे रोके...."

"हम रोकते नहीं उस्ताद ! अब भी तुम्हारा हुक्म मानने को तैयार है. मगर तुम्हारे अधीन रहकर क्या हमें इतना भी अधिकार नहीं कि हम तुमसे कोई वजह पूछ सकें...."

"मैं बताता हूँ वजह...." उस्ताद कहने लगा, कुछ शान्त स्वर में—"वह परदेसी जिस मुसीबत में हमारे पास आया, इसे सारा गाँव जानता है। वह अपनी जिन्दगी की सारी बातें भूल गया है। अगर मैं उसे निकाल दूँ तो वह जायगा कहाँ ?...उसका इस दुनिया में कौन है, इसे वह जानता भी नहीं...क्या उसे अपने घर से निकाल देना ठीक होगा ?...."

"कभी नहीं !...." इस बार बहुत से लोग चिल्लाये।

"वह परदेसी है जरूर, मगर दिमाग खराब हो जाने की वजह से अब तो वह हमारी ही जमात का बन गया है। मेरा इरादा है कि उसे मन्तर-जन्तर सिखाकर पूरा सँपेरा बना दूँ... सँपेरा बन जाने पर क्या तब भी उसका ब्याह नहीं हो सकता।"

"हो सकता है ?...." पंचों ने कहा।

"ठीक है, अब तुम लोग पंचायत खतम करो...और इस टिकोरा की बातों में कभी मत आना..." उस्ताद बोला।

पंचायत खत्म हो गई।

● ●

"मैना !....बिटिया !" उस्ताद ने पुकारा।

"........" मैना ने कुछ उत्तर न दिया। शायद उसकी बोझिल पलकें नींद का शिकार हो गई थीं।

रात काफी बीत चुकी थी, फिर भी उस्ताद जाग रहा था। आज उसे नींद नहीं आ रही थी। टिकोरा की शरारत बराबर बढ़ती जा रही थी। जो कुछ हो रहा है, सब मैना और परदेसी के कारण। यों तो उस्ताद के सामने कोई भी नहीं टिक सकता, मगर पीठ पीछे टिकोरा उसे छूरी भोंक दे, वह कर ही क्या सकता है ?

यही था उस्ताद की चिन्ता का कारण।

यदि वह मर गया तो उसके पीछे मैना और परदेसी की जान एक क्षण भी सुरक्षित नहीं रह सकती। टिकोरा को उस्ताद ने काफी मन्त्र सिखा दिए थे और अब वही धोखे से उस्ताद की जान लेकर स्वयं सँपेरों का सरदार बनना चाहता था। पंच भी उससे डरते थे।

झोपड़े में अँधेरा था। बाहर कितने ही कीड़े-मकोड़े और जानवर भयानक स्वर में बोल रहे थे।

बूढ़ा शरीर भी कितना विवश होता है, जरा-सी चिन्ता के कारण नींद हराम।

उस्ताद उठकर बैठ गया चारपाई पर। उसका पालतू साँप सर के पास गुड़ली मारे पड़ा था। उसने उसे उठाकर हाथ में ले लिया और उसका मुलायम चमड़ा सहलाने लगा।

तभी झोपड़े का दरवाजा लड़खड़ाया और दबे पांव कोई जन्तु भीतर आया।

उस्ताद चौकन्ना हो गया। देख तो नहीं सका कुछ अँधेरे में, मगर कानों ने आहट अवश्य सुनी। वह धीरे से चारपाई से उतरा और दीवार से दबकर एक ओर खड़ा हो गया।

मैना और परदेसी बगल के कमरे में सो रहे थे। खुले दरवाजे की राह दोनों की गहरी साँस वहाँ तक सुनाई पड़ रही थी।

उस्ताद ने कुछ मन्त्र पढ़कर हाथ का जहरीला साँप जमीन पर रख दिया।

अन्दर आने वाला धन्तु धीरे-धीरे दबे पाँव उस्ताद की चारपाई की ओर बढ़ रहा था।

चारपाई के पास आकर रुक गया वह। अँधेरे के कारण चारपाई के दूसरे किनारे पर खड़े हुए उस्ताद को वह न देख सका।

उसके हाथ में कोई चीज चमकी, शायद छूरा था। दूसरे ही क्षण वह चमकती चीज उस्ताद की चारपाई की ओर तेजी से गिरी, आवाज हुई घस्स!

उसी समय झोपड़े में हलके हरे रंग की रोशनी फैल गई।

उस्ताद के मुख से निकला—"टिकोरा तुम?..."

टिकोरा ही था—

हाथ में छूरा लिए पागल-सा उस्ताद की ओर देख रहा था।

"अब बच नहीं सकते उस्ताद!...." वह बोला—"चारपाई से उठ गये तो क्या? एक वार खाली गया, दूसरा तो तुम्हारी जान लेकर ही रहेगा...."

छुरा लिए तेजी से लपका वह उस्ताद की ओर।

"फों!..."

साँप की भयानक फुफकार ने उसे रोक दिया।

उसने देखा—उस्ताद और उसके बीच सांप फन निकाले खड़ा है और उसकी उगली हुई मणि से झोपड़े में रोशनी हो रही है।

"आगे नहीं बढ़ सकते बेटे !..." उस्ताद धीरे से हँसकर बोला—"सांप मन्तर से बँधा है। आगे पैर बढ़ाओगे तो काट खायेगा...."

चुपचाप खड़ा हुआ टिकोरा क्रोध से दाँत पीसने लगा। उस्ताद और उसके बीच में साँप की भयानक दीवार थी, जिसे लाँघकर उस्ताद पर वार करना सरल न था।

"मैंने कहा था न कि गाँववालों की मिहरबानी से मैं उस्ताद नहीं बना हूँ...." उस्ताद ने कहा—"बना हूँ तो अपनी ताकत से और उस ताकत के मुकाबले में तुम जैसे छोकरे नहीं टिक सकते..."

"आज बच गये उस्ताद !....देखूँगा कब तक बचे रहते हो... टिकोरा को मामूली लड़का मत समझना, जो जरा-सी हार से पस्त हो बैठे...." बोला टिकोरा।

"तेरा दम ही तो देखना चाहता हूँ मैं...." उस्ताद मुस्करा कर बोला—"और इसीलिए तेरी जान छोड़ता जा रहा हूँ... खूब वार कर बेटे !.. कभी सुधर गया तू तो इतनी हिम्मत देख तुझे यहाँ का उस्ताद बनाकर ही मरूँगा..."

"मैं अपने बल पर उस्ताद बनूँगा..." टिकोरा क्रोध से बोला—"मुझे तुम्हारी मदद नहीं चाहिए...."

"अच्छा अब तू जा...आज रात की लड़ाई खत्म हुई.... ज्यादा चिल्लायेगा तो परदेसी और मैना की नींद टूट जायगी..."

"मैं जा रहा हूँ उस्ताद ! मगर याद रखना तुम..."

"मुझे याद है बेटे !....बचपन में जिसे गोद में बैठाकर

मन्तर सिखाये थे, वही टिकोरा है तू ? गले में साँपों की माला डाले चार साल पहले जिसके पीछे-पीछे तू घूमा करता था, वही उस्ताद हूँ मैं....कुछ भी भूला नहीं हूँ टिकोरा ! मेरा अहसान तू ही भूल गया...तूने मुझसे साँप का मन्तर सीखा, अब खुद साँप बनकर मुझे डँसना चाहता है ?....तुझे डँस लूँ मैं, तो लोग यहीं कहेंगे कि उस्ताद ने छोरे की जान ले ली...."

"देखना है कि कौन किसकी जान लेता है उस्ताद ?...." पैर पटकता हुआ टिकोरा चला गया।

उस्ताद ने आगे बढ़कर झोपड़े का दरवाजा बन्द किया, फिर चारपाई पर आ लेटा। सांप भी अपनी मणि निगलकर सिरहाने बैठ रहा। झोपड़ी में फिर अँधेरा छा गया।

परदेसी और मैना की गहरी सांस अब भी सुनाई पड़ रही थी। जवानी की नींद हिमालय-सी बेसुध होती है, चाहे भूकम्प आये चाहे आँधी, कोई परवाह नहीं।

"मैना ?...." उस्ताद ने कुछ तेज स्वर में पुकारा।

"बापू !...." इस बार मैना का उनींदा स्वर सुनाई पड़ा।

"बहुत गहरी नींद आती है तुझे तो...."

"नहीं तो बापू ! मैं तो जग ही रही हूँ...नींद तो अब ऐसी हो गई है कि बुलाने पर और दूर भागती है..." मैना का स्वर कुछ सजग हो गया था।

"सच कहती है तू....जग तो नहीं रही थी....कई बार पुकारा, बोली भी नहीं...."

"मैं बिल्कुल जग रही थी बापू !...."मैना उठकर उस्ताद के पास आई—"क्या हो गया है तुम्हें ? नींद नहीं आ रही है क्या ?"

"इधर क्या हो गया, कुछ जान पाई तू ?...."

"नहीं तो...."

"क्यों...."

"सपना देख रही थी बापू !...."

"झूठी कहीं की...." उस्ताद बोला—"बैठ जा और मेरा पैर दबा....जागते-जागते भी कोई सपना देखता है ?"

"क्या हुआ बापू...." मैना चारपाई पर बैठकर पैर दबाते हुए बोली।

"टिकोरा आया था...." उस्ताद बोला गम्भीर स्वर में।

मगर उस शान्त स्वर के पीछे छिपी हुई स्पष्ट आशंका एवं भय की झलक को मैना ने लक्ष्य कर लिया।

बोली—"घबड़ा गये हो तुम बापू ? टिकोरा से डर लगने लगा है तुम्हें क्या ?"

"नहीं !....डरता नहीं...." उस्ताद ने कहा—"मगर यहाँ से तबीयत ऊब चली है....यहाँ इन्सान को डँसने वाले इन्सान पैदा हो गये हैं....बचपन में टिकोरा को गोद में खिलाया था, इसलिए नहीं कि जवान होकर रात में छुरा भोंकने आये मेरे सीने में...."

"छूरा लेकर आया था टिकोरा ?...." मैना का स्वर भयभीत हो उठा।

"हाँ...."

"और तुमने उसे फिर छोड़ दिया बापू ! टिकोरा को तुम क्षमा क्यों करते चल रहे हो ?"

"जिसके पास ताकत है वही तो क्षमा कर सकता है छोरी ?...टिकोरा की जान लेकर मुझे क्या मिल पायेगा ?...."

"मगर उसे छोड़ते चलने से तुम्हारी जान का खतरा है बापू !"

"वही तो सोच रहा हूँ...मेरे बाद तेरा क्या होगा ? इस परदेसी की कौन मदद करेगा ? मेरे न रहने पर टिकोरा के सामने कौन खड़ा हो सकेगा..."

"टिकोरा की जान ले लो बापू !....सच जानो, एक दिन पछताओगे उसे चमा करके..."

"मैं दूसरी बात सोच रहा हूँ।" उस्ताद धीरे से बोला।

"क्या....क्या सोच रहे हो बापू ?...."

"सोचता हूँ, तुम्हें और परदेसी को लेकर शहर चल पड़ूँ..."

"शहर ?..." मैना चौंक पड़ी—"शहर चलोगे बापू तुम !"

"हाँ...पेट तो भगवान भर ही देगा....इतने जन्तर-मन्तर आते हैं, लोगों का कुछ भला ही होगा। शहर में कितने लोग साँप के जहर से मर जाते होंगे !...."

"यह तो बहुत अच्छा है बापू ?....भला कितनी दूर होगा शहर यहाँ से..."

"बहुत दूर !....चार दिन का रास्ता होगा..." बोला उस्ताद।

"तो चलो न बापू, अभी चल दो। शहर देखने की मेरी बड़ी साध है...."

"अभी तो नहीं, दो-तीन दिन बाद चल देंगे....'

"रात में ही निकल चलना, नहीं तो टिकोरा पीछा करेगा...."

"वह तो पीछा करेगा ही छोरी !...." उस्ताद ने कहा—"मैं ऐसे रास्ते से चलूँगा कि वह सर पटक कर रह जायगा मगर हमें नहीं पा सकेगा...."

"किधर से चलोगे ?...."

"उसी टीले वाली दरार से...नीचे ही नीचे वह रास्ता जंगल के उस पार बहुत दूर जाकर नदी के किनारे निकला है। मैं कई बार उस रास्ते आया-गया हूँ....मेरे सिवा वह रास्ता किसी ने देखा नहीं है। हम लोग आसानी से पहुँच जायँगे। शहर वहाँ से सिर्फ बीस कोस रह जाता है!"

"तो जरूर चलोगे न बापू...."

"जरूर रे! छोड़ दूँगा अब यह गाँव...." बोला उस्ताद—"रहने दे अब....जा सो रह..."

मैना उठकर सोने चली गई।

× × ×

परदेसी अभी-अभी ही स्नान करके आया था, और कमर में अजगर के चमड़े पर मोरपंख टाँककर बनाई गई एक छोटी-सी लुङ्गी पहने, हाथों में अजगर के दाँतों की बनी एक अजीब ढंग की कंघी लिए अपने बाल सँवार रहा था।

गोरे बदन पर अब तक पानी की कुछ चमकती बूंदें अँटकी हुई थीं। मैना सामने खटोले पर बैठी हुई एकटक परदेसी की ओर देख रही थी।

बोली वह—"बाल इतना न सँवारा करो परदेसी!..."

"क्यों?"

"नजर लग जायगी किसी की तो तड़पा करोगे..."

अब तो मैना जवान पलकों के कमान से कटाक्ष के तीर चलाना भी सीख गई थी।

"तुम्हारी ही नजर ऐसी है जो मुझे बेकार कर सकती है।" परदेसी ने कहा—"अपनी आँखों को जरा परदे में ही रखा करो रानी!"

"रानी कहकर तुम मुझे बहुत पुकारते हो जी!....जानते हो रानी किसे कहते हैं....कभी बापू से राजा-रानी का किस्सा सुन लो....बड़ा मजा आता है। मगर उस रानी और मुझमें बहुत फरक है परदेसी!"

"कोई फरक नहीं है मैना!"

"है कैसे नहीं?...." मैना बोली—"उनके पास उड़ने वाला घोड़ा था, जो आदमी की तरह बोल भी सकता था....रानी उस पर चढ़कर दूर-दूर की सैर कर आती थी....जरा दूर हटकर बैठो परदेसी। इस तरह तो वह राजा भी नहीं बैठा होगा अपनी रानी के पास....तो एक बार रानी अपने राजा के साथ घोड़े पर उड़ी जा रही थी! एक जादूगर ने उन दोनों को देख लिया और जादू के जोर से बकरा बनाकर...अरी दैया छोड़ो न मुझे? क्या कर रहे हो यह!..."

"कुछ तो नहीं मैना...."

"कुछ तो कैसे नहीं जी?....बापू के सामने तो चुप बैठे रहते हो, उनके जाते ही लगते हो मुझे छेड़ने। आने दो आज बापू को, न कह दिया तो मेरा नाम..."

"ऐसी बातें बापू से नहीं कहीं जाती मैना!...." कहा परदेसी ने।

"तब कैसी बातें कही जाती हैं?....मैं बापू से कुछ छिपाती नहीं, कल ही तो मैंने कह दिया कि परदेसी मुझे बहुत अच्छा लगता है। जब वह मेरे पास बैठता है तो मेरा दिल गुदगुदी से भर जाता है। सुनकर बापू हँस दिये। भला सच बात पर हंसने की क्या जरूरत थी परदेसी?...."

"तुम बड़ी भोली हो मैना!..." परदेसी ने मैना के शरीर को अपने हाथों में जकड़ रखा था।

“अपना मुँह तो अब दूर ही रखो...देखो न, मेरे होंठ सूज आये हैं कि नहीं ?....”

“झूठ बोलती हो ?...कहाँ सूजे हैं तुम्हारे होंठ ?....”

“नहीं सूजे हैं ?....मगर दर्द तो कर रहा है...” कहकर मैना परदेसी की गोद में लेट गई—“कर लो जी, जो तुम्हारे जी में आये । तुम खुश रहो तो थोड़ा दर्द ही सही, यह कोई बड़ी बात तो नहीं ?”

परदेसी ने उसका सर हाथों में उठा लिया, मैना की आँखें बन्द हो गईं । होठों पर क्षीण-सी मुस्कराहट छा गई । परदेसी का मुख नीचे झुका और—

“अब बस करो परदेसी ! तुम्हारे मन की बात हो गई न !....अरी दैया ! तुम मुझे पकड़ पाते हो तो अजगर की तरह निगल ही जाना चाहते हो....” मैना ने आखें खोल दी—“तुम कितने सुन्दर हो परदेसी ?”

“सुन्दर हूँ मैं....”

“नहीं तो क्या ?....देखोगे अपना चेहरा ?....एक सौदागर एक बार बापू को एक चीज दे गया था, जिसमें आदमी की सूरत साफ दिखाई पड़ती है ।”

मैना दौड़कर एक छोटा-सा शीशा उठा लाई ।

परदेसी ने शीशे को अपने हाथ में ले लिया । अपनी सूरत पर दृष्टि पड़ते ही वह चौंक पड़ा । उसकी भूली हुई याद पर इतना कड़ा धक्का लगा कि सारा शरीर ही काँप उठा । चेहरे पर घबराहट फैल गई ।

“क्या हुआ परदेसी ?....” मैना ने उसे अपने हाथों में भर कर पूछा—“शीशा देखकर घबड़ा गये तुम ? यह तो शहर में बहुत होता होगा !”

“मैना ! यह सूरत मेरी पहचानी हुई है, फिर भी याद

नहीं आता कि इसे कहाँ देखा है...." परदेसी अस्त-व्यस्त स्वर में बोला "जरूर मैं इस आदमी को भी जानता था। आज भूल गया हूँ फिर भी एक क्षीण स्मृति उभर आई है मस्तिष्क में...."

"अरे भोले बाबू ! इस शीशे में तो तुम अपनी ही सूरत देख रहे हो...." कहा मैना ने।

"अपनी ?....यह मेरी सूरत है ?....ओह, मैं तो बहुत परेशान हो गया था मैना ?" परदेसी कुछ आश्वस्त हुआ। यहाँ आकर उसने कभी अपनी सूरत देखी न थी, इसलिए इतना भ्रम हुआ था उसे।

"अरी दैया ! आज देखो तो बापू मुझे कितना बिगड़ते हैं... जाते-जाते जड़ी लाने को कह गये थे और मैं भूलकर तुमसे बातें करने लगी....मैं जाती हूँ परदेसी ! बहुत जल्द लौटूँगी। तुम कहीं जाना मत। जाओगे तो ठीक नहीं होगा...."

"अकेले मेरा दिल नहीं लगेगा मैना !...मैं भी चलूँगा तुम्हारे साथ...."

"कहीं टिकोरा मिल गया तो !...ना जी ना, मैं तुम्हें कहीं नहीं ले चलूँगी... भला चाहो तो चुपचाप इस खटोले पर लेट जाओ और उँगलियाँ चटकाओ मजे से..."

"मैना !...." परदेसी ने उसे पकड़ लिया—"तुम न जाओ रानी !..."

"मुझे जाना जरूरी है....अच्छा ले लो एक और....उसकी याद करते-करते मेरा रास्ता देखते रहना..." कहकर मैना ने स्वयं ही अपना मुँह आगे कर दिया।

परदेसी ने उसे चूम लिया और मैना खुशी-खुशी झोपड़े से बाहर हो गई।

खटोले पर लेटकर परदेसी झोपड़े की फूस की बनी छत को

देखने लगा।

तभी खुले दरवाजे पर किसी की छाया दीख पड़ी। परदेसी ने नजर घुमाई तो लजारो को अन्दर आते देखा।

लजारो एक-एक पग पर कमर लचकाती और जवान देह पर चार-चार बल देती आकर सामने खड़ी हो गई। परदेसी धीरे से उठकर बैठ गया।

"बड़ी देर से बाहर छिपी थी परदेसी!..." खटोले पर बैठती हुई बोली लजारो—"घबड़ा गये मुझे देखकर क्या?..."

"क्या करने आई हो लजारो?..."

"काम तो कुछ था नहीं... दिल नहीं माना तो तुमसे मिलने चली आई। बुरा किया मैंने?....नहीं न!...बहुत तड़पा रहे हो मुझे। सच कहती हूं, रात-दिन तुम्हारी ही याद आती रहती है। सोती हूँ तो नींद नहीं आती। खाती हूं तो भूख भाग जाती है।"

लजारो ने अपना दाहिना हाथ परदेसी की गर्दन में लपेट दिया। परदेसी ने छुड़ाना चाहा मगर लजारो का शरीर उसके और निकट होता गया।

"हाथ हटा लो लजारो!...." परदेसी परेशान होकर बोला।

"यह औरत का हाथ है मेरे रसिया! कुछ मजा ही देता होगा तुम्हें....नागिन नहीं कि डँस ले....सब कुछ मैना को ही दे दोगे या मुझे भी?..."

"क्या दूँ तुम्हें?...क्या दे सकता हूँ मैं?...."

"बहुत कुछ दे सकते हो तुम मेरे राजा!...मैना के होठों से कम मिठास मेरे होठों में नहीं....मैंने क्या देखा नहीं? बाहर ही तो थी—सब-कुछ देख चुकी हूँ। मेरा भी एक बोसा लेकर देखो..."

लजारो ने अपने होंठ आगे बढ़ा दिये।

परदेसी उसके मुख को दूर हटाता हुआ बोला— "मुझे नहीं चाहिए तुम्हारा बोसा..."

"चाहिए क्यों नहीं ? शरमा रहे हो परदेसी ! ले लो न एक...."

"नहीं...."

"मुझे मैना न समझना बाबू !..." लजारो कुछ तेज स्वर में बोली— "मैं लजारो हूँ, लजारो के दिल में बसकर किसी दूसरे के बनने न पाओगे तुम ! टिकोरा से कम खतरनाक मुझे मत समझना। साँप अगर जहरीला होता है तो नागिन के दाँतों में भी कम जहर नहीं होता..."

एकाएक लजारो को कुछ याद आ गया।

वह नम्र स्वर में बोली—"अरे !....मैं तो तुम पर नाराज हो गई परदेसी !....बुरा न मानना...मैना को ही प्यार करो तुम ! मुझे कोई दूसरा मिल जायगा। मगर इस तरह यहाँ अकेले कब तक बैठे रहोगे ? चलो, कुछ दूर घूम लो। पीपल के नीचे साँप और नेवले की लड़ाई हो रही है। कभी देखा नहीं होगा.... उठो न ..."

"मैं कहीं नहीं जाऊँगा..." बोला परदेसी।

लजारो ने उसके गले में से अपना हाथ निकाल कर कहा— "अब भी नाराज हो बाबू... अब तो तुम्हें मैना के लिए छोड़ ही दिया। थोड़ी देर मेरे साथ घूमने से मेरे तो बन नहीं जाओगे परदेसी....नहीं तुम्हें चलना ही होगा..."

लजारो ने जबरदस्ती उसका हाथ पकड़ कर उठाया और झोपड़े के बाहर खींच ले चली।

'नेवले और साँप की लड़ाई बड़ी मजेदार होती है परदेसी ! देखोगे तो वाह-वाह कहोगे....वह पीपल का पेड़ दिखाई पड़ रहा है न। उसी के नीचे दोनो को लड़ता छोड़ कर मैं तुम्हें बुलाने

आई थी ।....यह नेवले की आवाज आई....जरा तेज चलो। देखना है कौन जीतता है ?...."

परदेसी ने देखा—एक लम्बा काला साँप और एक मोटा-सा नेवला आपस में लड़ रहे हैं। लड़ाई बड़ी गम्भीर चल रही है। साँप की फुफकार और नेवले की चीख से परदेसी घबड़ा गया।

"मुझे डर लग रहा है, लजारो ! जाने दो मुझे...."

"और पास चलो....डरने की कोई बात नहीं...." कहकर लजारो उसे और नजदीक खींच ले गई। अब वे लड़ाई की जगह से केवल दस हाथ दूर थे।

"ऐसी लड़ाई तुम्हारे शहर में कभी होती है ?...." पूछा लजारो ने।

"क्या पता ?..." धड़कते सीने पर हाथ रखे बोला परदेसी।

"मगर मुझे तो पता है ?...." किसी ने पीछे से कहा।

टिकोरा की आवाज सुनकर परदेसी काँप उठा। मगर टिकोरा इस समय शांत था। चेहरे की भयङ्करता कुटिल मुस्कुराहट के पीछे जा छिपी थी।

"लड़ाई देखने आये हो बाबू ! लजारो के साथ ?..." बोला वह—"मैं तो उधर से जा रहा था, तुम दोनों को देखकर यहाँ आ गया ?...बहुत देर से लड़ रहे हैं क्या ये दोनों ?"

"हाँ !...." टिकोरा को आंखों से कुछ इशारे करती हुई बोली लजारो।

परदेसी को अब उस लड़ाई में आनन्द आने लगा था। वह लजारो और टिकोरा को भूलकर उन दोनों वीरों को देख रहा था, जो जान की बाजी लगाकर एक दूसरे पर आक्रमण कर रहे थे..."

टिकोरा और लजारो पीछे खिसककर परदेसी से कुछ दूर हो गये थे।

फुसफुसा कर लजारो बोली—"कब से यह तमाशा कर रहे हो...."

"तुम दोनों को आते देखा तभी से...." टिकोरा भी बहुत धीरे से बोला—"छोड़ते ही दोनों लड़ने लगे...."

"अब जल्दी से अपना काम कर डालो....बड़ी मुश्किल से इसे यहाँ तक घसीट लाई हूँ...."

"घबड़ाओ मत....अब यह बच नहीं सकता....मेरी चुटकी में मन्तर की धूल है। सांप पर छोड़ते ही....उस्ताद और मैना तो नहीं थे न ?..."

"कोई नहीं था....मैना का बोसा ले रहा था यह !"

"अच्छा !...मैंने इसकी जान बचाई और यह मेरी ही चीज पर अपना रङ्ग चढ़ाने लगा....खैर ! अब तो यह दो-चार ही मिनट का मेहमान है...."

दोनों चुप हो गये।

सांप और नेवला लड़ रहे थे....और परदेसी वह भयानक लड़ाई एक टक देख रहा था।

"अब जल्दी करो रसिया !...." फुसफुसाई लजारो।

"ले...तू भी क्या कहेगी ?...."

कहकर टिकोरा ने चुटकी में ली हुई धूल पर फूंक मारी और उसे सांप की ओर करके हवा में छोड़ दिया।

लडते हुए सांप में गजब की फुर्ती आ गई। उसने नेवले को लपेट कर कई जगह काट खाया। नेवला मृतप्राय होकर पड़ रहा।

जीतकर भी सांप का क्रोध अभी शान्त नहीं हुआ था। उसने एक भीषण फुफकार की और तब तेजी से परदेसी की ओर दौड़ा।

परदेसी हक्का-बक्का खड़ा था। भागते भी नहीं बना उससे।

लजारो और टिकोरा दौड़कर और पीछे हट गये। साँप तेजी से दौड़ा आ रहा था।

"यह क्या ?..." टिकोरा के मुख से आश्चर्य की एक चीख निकल गई।

उसने देखा, साँप के जहर से बेहोश पड़ा नेवला एकाएक सजग हुआ और भयङ्कर वेग से दौड़कर उसने साँप को जा पकड़ा।

दोनों में फिर भयङ्कर लड़ाई छिड़ गई।

"यह क्या हुआ ?... टिकोरा! यह कैसे हुआ ? नेवला का जहर कैसे दूर हो गया!..." लजारो ने पूछा।

टिकोरा तो स्वयं आश्चर्यचकित था। बोला—"अजीब बात है! मेरा मन्तर कट गया!..."

उसने चारों ओर ध्यानपूर्वक देखा, मगर आस-पास तो कोई नहीं था।

"रसिया! देखो न, नेवला मजबूत पड़ता जा रहा है, क्या...."

टिकोरा कुछ बोला नहीं! झुककर जमीन से एक चुटकी धूल उठाई और मन्त्र पढ़कर साँप की ओर फूँक दिया।

मगर कोई असर न हुआ।

परदेसी भयभीत नेत्रों से चुपचाप तमाशा देख रहा था। भागना चाहकर भी भाग नहीं पाता था! पैर इतने वजनी हो गये थे कि उठाये नहीं उठते थे।

"लो तुम्हारा साँप दो टुकड़ा हो गया!..." लजारो की हैरान आवाज आई—"नेवला मजे से उसका लहू चाट रहा है। तुम्हारे मन्तर में कुछ दम नहीं है क्या ?"

"नेवले को कोई और बल मिल गया लजारो !...उस्ताद की कारस्तानी है यह....अपने झोपड़े से ही मन्तर फेंका है उसने शायद..."

"मगर उन्हें पता कैसे लगा होगा ?"

"लग गया होगा...." टिकोरा दांत पीस कर बोला—"मगर परदेसी इतनी जल्दी नहीं बच सकता...मैं जानता हूं, यह महुवर की आवाज पर नाचने लगता है। मन्तर फूंक कर ऐसा नाच नचाऊँगा इसे कि गिर-गिर कर मर न जाय तो कहना..."

टिकोरा ने कमर से लटकती हुई महुवर निकाल ली। कुछ मन्त्र पढ़ कर उसे मुँह से लगा लिया।

"इसे जाने दो अलबेले !..."

"नहीं !... तु जरा दूर हटकर खड़ी हो जा....आज टिकोरा हारने वाला नहीं....झोपड़ी में उस्ताद क्या जान सकेंगे कि मैं इसे नचा रहा हूं..."

लजारो दूर हट गई।

टिकोरा ने महुवर में फूंक मारी। ऐसा मोहक स्वर निकला कि परदेसी का शरीर कांप उठा। वह उधर से घूमकर टिकोरा के सामने आ खड़ा हुआ।

महुवर के स्वर ने उसके मस्तिष्क में तूफान लाना शुरू कर दिया। जोर से बोला—"यह महुवर बन्द करो टिकोरा !...."

मगर आवाज बन्द न हुई। महुवर के स्वर के साथ टिकोरा के गाल फूलते-पचकते रहे।

परदेसी पर मदहोशी-सी छाने लगी। दिमाग उड़ चला। पैर कांपने लगे।

"टिकोरा !..." लजारो चिल्लाई।

मगर महुवर बजती रही।

परदेसी की आँखें बन्द हो गईं, पैर आगे-पीछे पड़ने लगे।

शरीर झूमने लगा। हाथ हवा में उठ गये।

दूसरे ही क्षण परदेसी कूद-कूदकर, झूम-झूम कर नाचने लगा। नाचते-नाचते वह गिर पड़ता और टिकोरा के पैरों के पास जमीन पर अपनी नाक रगड़ने लगता, फिर उठ खड़ा होता—फिर नाचता—फिर गिरता।

"जाने दो टिकोरा! छोड़ दो इस परदेसी की जान..." लजारो चिल्लाई।

टिकोरा की आँखें मन्त्र पढ़ते-पढ़ते और महुवर में फूंक मारते-मारते लाल हो रही थीं। चेहरा बड़ा ही भयानक हो गया था।

नाचते-नाचते परदेसी की गति तेज होती जा रही थी। आँखें उलट रही थीं। मुंह से झाग बहने लगा था। जमीन पर घिसते-घिसते नाक लहूलुहान हो गई थी।

महुवर की आवाज उत्तरोत्तर मादक और तेज होती जा रही थी, तभी—

हवा का एक झोंका आया।

टिकोरा के मुख से एक भयानक आर्तनाद निकला। वह धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा। महुवर की लम्बी नली उसके मुंह में घुसकर अटक गई। मुंह से खून गिरने लगा।

टिकोरा ने महुवर मुंह से निकालने की कोशिश की, मगर लगातार खींचने पर भी वह बाहर न निकली।

परदेसी का नाचना रुक गया था और वह धीरे-धीरे अब होश में आता जा रहा था।

लजारो तो पत्थर-सी बनकर खड़ी थी। उसे होश ही नहीं था। कैसे क्या हो गया, यह उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था।

तभी उसके कन्धे पर किसी ने हाथ रख दिया।

चौंककर घूमी वह—"उस्ताद!"

"कमीनी!..." उस्ताद का बूढ़ा शरीर क्रोध से कांप रहा था—"तू भी इस छोकरे के साथ मिल गई!...."

उस्ताद की बूढ़ी हथेली इतनी जोर से लजारो के जवान गाल पर बैठी कि वह चिल्ला उठी—"उस्ताद मुझे माफ करो। इसने मुझे बहका दिया था..."

उस्ताद जमीन पर गिरकर तड़पते हुए टिकोरा के पास आया और उसकी पसली पर एक लात मार कर बोला—"आज भी तेरी ही हार रही....जान तो तू ले ही लेता परदेसी की, मगर भगवान की दया से मैं इसी राह लौटा....बड़ी देर से उस पेड़ के पीछे छिपा सब देख रहा था...."

टिकोरा मुख से तो कुछ बोल नहीं सकता था। हाथ बढ़ाकर उसने उस्ताद के पैर पकड़ लिये।

"माफी तो तू कई बार माँग चुका..." बोला उस्ताद—"मगर जा, छोड़ देता हूँ...अब भी लड़कपन से बाज आये तो ठीक...."

उस्ताद ने कोई मन्त्र पढ़कर धूल डाली।

परदेसी अब तक सजग हो चुका था।

उस्ताद उसके पास आ उसका हाथ पकड़ कर बोला—"चलो बेटा! अकेले कभी मत आया करो...."

उस्ताद और परदेसी चले गये।

लजारो टिकोरा के पास आई।

टिकोरा उठ खड़ा हुआ। महुवर उसके मुंह से निकल गई थी। खून बहने से चेहरा बड़ा भयानक हो गया था।

दांत पीसकर बोला—"यह उस्ताद हवा बनकर सब जगह

पहुंच जाता है...अब इसकी जान लेकर ही छोड़ूंगा...इसके रहते परदेसी की जान लेना मुश्किल है...''

"जाने दो छैला...मुझे लेकर मौज करो....'' बोली लजारो।

"करूंगा न, घबड़ाती क्यों है ? पहले अपने दुश्मनों से तो निपट लेने दे....एक काम करेगी तू ?....''

"कह दो मेरे राजा ! अभी कर लाऊं...तुम्हारी ही खातिर तो उस बूढ़े ने मुझ पर तमाचा चला दिया...''

"मैं उसका हाथ न काट लूं तो कहना....उसके बदन की बोटी-बोटी पकाकर गांववालों का पेट भर दूंगा... सुन इधर....''

टिकोरा और लजारो चुपके-चुपके पुनः कोई योजना बनाने लगे।

• •

रात का अंधेरा झोपड़ी में घुसकर सो रहा था। चांद को डूबे हुए चार घण्टे से ऊपर बीत चुके थे। बाहर के पेड़-पौधों पर आसमान से ओस की बूंदें उतर-उतर कर बैठ रही थीं।

परदेसी और मैना अलग-अलग बिस्तरों पर सोये थे, परन्तु जमीन पर सोये रहने के कारण स्वप्न देखते-देखते वे एक दूसरे के बिल्कुल नजदीक पहुंच गये थे।

इस समय मैना की बाईं टांग परदेसी की कमर पर थी और परदेसी का दाहिना हाथ मैना की पीठ पर पड़ा था। दोनों के मुख केवल दो-चार अंगुल की ही दूरी पर रह गये थे।

एकाएक मैना के मुख से एक तेज चीख निकली—"बापू !...बापू..."

परदेसी की नींद खुल गई। उसने मैना को भरजोर अपने सीने से दाब लिया। देखा—मैना का सीना बड़े वेग से धड़क रहा था। सारा शरीर भय से कांप रहा था। आंखें खुल गई थीं और अंधेरे में इधर-उधर भयभीत गति से घूम रही थीं।

"मैना ! क्या हुआ रानी ?" पूछा परदेसी ने।

"बापू !...बापू को टिकोरा ने छुरा....परदेसी ! बापू को बचाओ...देखो, टिकोरा उनकी छाती पर चढ़ा है..." मैना पुनः चीख उठी।

परदेसी ने उसे पकड़ कर झकझोर दिया, फिर कहा—"सपना देख रही हो मैना ! होश में आओ..."

"सपना..." मैना को होश आ गया।

"अपने को सचेत करो...." बोला परदेसी—"तुम अपने झोपड़े में हो ! तुम्हारे बापू बगल की कोठरी में सो रहे हैं....'

"सो रहे हैं ?...." उठकर बैठती हुई बोली मैना—"मैं तो डर गई थी परदेसी ! कितना डरावना सपना था कि पूछो मत..."

"क्या देखा तुमने !..."

"देखा कि बापू को टिकोरा ने छूरा मार दिया है और बापू का शरीर खून में डूब-उतरा रहा है। बापू का मनी वाला सांप टिकोरा के गले में चुपचाप पड़ा है....मैं बहुत डर गई हूं परदेसी ! चलो बापू के पास...."

"उन्हें सोने दो....बड़ी रात तक तो जाग रहे थे—नींद खुल गई उनकी, तो बेचारे अब सो नहीं सकेंगे...."

"मेरा कलेजा धड़क रहा है....जरा और पास आ जाओ

तुम....मुझे अपनी गोद में छिपा लो परदेसी !...."

परदेसी ने उसके फूल से शरीर को उठाकर अपनी गोद में रख लिया। उसके अधरों पर दो-चार चुम्बन अंकित कर दिये।

"सबेरे बापू से कहूँगी कि अब यह गाँव छोड़ दें...." कहा मैना ने कुछ आश्वस्त होकर।

"गाँव छोड़कर कहाँ चलोगी ?...."

"तुम्हारे शहर में चलकर बसूँगी अब तो... देखते नहीं, इस गाँव में अब रोज ही लड़ाई-झगड़े हुआ करते हैं....टिकोरा बापू से जीत तो सकता नहीं, फिर भी छोटा दुश्मन कम खतरनाक नहीं होता। बापू एक दिन शहर चलने को बात कर रहे थे..."

"टिकोरा जाने दे तब तो ?...."

"वह जो महल है न ! जिसमें उस दिन हम लोग....वहीं से रास्ता है शहर जाने का, जिसे टिकोरा भी नहीं जानता....पहले तो बापू कह रहे थे कि जमीन के अन्दर वह रास्ता शहर तक गया हुआ है, मगर कल शाम को जब पूछा तो बोले कि थोड़ी ही दूर पर एक नदी की घाटी में जाकर वह रास्ता खतम हो जाता है। उसके बाद उस नदी के किनारे-किनारे जाने पर बहुत दूर पर शहर मिलता है....परदेसी ! सपने में बहुत जोर से चिल्लाई थी क्या ?...."

"हाँ...तभी तो मेरी नींद खुली...." बोला परदेसी।

"अब तक मेरा डर दूर नहीं हुआ—देखो ?" कहकर मैना ने परदेसी का हाथ अपने सीने पर रख लिया—"अच्छा जी ! यह तो बोलो कि इस सीने के अन्दर है क्या, जो किसी नई बात के होते ही धड़कने लगता है ? मैं तो समझती थी कि तुम्हारी गोद में लेटने पर ही ऐसा होता है, मगर अब तो सपना देखकर भी दिल धड़कने लगता है। सच परदेसी ! बड़ा डरावना सपना

था। तुम देखते तो और जोर से चिल्लाते....चलो न बापू से पूछें..."

"क्या पूछोगी ?"

"यही कि मेरा सीना क्यों धड़कने लगा है इतना आजकल ?"

"जाने दो मैना !..." परदेसी ने कहा—"रात अभी काफी है। उस्ताद को आराम करने दो।"

"नहीं जी, मैं तो बापू को जगाऊँगी जरूर...मैं घबड़ा रही हूँ कितना ! चलो उठो...."

मैना उठी। परदेसी भी उसका हाथ पकड़ कर उठ खड़ा हुआ।

तभी बाहर कोई जानवर अत्यन्त भयानक स्वर में बोला। डरकर मैना परदेसी के शरीर से जा लिपटी।

"क्या था परदेसी !..." फुसफुसाकर पूछा मैना ने।

"कोई जानवर था...."

"आज तो बहुत जानवर बोल रहे हैं...बापू भी कैसी नींद सो रहे हैं आज ? मेरी चीख भी सुनकर नहीं जगे और यह जानवर बोला तब भी नहीं। पहले तो कभी ऐसा नहीं होता था परदेसी ? जरा-सा खटका सुनकर ही मुझे पुकार बैठते बापू... क्या हो गया है उनको..."

दोनों धीरे-धीरे कोठरी से बाहर निकले।

"मेरा हाथ पकड़े रहो जी ! बड़ा डर लग रहा है...अब भी तो..." मैना ने कहा।

परदेसी ने उसका कन्धा पकड़ कर अपनी बगल में दबा लिया।

दरवाजे पर पहुँचकर मैना ने पुकारा—"बापू !"

उस्ताद की आवाज नहीं आई।

"बापू !...ओ बापू !...."

दूर पर से एक भयानक स्वर आया, मगर उस्ताद जगा नहीं, आज की नींद उसकी बड़ी गहरी थी।

"बापू तो बोलते ही नहीं !...." मैना की आवाज भय एवं आशंका से अजीब तरह की हो गई थी।

परदेसी का हाथ पकड़कर अन्धकार में टटोलते-टटोलते मैना उस्ताद की चारपाई के पास आ खड़ी हुई।

पुनः धीरे से पुकारा—"सो गये बापू ?...."

और दिनों तो किसी के पुकारने पर उस्ताद के पहले ही वह भयानक मणिधर जो हमेशा उस्ताद के सिरहाने पड़ा रहता था, फुफकार उठता था, परन्तु आज तो दोनों ही चुप थे।

मैना ने धीरे से झुककर उस्ताद का सर टटोला, फिर जल्दी-जल्दी सारी चारपाई टटोलने लगी।

"क्या हुआ मैना ?...."

"चारपाई खाली है परदेसी !" मैना ऐसे स्वर में बोली जैसे कोई उसका गला घोंट रहा हो—"साँप भी नहीं है....इतनी रात को बापू गये कहाँ ?"

मैना परदेसी का हाथ पकड़कर खींच ले गई झोपड़े के कोने में और मशाल पकड़ा कर चकमक रगड़ चटपट रोशनी की।

"अजगर के चर्बी की मशाल भकभका कर जल उठी।

तेज रोशनी झोपड़ी में फैल गई।

मैना आँखें फाड़-फाड़ कर चारों ओर देखने लगी, मगर उसका बूढ़ा बाप कहीं दिखाई न पडा।

"बापू !...." चीखकर मैना परदेसी के कन्धे से लग फूट-फूटकर रो पड़ी—"बापू चले गये....मुझे अकेली छोड़कर बापू कहाँ चले गये परदेसी ?...बापू !..."

परदेसी आश्चर्यचकित-सा खड़ा था। उस्ताद कहीं जाता तो

मैना से अवश्व कहकर जाता।

"सपना सच निकला परदेसी !....तुम कहते थे झूठा होगा। मेरे बापू कहाँ हैं इस वक्त ?....मेरा दिल कह रहा है उनके ऊपर जरूर जरूर कोई आफत आई है, नहीं तो मैना की पुकार सुनकर उनकी जबान चुप रहने वाली नहीं...."

"चलो, थोड़ी दूर बाहर चलकर खोजें...." बोला परदेसी।

"तुम यहीं रहो...मैं खुद खोजकर आती हूँ...तुम्हारा बाहर चलना ठीक नहीं...बापू बड़े बेवक्त हमें छोड़ गये परदेसी ! रात में टिकोरा आ गया तो मैं कैसे बचाऊँगी तुम्हें ? अब आसरा ही कौन-सा है ?...."

"अच्छा तुम्हीं अकेले जाओ—मगर जल्दी लौटना...." परदेसी ने कहा।

आँसू पोंछकर मैना दरवाजे की ओर बढ़ी।

मगर दरवाजे तक पहुँचने के पहले ही बाहर के अन्धकार में कोई चीज देख चीखती हुई आकर परदेसी से लिपट गई।

"क्या है मैना ?"

"कोई इधर आ रहा है...."

"कहाँ...."

"बाहर के अँधेरे में..."

"उस्ताद ही होंगे मैना ! तुम तो बहुत डर जाती हो...."

"बापू नहीं हैं...." मैना ने कम्पित स्वर में कहा—"बापू झुककर चलते हैं। वह ताड़ की तरह तनकर चला आ रहा है। टिकोरा होगा परदेसी ! वहीं होगा...अब ?...हाय बापू ! मेरे परदेसी को बचाओ ..टिकोरा आ रहा है बापू और तुम जाने कहाँ हो ? परदेसी, तुम बापू की चारपाई के नीचे छिप जाओ, जल्दी करो न...."

"और तुम ?..."

"मेरी फिकर छोड़ो...मेरी जान के ऊपर कोई खतरा नहीं..." मैना ने घबड़ाये स्वर में कहा।

परदेसी दौड़कर चारपाई के नीचे हो रहा।

तभी बाहर से आनेवाला दरवाजे पर आ खड़ा हुआ। बोला—"मैंने देख लिया है ? अब छिपना फजूल है...."

चारपाई के नीचे छिपे हुए परदेसी का सारा शरीर काँप उठा। आखिर शैतान ने देख ही लिया।

मगर आने वाले पर दृष्टि पड़ते ही मैना को सन्तोष हुआ कुछ। बोली—"चमकू! तू यहाँ ? इस वक्त ?...."

"हाँ रे, डर गई क्या ?....परदेसी बेचारे को चारपाई के नीचे क्यों छिपा दिया है ?...." उस्ताद और मैना के हमदर्द चमकू की आवाज थी यह।

सुनकर परदेसी बाहर निकल आया।

"छिपने में तो बहुत तेज हो बाबू! मुझे भी टिकोरा समझ लिया था क्या !...." कुछ हँसकर बोला चमकू—"उस्ताद लौटे कि नहीं ?...."

"कहाँ से ?....बापू तो यहाँ हैं ही नहीं। मुझसे कहकर भी तो नहीं गये कुछ! ..." बोली मैना।

"अब तक नहीं लौटे !..." चमकू चिन्तित स्वर में बोला।

"मैं तो बहुत परेशान हो रही हूँ चमकू! बिना कहे बापू कहीं नहीं जाते थे...."

"तीन घण्टे हुए मैंने लजारो के साथ जाते देखा था...." बोला चमकू—"मैं बाहर ही सोया था। उन्हें जाते देखकर बोला नहीं कुछ। सोचा, शायद किसी जरूरी काम से जा रहे हों, मगर काफी देर होने पर भी जब वे नहीं लौटे तो मुझे डर-सा लगा!

लगा, फिर शायद पिछवाड़े से चले गये हो—इसलिए उन्हें देखने इधर चला आया....आजकल लजारो और टिकोरा में बड़ी सांठ-गांठ चल रही है न !...."

"चमकू ! बापू की खैर नहीं दीखती....अभी-अभी मैं एक बुरा-सा सपना देख कर जगी हूँ। चल, कहीं उनकी खोज करें...."

"मगर चुड़ैल लजारो के साथ उस्ताद चुपचाप चले क्यों गये ? कोई बहुत डरावनी बात हो गई है मैना ! खोजने को कहती है तो चल....इस परदेसी को छोड़ दे यहीं....बाबू ! तुम दरवाजा बन्द कर अन्दर बैठ रहो !"

हाथ में जलती मशाल लिए आगे-आगे चमकू चला और उसके पीछे मैना।

धीरे-धीरे गांव पीछे छूट गया !

वह बड़ा-सा पीपल, जिसके नीचे उस दिन परदेसी ने सांप और नेवले की लड़ाई देखी थी, अँधेरे में दूर से ही दीख पड़ा, जैसे कोई बड़ा-सा दैत्य आसमान सर पर लादे चपचाप खड़ा हो।

पीपल के पेड़ के नीचे पहुंचते ही चमकू एकाएक रुक गया।

"क्या है चमकू...." मैना ने आगे बढ़कर पूछा।

"वह देख..." चमकू ने उंगली से दूर जमीन पर पड़ी हुई कोई चीज दिखाई।

दोनों लपक कर आगे बढ़े।

बांस की एक लाठी खून से सनी हुई पड़ी थी। आसपास जमीन पर भी काफी खून गिरा था।

"यह लाठी तो उस्ताद की है ?" चमकू बोला।

मैना रोती हुई दौड़ी और लाठी को उठाकर उससे लिपट गई।

"बापू ! अपनी यह लाठी छोड़कर तुम कहाँ छिप बैठे हो ?....सामने आओ बापू ! मेरे बापू !...."

चमकू भी गम्भीर हो रहा था। मैना का रुदन उसका कलेजा दहला रहा था। उसने मैना को उठाया।

"चुप रह मैना !...यह खून देख रही है न ? जो कुछ होना था वह हो चुका...अब सँभाल अपने को....उस्ताद टिकोरा से हार गये...ज्यादा चिल्लायेगी तो तू भी हार कर बैठ रहेगी...."

"मैं क्या करूँ चमकू ? कहाँ जाऊँ ? बापू को कैसे देखूँ ?..."

"बापू को देखने का सपना छोड़ ! अब अपनी और परदेसी की जान बचा....अभी रात है, कहीं भागना चाहे तो चल दे... सुबह होने पर कुछ न कर पायेगी...."

परिस्थिति की जटिलता ने मैना को चैतन्य किया। रोना बन्द हो गया मगर आँसू बहते रहे।

चमकू बोला—"तुझे अब इस गाँव में एक क्षण भी नहीं ठहरना चाहिये..."

"मैं चली जाऊँगी चमकू ! बापू से मैंने शहर का सारा रास्ता पूछ लिया था....परदेसी को लेकर अभी चल दूँगी...बापू भी हमारे साथ चलने वाले थे, मगर पहले ही चल दिये...."

दोनों झोपड़े की ओर चल पड़े। चमकू ने अब मशाल बुझा दी थी। इस समय टिकोरा के आतङ्क से सारा गाँव ही मैना का दुश्मन बन बैठा था। ऐसी दशा में मशाल जलाकर रास्ता चलना ठीक न होता।

झोपड़े के दरवाजे पर पहुँच कर चमकू ने मशाल जलाई।

मैना चौंककर बोली—"हैं ! दरवाजा खुला है। परदेसी से कह गई थी कि दरवाजा बन्द करके अन्दर बैठे...परदेसी !....ओ परदेसी..."

परदेसी का उत्तर नहीं आया। शायद आँखें लग गई थीं उसकी।

मैना का माथा ठनका। चमकू भी चौकन्ना हो गया।

दोनों मशाल लिए अन्दर घुसे। कई बार परदेसी को पुकारा मगर कोई उत्तर नहीं आया।

"परदेसी भी गया मैना !...." चमकू बोला—"शायद हमारे जाने के बाद टिकोरा इधर आया था। अब तू ही अकेली बच रही है। भागना चाहे तो भाग जल्दी....टिकोरा तेरी खोज में होगा इस वक्त...."

"अब मुझे भी टिकोरा ले चले। अकेली बचकर किधर जाऊँगी ?..." मैना हताश स्वर में बोली।

"तू एकाध दिन कहीं छिप कर बैठ सके तो अच्छा है। मैं परदेसी की खबर लेकर तुझे दूँगा...इस तरह टिकोरा के हाथ में पड़ना ठीक नहीं है....कोई ऐसी जगह तुझे मालूम है...."

"है...."

"तो चल जल्दी...मेरे उस्ताद की बेटी है तू...तेरी कुछ भलाई कर दूँ तो उस्ताद की आत्मा आशीर्वाद देगी...मगर जल्दी जरा..."

"अभी चलती हूँ...उस कोठरी से एक चीज ले लूँ...तू इस मशाल को बुझा दे....दूर से टिकोरा जान जायगा..."

चमकू ने मशाल तुरन्त बुझा दी।

मैना अँधेरे में टटोलती हुई दूसरी कोठरी में आई।

अन्दर काफी अन्धकार था। मैना झोपड़ी की दीवार पर कोई चीज टटोलने लगी। एकाएक उसका हाथ किसी चीज पर जा पड़ा तो वह चौंक पड़ी। उसने टटोला, जिस चीज पर उसका हाथ पड़ा था था वह किसी को उँगली थी। उसने जरा और टटोला तो कलाई, जरा और ऊपर हाथ बढ़ाया तो पूरा हाथ।

या ईश्वर! इस अँधेरे में यहाँ कौन खड़ा है?

मैना का कलेजा धड़क रहा था पूरे वेग से। टटोलते-टटोलते उसके हाथ और बढ़े तो किसी के कन्धे पर जा पड़े।

वह बड़ी जोर से चिल्लाई—"चमकू! मशाल जलाओ.... यहाँ अँधेरे में कोई खड़ा है...."

चमकू ने तुरन्त मशाल जलाई और दौड़कर कोठरी में आया।

अन्दर आते ही जो कुछ उसने देखा....उससे उसका सारा रक्त जम गया।

मैना कई पग पीछे हट गई। पैर काँपने लगे। आँखें बन्द हो गईं।

"हा-हा-हा-हा! भाग रही थी मैना रानी! भागने वाले के पैर दो, और पकड़ने वाले का दिमाग एक, फिर भी तुम्हें हारना ही पड़ा...हा-हा-हा-हा!"

टिकोरा ही था वह! इतनी भयानक हँसी हँस रहा था कि चमकू और मैना के पैरों के नीचे की जमीन तक हिल-हिल उठती थी। उस्ताद का पालतू मणिधर उसके गले में लिपटा पड़ा था।

"अब भाग नहीं सकती तुम...." टिकोरा ने आगे बढ़कर मैना का हाथ पकड़ लिया—"टिकोरा ने कभी अपनी हार नहीं मानी...आज टिकोरा सारे गाँव का उस्ताद है। अपने बल से उस्ताद बना हूँ मैं। किसी में इतनी हिम्मत नहीं कि मेरे सामने खड़ा हो सके..."

"टिकोरा !...." मैना उसका पैर पकड़ कर बोली—"मैंने तेरा क्या बिगाड़ा है ?...."

"कुछ नहीं...." बोला टिकोरा भयानक रूप से हँसकर—"मेरा कोई बिगाड़ ही क्या सकता है ? तेरी-मेरी लड़ाई तो सिर्फ जिद की है। तू अभी अपनी जिद छोड़ दे तो देख !...तेरा बापू और परदेसी सब टिकोरा के शिकार बने....अब तू बचकर जायगी कहाँ..."

टिकोरा ने छटपटाती हुई मैना को उठाकर हाथों पर ले लिया और ले चला !

चमकू के सामने आकर वह रुका। उसके पेट में एक लात मारकर बोला—"क्यों रे गेहुँवन ! तेरी हिम्मत कि तू मेरे रास्ते का काँटा बने !...."

लात खाकर चमकू गिर पड़ा।

मैना को गोद में उठाये चला गया टिकोरा। चमकू जमीन पर पड़ा-पड़ा जलती हुई मशाल को देखता रहा।

× × ×

आज टिकोरा सँपेरों का सरदार है। गाँव भर में उसने जलसा मनाने की आज्ञा दे दी है। अपने घर से पका-पकाया अजगर का मांस तथा शराब का कुल्हड़ उसने गाँव भर में बँटवाया है ! लोग मगन होकर जलसे की तैयारी कर रहे हैं ! बूढ़े उस्ताद फेरई को सभी भूल चुके हैं। किसी में इतना साहस नहीं कि टिकोरा से उस्ताद के गायब होने के विषय में पूछे !

शाम को सैकड़ों मशालें जल उठीं। नगाड़े गड़गड़ाने लगे, महुवरें बजने लगीं। शराब के नशे में बुत्त सँपेरे मनमाना नाच नाचने लगे।

टिकोरा के झोपड़े की एक कोठरी में परदेसी और मैना साथ-साथ बन्द थे। दोनों अपने जीवन से निराश हो चुके थे। सन्तोष केवल यही था कि दोनों साथ-साथ थे। मरते-मरते भी एक-दूसरे के आँसू पोंछ सकते थे।

अँधेरा फैल चुका था चारों ओर।

बन्द झोपड़ी में परदेसी जमीन पर बैठा था। रोती हुई मैना का सर उसकी गोद में था और वह धीरे-धीरे उसके मुलायम बालों को सहला रहा था।

मैना चुप थी। केवल सिसक-सिसक कर रोती जा रही थी।

परदेसी चुप करा रहा था उसे—"रोओ मत मैना! जो कुछ हुआ उसे भूल जाओ... और जो कुछ होने वाला है उसे सहने की ताकत इकट्ठी करो मन में..."

"मरने का कोई उपाय नहीं हो सकता परदेसी! टिकोरा के हाथों बेइज्जत होने से तो मर ही जाना ठीक है। देखो, मेरा गाल कितनी बेरहमी से काट खाया है उसने..."

"कौन-सा उपाय बताऊं मरने का?..."

"मुझे चाहते हो तो मेरा गला दबा दो अभी...."

"तुम्हीं मेरा गला दबा दो मैना!" परदेसी बोला—"मेरे ही कारण यह सब हो रहा है...."

"तुम मरद होकर मेरा गला नहीं दबा सकते तो मैं औरत

होकर ऐसी हिम्मत कहाँ से लाऊँ ? बाहर जलसा हो रहा है न....''

''सुनाई तो पड़ रहा है शोरगुल...''

''जलसे से खाली होकर शराब में बुत्त टिकोरा सीधे मेरे पास आयेगा और हरामी तड़पा-तड़पा कर अपनी हविश पूरी करेगा...भगवान भी बुरे का साथ देते हैं क्या परदेसी ? बापू कहते थे, भगवान हमेशा इन्साफ करता है। मगर बरबाद हो जाने पर भगवान का इन्साफ लेकर क्या करूँगी मैं ?....''

''चुप रहो मैना ! शायद कोई आ रहा है...'' परदेसी ने धीरे से कहा।

''वही होगा परदेसी !...टिकोरा ही आ रहा होगा....हाय बापू ! मेरी पुकार सुन लो....तुम्हारी मैना तुम्हें पुकार रही है बापू !....जीते हो तो आकर मुझे बचाओ। मर गये हो तो साँप बनकर मुझे आ डँसो....मेरे बापू !....'' मैना सिसकने लगी।

तभी बन्द कोठरी का दरवाजा खटका। बाहर से कोई कुण्डी खोल रहा था, बहुत आहिस्ते से।

परदेसी उठकर खड़ा हो गया। मैना उसके पीछे जा दुबकी। कोठरी का दरवाजा खुला और दबे पाँव कोई अन्दर आया।

''मैना !...'' आने वाले ने पुकारा बहुत धीरे से।

यह किसकी आवाज आई। किसका स्वर सुना मैना ने ?

उसका कलेजा धड़क गया। उसके कान अपने बापू की आवाज पहचान गये। वह चीखकर दौड़ी—''बापू !....मेरे बापू...''

"नहीं रे, मैं हूँ मैना !....चमकू !..." आने वाले ने कहा।

अर्द्धविक्षिप्त मैना हताश हो गई, फिर भी चमकू को देखकर कुछ धैर्य मिला। बोली—"क्या है चमकू ?...कैसे आ सका यहाँ ?...."

"लजारो लाई है मुझे...." चमकू बोला—"तुम्हारी रखवाली वही कर रही थी...जल्दी निकलो यहाँ से—लजारो अब सँभल गई है। टिकोरा ने इसे फाँसकर अपना काम बना लिया, अब इसे धोखा देकर तुम्हें अपनी बनाना चाहता है....यह तो है पीछे खड़ी लजारो। तुम्हें यहाँ से भगा देना चाहती है...."

"जल्दी करो मैना बहन !....नहीं तो आ जायगा वह...." लजारो की धीमी आवाज आई।

जल्दी-जल्दी मैना और परदेसी बाहर आये।

"किधर से जायेगी ?..." चमकू ने पूछा।

"हमें एक मशाल देकर महलवाले टीले तक पहुँचा दो.... आगे का रास्ता मैं खुद खोज लूँगी...." बोली मैना।

"मशाल मैं लिए हूँ...चलो जल्दी...." चमकू ने कहा।

सब दबे पाँव अँधेरे में उस टीले की ओर बढ़े। रास्ते में कोई बातचीत नहीं हुई। थोड़ी ही देर में मैना उस महल के पास पहुँच गई, जहाँ से शहर में आने-जाने का रास्ता उस्ताद फेरई ने उसे बताया था।

वहाँ पहुँच कर मैना ने सन्तोष की साँस ली, फिर बोली—"बस, अब ठीक है। टिकोरा अब हमें नहीं पा सकता....तुम्हारी भलाई मैं कभी नहीं भूलूँगी लजारो....तूने मेरी जान बचा ली..."

"मैंने जो कुछ तुम्हारे साथ किया है, उसका बदला भगवान मुझे देगा मैना !...." लजारो रो पड़ी कहते-कहते—"मैंने तुम्हें बरबाद कर दिया... उस्ताद की जान मैंने ही ली...टिकोरा की मीठी-मीठी बातों में आकर जो कुछ किया, उसे एक चुड़ैल ही कर सकती है....अब तो तुम जा ही रही हो बहन ! सुनना चाहो तो सुना दूँ....अब तो शायद ही कभी भेंट हो सके तुमसे...."

"कहो, क्या कहती हो !" मैना ने कहा।

"कल रात कितना अँधेरा था, देखा ही होगा तुमने ?... टिकोरा की मीठी बातों ने मेरे दिल में और अँधेरा भर दिया। आधी रात को मैं तुम्हारे झोपड़े पर हाँफती-हाँफती दौड़ी गई। धीरे से उस्ताद को पुकारा, उस्ताद जग रहे थे। गले में साँप की माला पहने बाहर निकल आये। मुझे देख कर चौंक पड़े।

× × ×

"लजारो तू ?..."

"हाँ उस्ताद !....मुझे बचाओ...."

"क्यों आई है इतनी रात को तू ?...."

"टिकोरा से मुझे बचाओ उस्ताद !...मुझे पटक कर मेरी इज्जत लूट रहा था... मौका पाकर तुम्हारे पास भाग आई... मुझे मेरे झोपड़े तक पहुँचा दो बापू ! रास्ते में तो वह हरामी बैठा हुआ है...." काँपती हुई लजारो बोली।

उस्ताद की आँखें क्रोध से लाल हो गईं। बोले वह—"चल तू, मैं उसे अभी देखता हूँ। उसकी इतनी मजाल कि गाँव की बेटियों पर डाका डाले ?...."

लाठी टेकता उस्ताद चल पड़ा। कोठरी में सोये परदेसी और मैना को उसने अपने जाने की सूचना भी न दी। लजारो उसके पीछे-पीछे चली।

पीपल के पास पहुँच कर लजारो ने अपना दाहिना पैर उस्ताद के पैरों में डाल दिया। उस्ताद लड़खड़ा कर गिर पड़ा। तभी पेड़ के पीछे से एक काली छाया निकली और उसके हाथ का छूरा उस्ताद की पीठ में पूरा घुस गया।

लगातार कई छूरे खाकर उस्ताद साँस भी न ले पाया और शान्त हो गया!

"खूब किया लजारो! खूब!...." टिकोरा था वह।

झुककर उसने उस्ताद के गले का मणिधर निकाला और कोई मन्त्र पढ़कर उसे अपने गले में पहन लिया। फिर उस्ताद की लाश को पीठ पर लादे अपने झोपड़े में आया।

"लजारो! मैं लाश को काटता हूँ....तू चूल्हा जला...." बोला टिकोरा।

"क्या करोगे?" लजारो ने पूछा।

"तू चुपचाप करती चल, जो मैं कहूँ...." टिकोरा ने कहा—"इस बूढ़े का मांस निकाल कर अजगर के मांस के साथ पकाऊँगा और सारे गांव में बाँट दूँगा....जला चूल्हा... इधर-उधर करेगी तो ठीक नहीं होगा...."

लजारो कोने में जाकर चूल्हा जलाने लगी।

"चूल्हा जल जाने पर टिकोरा ने उस्ताद की लाश के टुकड़ों को अजगर के मांस के साथ पकाया और हड्डियाँ झोपड़े में गड्ढा खोदकर उसी में बन्द कर दी—और मैं चुड़ैल सब कुछ

खड़ी-खड़ी देखती रही...मुझे माफ कर सकेगी मैना बहन ?..."

लजारो ने झुककर मैना के पैर पकड़ लिए और लोट पड़ी जमीन पर।

मैना रो रही थी। उसके बापू का दुखद अन्त कितना भयानक था।

उसने लजारो को उठाया।

बोली—"औरत की जात होकर तूने अच्छा नहीं किया लजारो ! फिर भी जाते-जाते तुझे माफ किये जाती हूँ...."

"इतना सब किया उसके लिए, फिर भी टिकोरा ने मेरे साथ दगा की। शाम को जब मैंने उससे कहा कि जलसे में मेरे साथ ब्याह कर ले तो उसने मेरे गाल पर तमाचे मार कर उसका जवाब दिया...."

ये लोग टीले के नीचे खड़े हुए बातें कर रहे थे।

उसी समय टीले के ऊपर दस-बारह मशालें चमकीं और पचासों व्यक्तियों का शोर सुनाई पड़ा।

टिकोरा की आवाज आई—"वह हैं, पकड़ो...."

बहुत से आदमी दौड़ते हुए नीचे उतरने लगे। टिकोरा सबसे आगे था।

"भागो मैना ?...जल्द भागो..." चिल्लाई लजारो !

मगर जब लजारो और चमकू ने घूमकर देखा तो पीछे कोई नहीं था। परदेसी और मैना जाने कहाँ गायब हो गये थे ?

दौड़ते हुए टिकोरा और उसके आदमी जलती मशालों के साथ नीचे पहुँच गये। टिकोरा के हाथ में वही मणिधर था।

"ओह ! तुम लोग हो ?..." टिकोरा चमकू और लजारो को लाल-लाल आँखों से देखता हुआ बोला—"टिकोरा के गुस्से से

खेलना मजाक नहीं। बोलो, वे दोनों किधर गये हैं? अभी मैंने उन्हें तुम्हारे पास देखा था...तुम बोलो चमकू!..."

"मैं नहीं जानता...." चमकू ने दृढ़ स्वर में कहा।

"कुत्ते! बदजात!...." टिकोरा ने कुछ मन्त्र पढ़कर सांप आगे कर दिया—"नहीं बताता तो तू भी जा..."

आगे बढ़कर सांप ने चमकू के मस्तक पर जोरों से फन मारा। खून बह चला! विकराल मणिधर के विष से चमकू का बदन स्याह होकर नीचे गिर पड़ा।

"लजारो!...." टिकोरा लजारो के सामने आया—"तू तो बहुत जल्दी कर गई....मैं तो तुझे अपनी रानी बनाता ही, मगर तूने दुश्मन की मदद कर डाली....तुझे माफ नहीं कर सकता मैं...बोल, परदेसी और मैना कहाँ छिपे हैं?..."

"मैं क्या जानूँ?..." लजारो बोली।

"नहीं जानती तू?...तुम लोग उधर खोजो, मैं इस कमीनी से निपट लेता हूँ..." टिकोरा ने कुछ व्यक्तियों को आज्ञा दी।

तभी बगल वाली दरार से एक हल्की रोशनी की झलक बाहर आई। शायद अन्दर पहुँच कर मैना और परदेसी ने मशाल जलाई थी।

रोशनी देखकर टिकोरा चौंका, फिर क्रूर हँसी हँसकर बोला—"तो इस दरार के अन्दर हैं दोनों...तभी उस दिन आकर इसमें छिप बैठे थे और मैं खोजता ही रह गया था...अब कहाँ जायेंगे बचकर दोनों...."

टिकोरा ने प्रज्वलित आँखों से लजारो की ओर देखा और

हाथ का सांप उसके कन्धे पर फेंक दिया।

लजारो चिल्लाकर पीछे हट गई, परन्तु सांप उसके गले में लिपटता चला गया।

"कमीनी! तू ने मेरे साथ दगा की...अब फल भोग उसका..."

"मुझे छोड़ दो रसिया!..." लजारो चिल्लाई।

"रसिया!....हाहाहाहा! रसिया तो तेरा चमकू था....जा तू भी उसी के पास..." कहकर टिकोरा ने कोई मन्त्र पढ़ा।

मणिधर फन निकाल कर खड़ा हो गया और भयानक गति से उसने लजारो के गाल पर अपने जहरीले दांत लगा दिए।

लजारो का शरीर तुरन्त निर्जीव होकर गिर पड़ा।

टिकोरा ने सांप अपने हाथ में ले लिया और पुनः कोई मन्त्र पढ़ा।

सांप ने टिकोरा की हथेली पर अपनी मणि उगल दी और उसके हाथ पर पड़ रहा।

"देखो!...." टिकोरा संपेरों से बोला—"मैं उन दोनों की खोज में जाता हूँ...तुम लोग जाकर जलसा मनाओ, अभी लौट कर आऊंगा..."

संपेरे चले गये। जलती मशालें दूर होती गई। केवल सांप के मणि की हलकी रोशनी वहाँ रह गई।

धीरे से टिकोरा उस दरार में घुस गया।

× × ×

परदेसी के हाथ में जलती मशाल थी। मैना खड़ी होकर उस बन्द जगह से चारों ओर देख रही थी।

"रास्ता तुम्हारा देखा नहीं है, फिर कैसे शहर पहुँचोगी मैना ?..." परदेसी ने पूछा।

"बापू ने मुझे रास्ता बता दिया था, जैसे उन्हें मालूम था कि वे हमारे साथ नहीं चल सकेंगे...टिकोरा के चंगुल से हम बाहर हो चुके अब। धीरे-धीरे भूलते-भटकते पहुँच ही जायेंगे..."

"कौन-सा रास्ता है ?..."

"वह खुला दरवाजा....कुछ दूर तक उसमें से रास्ता चला गया है....दो-चार दिन शायद भूखे रहना पड़े...."

"तुम्हें देखकर ही यह साहस कर रहा हूँ मैना! नहीं तो यह रास्ता मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं..."

"दूसरा रास्ता है ही कौन ?... बापू तो इस रास्ते कई बार शहर आ-जा चुके थे—कहते थे, अँधेरे से जी न ऊबे तो कोई तकलीफ नहीं होती इस रास्ते... परदेसी! मशाल बुझाओ। दरार से कोई अन्दर आ रहा है..."

परदेसी ने तुरन्त मशाल बुझा दी और दोनों लपक कर एक कोने में दुबक गये!

हथेली पर चमकती हुई मणि लिए टिकोरा अन्दर आया और आश्चर्य से लम्बे-चौड़े स्थान को देखने लगा।

"बापू का साँप लिए है हरामी!...." धीरे से बोली मैना—"यहाँ का पता कैसे पा गया ? देख लेगा तो खैर नहीं...और... और दुबक जाओ....अरी दैया! वह इधर ही बढ़ा आ रहा है..."

दोनों दीवाल से सटकर पलस्तर हो गये।

टिकोरा इधर ही आ रहा था। वह विस्मित दृष्टि से ऊपर-नीचे देख रहा था। परन्तु उन दोनों पर अभी उसकी दृष्टि नहीं पड़ी थी, क्योंकि मणि की रोशनी अत्यन्त क्षीण थी।

टिकोरा आकर उन दोनों के सामने खड़ा हो गया। उसकी पीठ इनकी ओर थी। दोनों ने अपनी साँस रोक ली, ताकि दिल की धड़कन सुनकर वह उनका पता न पा ले!

टिकोरा अपने आप ही बड़बड़ाया—"जगह तो काफी बड़ी है—मगर वे दोनों गये कहाँ?... बिना पकड़े दम नहीं लूँगा..."

टिकोरा दो पग पीछे हटा। अब मैना और परदेसी के शरीर और उसकी पीठ में केवल एक बालिश्त का फासला रह गया था। जरा भी दोनों हिले कि टिकोरा ने घूमकर उन्हें पकड़ा।

"शायद उस दरवाजे में घुस गये हैं दोनों..." टिकोरा पुनः बड़बड़ाया—"देखता हूँ...."

वह आगे बढ़ा और एक दरवाजे में घुस गया।

"बच गये..." मैना ने जोर से साँस छोड़ी—"वह उधर दरवाजे में गया है...हमें बगल वाले दरवाजे से चलना है....धीरे से बढ़ो आगे...."

दबे पाँव अँधेरे में दोनों आगे बढ़े। दरवाजे तक जा पहुँचे निर्विघ्न।

"मेरा हाथ पकड़ लो और आओ..." मैना ने दरवाजे में घुसते हुए धीरे से कहा—"अन्दर का रास्ता साफ है। दौड़ चलेंगे हम लोग..."

परदेसी ने मैना का हाथ पकड़ लिया और तेजी से दोनों आगे बढ़े।

तीन-चार घण्टे तक दोनों कभी दौड़ते कभी चलते रहे।

एकाएक आगे चलती हुई मैना रुक गई। उस अँधेरी सुरंग में आगे दूर पर क्षीण रोशनी दिखाई दे रही थी।

"आगे कुछ रोशनी दिखाई पड़ रही है...." बोली मैना।

"शायद यह रास्ता अब खतम हो रहा है..." परदेसी ने कहा।

"हो सकता है, मगर देखो, वह रोशनी धीरे-धीरे इधर ही बढ़ती आ रही है....हलकी हरी रोशनी दीख रही है....या भगवान! टिकोरा आगे कैसे आ रहा है!"

"शायद उस दूसरे कमरे का रास्ता आगे जाकर कहीं आ मिला है इस रास्ते में?..."

"टिकोरा ही तो है....मूंछें देख रहे हो न?....अब तो सभी रास्ते बन्द हैं...आगे बढ़ नहीं सकते...पीछे लौटने से फिर उसी मुसीबत में जा पड़ेंगे...."

दोनों फिर दीवार से दुबक गये! मगर इस बार बचने की कोई आशा न थी, क्योंकि सुरङ्ग चौड़ी न थी और टिकोरा के हाथ पर थी चमकती मणि।

"थोड़ी हिम्मत करोगे परदेसी?..."

"बोलो!..."

"वह जरा-सी पत्थर की नोक निकली है...तुम खूब छिप कर उसकी ओट में बैठ जाओ....टटोल कर पत्थर का कोई बड़ा-सा टुकड़ा हाथ में लिए रहना...."

"और तुम?...."

"मैं यहीं बीच में खड़ी रहूँगी...मुझे देखकर टिकोरा सीधे मेरे पास आयेगा और मुझे पकड़ना चाहेगा, तब तक तुम पीछे से

उसके सर पर पत्थर दे मारना....वह पत्थर है बड़ा-सा....उठा लो उसे और जा छिपो जल्दी...वह नजदीक आता जा रहा है... जरा तौलकर हाथ छोड़ना..."

परदेसी पत्थर का टुकड़ा उठाकर थोड़ी दूर आगे जा छिपा।

मैना धड़कते कलेजे पर हाथ रखे बीच सुरङ्ग में खड़ी रही। आते हुए टिकोरा की आकृति एकदम साफ हो गई थी। आँखें क्रोध से लाल-लाल थीं!

दूर ही से उसने मैना की छाया देख ली। दौड़ता-दौड़ता वह उसके पास आ खड़ा हुआ।

"अब कहाँ जा सकती हो मैना रानी?....परदेसी कहाँ गया?....तुम्हारा परदेसी?...." टिकोरा की विकट हँसी सुरङ्ग में गूंज उठी।

"वह भाग गया मुझे छोड़कर...." बोली मैना।

"भाग गया?....टिकोरा को बहकाओ मत....कहाँ छिपाया है उसे? बोल?...."

परदेसी हाथ में पत्थर का टुकड़ा लिए टिकोरा के पास पहुँच चुका था।

तभी टिकोरा घूम पड़ा। परदेसी पर उसकी दृष्टि जा पड़ी। अपने सर पर आता हुआ खतरा वह समझ गया।

उसने घूमकर परदेसी को जा पकड़ा। परदेसी के हाथ का पत्थर दूर जा गिरा।

परिस्थिति विकट थी।

टिकोरा परदेसी से उलझा था, तब तक मैना में जाने कहाँ का बल आ गया। वह दौड़ी और झपटकर उसने टिकोरा की कमर में बँधा हुआ छूरा निकाल लिया।

टिकोरा सँभल न सका और उसकी पीठ में एक-दो-तीन !

चक्कर खाकर भयानक सँपेरे का शरीर जमीन पर गिर पड़ा।

मैना चिल्लाई—"परदेसी! इसके सर पर पत्थर मारो.... जबान न हिला सके यह....नहीं तो मन्तर से साँप को बाँध देगा...."

परदेसी में अब फुर्ती आई। पत्थर उठाकर उसने उसके सर पर दो-तीन बार पटका।

"अब रहने दो...." मैना बोली—"मर गया होगा....चलो।"

दोनों पुनः तेजी से भागने लगे।

लहू में सना टिकोरा पड़ा रहा। साँप की मणि जमीन पर जा गिरी थी। साँप टिकोरा के हाथों से निकलकर मणि के चारों ओर घेरा डाले बैठ गया था।

× × ×

सामने नदी बह रही है, जिसका चाँदी-सा सफेद पानी नाचता हुआ आगे चला जा रहा है।

आस-पास ऊँचे-ऊँचे छायेदार वृक्ष हैं। शरीफा के पौधे दूर-दूर तक जमीन पर बिछे हैं।

एक साफ चट्टान पर अधेड़ उम्र का एक आदमी बैठा है। पास ही एक टट्टू घास चर रहा है। बगल में सामान की कुछ गठरियाँ पड़ी हैं।

"मैना !...." अधेड़ व्यक्ति ने पुकारा—"जल्दी से शरीफा तोड़ ला—खा-पीकर चलना है कि नहीं..."

"अभी आई...." दूर की झाड़ी से मैना की आवाज आई।

थोड़ी ही देर बाद मैना और परदेसी ढेर-सा शरीफा लिए आ पहुँचे।

मैना बोली—"लो सौदागर! खूब पके-पके लाई हूं!... शहर अब तो थोड़ी ही दूर रह गया है न?"

"दो-तीन कोस समझ ले।" अधेड़ सौदागर बोला—"तुम लोग खाकर तैयार हो जाओ...मुझे भूख नहीं है...."

मैना और परदेसी शरीफा खाने लगे।

"तुम न मिल जाते तो हमें शहर पहुंचने में बड़ी तकलीफ उठानी पड़ती सौदागर!" बोली मैना—"खोह से निकलते ही तुम मिले तो जान में जान आई हमारे...."

"मैं तो अक्सर इसी रास्ते देहात से सामान खरीद कर लौटता हूं...इधर का जंगल कोई खतरनाक नहीं, इसलिए अकेला ही आता-जाता हूं ...आज चार दिनों से तुम लोग हमारे साथ हो, बात-बात में रास्ता भी कट गया और मालूम भी न पड़ा...हमारा तो काम ही ऐसा है कि आते-जाते कितने ही राही अपने बन जाते हैं। तुम्हीं लोगों से कोई जान-पहचान नहीं थी, मगर चार दिनों में कितनी घनिष्ठता आ गई, खा चुके तुम लोग? तो सब सामान उठा लाओ ..."

सौदागर उठ खड़ा हुआ और टट्टू पर अपना सामान लादने लगा।

थोड़ी देर बाद ये लोग चल पड़े।

घण्टे भर तक चलने के बाद पक्की सड़क मिली।

सौदागर बोला—"अब तुम लोग जाओ....मुझे इधर जाना है। इसी सड़क से जाकर तुम लोग शहर पहुंच जाओगे....बड़ा अच्छा साथ रहा इस सफर में, कभी इसे भूलूंगा नहीं...."

अपना टट्टू लेकर सौदागर चला गया।

मैना और परदेसी हाथ में हाथ डाले शहर की ओर बढ़

चले। आज ये दोनों बहुत खुश थे। उनके रास्ते के काँटे दूर हो चुके थे।

एकाएक मैना चौंककर रुक गई। बोली—"वह कौन-सी चीज आ रही है परदेसी! जिस पर कई आदमी बैठे हैं...."

परदेसी ने उधर देखा, माथा पकड़कर कुछ सोचा, फिर बोला—"ठीक याद नहीं पड़ता....शायद कार कहते हैं इसे—अमीरों की सवारी है यह...."

"दैया रे! कितनी तेज आ रही है परदेसी! पीछे से तो बड़ी धूल उड़ाती आ रही है...."

तब तक वह कार भी सर्राटे के साथ सामने से गुजर गई। उस पर बैठे हुए आदमी गौर से इन दोनों की ओर देख रहे थे। इनका पहनावा भी तो विचित्र ही था।

"लो रुक गई...." मैना बोली—"अरे, वह तो पीछे को खिसक रही है परदेसी!...."

कार आगे जाकर रुक गई थी और पीछे को घिसटती आ रही थी। इन दोनों के सामने आकर रुक गई।

कार में एक हट्टा-कट्टा व्यक्ति, एक युवती और एक बच्चा, यही तीन थे।

वह व्यक्ति गौर से परदेसी को देख रहा था। युवती भी उसे ही घूर रही थी।

मैना का कलेजा धड़कने लगा....उसने परदेसी का हाथ पकड़ लिया और बोली—"यहाँ से चलो परदेसी। ये लोग जाने कैसे देख रहे हैं तुम्हारी ओर! तुम्हें पकड़ ले गये तो?"

परदेसी कुछ नहीं बोला....वह भी उन लोगों की तरफ घूर-घूर कर देख रहा था। उसका मस्तक भन्ना रहा था। मस्तिष्क की नसें बजने लगी थीं।

कार से उतर कर वह व्यक्ति परदेसी के सामने आ खड़ा हुआ। मैना ने परदेसी को खींचकर अपने पीछे कर लिया।

"मुझे पहचानते हैं ?..." उस व्यक्ति ने परदेसी से प्रश्न किया।

परदेसी ने अस्वीकृति-सूचक सर हिलाया।

"और उन्हें ?...." उस व्यक्ति ने कार में बैठी युवती की ओर इशारा किया।

"नहीं...." परदेसी बोला, मगर उसका मस्तिष्क और वेग से उड़ने लगा था !

"उन्हें भी नहीं ?...और उस बच्चे को...."

"यह किसी को नहीं पहचानता..." मैना घुड़ककर बोली—"तुम लोग कौन हो ?"

मगर वह व्यक्ति बिना उत्तर दिये ही कार के पास लौट गया। उस युवती से बोला—"दिमाग इनका फिर गया है—देखती नहीं आप, सूरत कैसी हो गई है ?..."

"हैं तो वहीं न ?" युवती पूछी। इस समय उसका चेहरा आवेग से लाल हो रहा था, जैसे बहुत दिनों के बाद अपनी कोई खोई चीज उसे मिली हो।

"बिलकुल वहीं हैं सरकार !... खुदा कसम ! नाक पर का छोटा-सा तिल आप देख लीजिए...." बोला वह व्यक्ति।

"तो ले चलो इन्हें !...." युवती ने कहा—"वह लड़की रोके तो धक्का दे दो...."

वह व्यक्ति परदेसी के पास आया और उसे खींचता हुआ ले जाकर कार में बिठा दिया। मैना भी पीछे-पीछे दौड़ी आई तो उस व्यक्ति ने उसे जोरों का धक्का दिया।

मैना गिर पड़ी और कार भाग चली। परदेसी कार पर से कूदने का प्रयत्न कर रहा था और वह व्यक्ति उसे मजबूती के साथ पकड़े हुए था।

गिरकर मैना तुरन्त उठी और 'परदेसी-परदेसी' चिल्लाती हुई कार के पीछे दौड़ी। दौड़ते-दौड़ते थक गई और कार आंखों से ओझल हो चली।

"परदेसी...." चीखकर मैना सड़क पर गिर पड़ी और धूल में बने हुए पहियों के निशान पर लोटने लगी....सर धुन कर रोने लगी।

एकाएक उसके हाथों में किसी के पैर आ लगे। कोई उसके सामने खड़ा था। उसने जरा-सा आखें उठाकर देखा। कमर में पहने हुए अजगर के चमड़े पर उसकी दृष्टि पड़ी। तड़प कर उठ खड़ी हुई और उसे बाँहों में कसकर बोली—"परदेसी, मेरे रसिया!....आखिर लौट आये तुम।"

"हा-हा-हा-हा...." कोई मैना के कानों के पास चिल्लाया—"परदेसी तो गया मैना रानी! यह टिकोरा है, जिसे उस खोह में मारकर फेंक आई थी तुम....पीठ में छुरे का घाव भी ताजा है और सर में पत्थरों की चोट भी दर्द कर रही है। फिर भी कुछ लगन लेकर टिकोरा यहाँ तक घिसटता चला आया है।....सीधी तरह चलो, वर्ना यह साँप अब भी मेरे हाथ में है...हा-हा-हा-हा...."

मैना छटक कर दूर जा खड़ी हुई, मगर टिकोरा ने दौड़कर पकड़ लिया और घसीटते हुए ले चला उसे।

❀

परदेसी कौन था? टिकोरा मैना को कहाँ ले गया? मैना और परदेसी पुःन मिले या नहीं, आदि रोचक घटनाओं की जानकारी के लिए भारत पाकेट बुक्स द्वारा प्रकाशित उपन्यास 'पराया' पढ़ें—

—: बस :—

स्व० कुशवाहा कान्त

लिखित उपन्यास

	सजिल्द	पाकेट बुक्स
लालरेखा	५—००	४—००
पपिहरा	५—००	४—००
पारस	५—००	३—००
परदेसी भाग (१)	३—००	३—००
परदेसी भाग (२) (पराया)	३—००	३—००
जंजीर	५—००	४—००
नागिन	५—००	४—००
मदभरे नयना	५—००	३—००
जवानी के दिन	३—००	३—००
पराजिता	३—००	३—००
कालाभूत	३—००	३—००
गोल निशान	४—००	३—००
विद्रोही सुभाष	६—००	४—००
उड़ते-उड़ते	४—००	३—००
कैसे कहूं	२—००	
लालकिले की ओर	५—००	
उसके साजन	३—००	

[आर्डर देते समय पाकेट बुक अथवा सजिल्द का स्पष्ट उल्लेख करें]

प्राप्ति स्थान

चिनगारी प्रकाशन

पो० बा० ७८, वाराणसी—१

जयन्त कुशवाहा

की

अन्य कृतियाँ

	पाकेट	सजिल्द
• क्रान्ति-दूत	४-००	६-००
• बारूद	४-००	६-००
• कफन	४-००	६-००
• इन्तकाम	४-००	६-००
• जनाजा	४-००	—
• नासूर	३-००	५-००
• फफोले	३-००	५-००
• प्रतिशोध	३-००	५-००
• ऊंचे लोग	३-००	—
• अमानत	३-००	५-००

(आर्डर देते समय सजिल्द व पाकेट का स्पष्ट उल्लेख करें)

प्राप्ति स्थान

चिनगारी प्रकाशन

सी के ६४/१ जालपादेवी रोड
कबीरचौरा, वाराणसी-१
फोन-६६११८

सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी उपन्यासकार

जयन्त कुशवाहा

के जेष्ठ पुत्र

सजल कुशवाहा

लिखित

रहस्य-रोमांच एवं साहसिक जासूसी रोमांटिक उपन्यास

पाकेट बुक्स में पढ़ें—

कत्ल पर कत्ल अजय साही की आँखें उसकी ऊँची एँड़ियों वाली सैण्डिल को देखती, चिकनी सुडौल पिण्डलियों के ऊपर रेंगती हुई रानों तक पहुँच कर रुक गईं—स्कर्ट थोड़ा-सा ऊपर खिसक जाने के कारण उसकी आधी रानें नंगी हो गई थीं। अजय साही उसके लिए रास्ता छोड़कर एक ओर हटने लगा, मगर उसने उसकी गर्दन में भुजायें डालते हुए अपने होंठ उसके होठों पर रख दिये।

एक हत्या को छिपाने के लिए, हत्या के बाद हत्या होती रही और हत्या का पता लगाने वाले अफसर अजय साही को गुमराह करने के लिए विभिन्न तरीके अपनाये जाते रहे। उपन्यास का कथानक अत्यन्त रोमांटिक एवं रहस्यमय घटनाओं से भरा हुआ है।

मूल्य २) रुपये मात्र। पृष्ठ संख्या १४४।

बैरियाकी तलाश ऐसी बहुत-सी लड़कियाँ हैं जो किसी की भी पत्नी बनने के लिए हर समय तैयार रहती हैं, बशर्ते यह उनके पाउडर,

लिपिस्टिक, साड़ियों और क्लबों का खर्च बरदाश्त कर सकता हो। विवाह कराने वाली संस्था 'हैप्पी मैरिज ब्यूरो' ऐसी ही लड़कियों के आवश्यकताओं की पूर्ति किया करता। इस संस्था का काम ही अच्छे-भले लोगों को ऐसी बदचलन और आवारा लड़कियों के चंगुल में फँसा ब्लेक-मेल करना था। सारजेण्ट अजय साही द्वारा संस्था का भण्डाफोड़ इस रहस्यमय रोमांटिक उपन्यास में पढ़ें। मूल्य २) रुपये मात्र। पृष्ठ संख्या १४४।

दिमाग की हत्या

एक वीरान-सी जगह पर बना हुआ डाक्टर राव का प्राइवेट मेण्टल हास्पिटल वास्तव में एक नर्क था। जहाँ इन्सान के दिमाग की हत्या करके उसे जिन्दा लाश बना दिया जाता था। मिस्टर वाहिया के जीवन की सबसे भयानक कहानी उसी समय शुरू हो चुकी थी, जब एक भयभीत लड़की उनके बँगले में दाखिल हुई।

अत्यन्त रोमांटिक रहस्यमय कथानक। मूल्य ३) रुपये मात्र। पृष्ठ संख्या १४४।

आखिरी चीख

चट्टान पर एक लाश पड़ी थी, बुरी तरह कुचली हुई वीभत्स। घटनास्थल पर पुलिस को ऐसे निशान मिले, जिससे पता चलता था कि कुछ औरत-मर्द जादू-टोने के सिलसिले में वहाँ इकट्ठा हुए थे। आखिरकार क्रिमिनल इन्वेस्टीगेशन ब्यूरो के रिटायर्ड सुपरिण्टेण्डेण्ट मिस्टर वाहिया ने हत्या का रहस्य सुलझा ही लिया।

जादू-टोने से सम्बन्धित जासूसी रोमांटिक कथानक ही इस उपन्यास की विशेषता है। मूल्य ३) रुपये मात्र। पृष्ठ संख्या १४४।

पाँच साल बाद

गदराये शरीर वाली चित्ताकर्षक फिल्म स्टार जो बड़े ही रहस्यमय ढंग से गायब हो गई थी—पांच साल बाद वह टेलीविजन पर एक सनसनीपूर्ण कहानी बतलाने के लिए सामने आ रही थी। मगर इसके पहले ही उसकी हत्या कर दी गई। ऐसे चार लोग थे, जिनके पास उसकी हत्या करने के लिए ठोस कारण मौजूद थे। मामला देखने में बिल्कुल सीधा-सादा था। मगर जब सारजेएट अजय साही ने छान-बीन शुरू की तो यह सीधा-सादा दिखनेवाला मामला इतना जटिल और रहस्यमय मालूम पड़ने लगा कि वह हैरान रह गया। अत्यन्त रोमांटिक जासूसी कथानक। मूल्य ३) रुपये मात्र। पृष्ठ संख्या १४४।

मरी हुई औरत

पोस्टमार्टम की रिपोर्ट के अनुसार उसके पेट में शराब अत्यधिक मात्रा में पाई गई थी। नशे में वह स्वयं चलकर ऊँचे टीले पर उतनी दूर गया होगा, यह संदेहात्मक बात थी। मामला जटिल था—आखिर मामला हत्या का है या आत्महत्या का। रहस्य, रोमांच एवं रोमांस इस उपन्यास की विशेषता है। मूल्य ३) रुपये मात्र। पृष्ठ संख्या १४४।

— : * : —

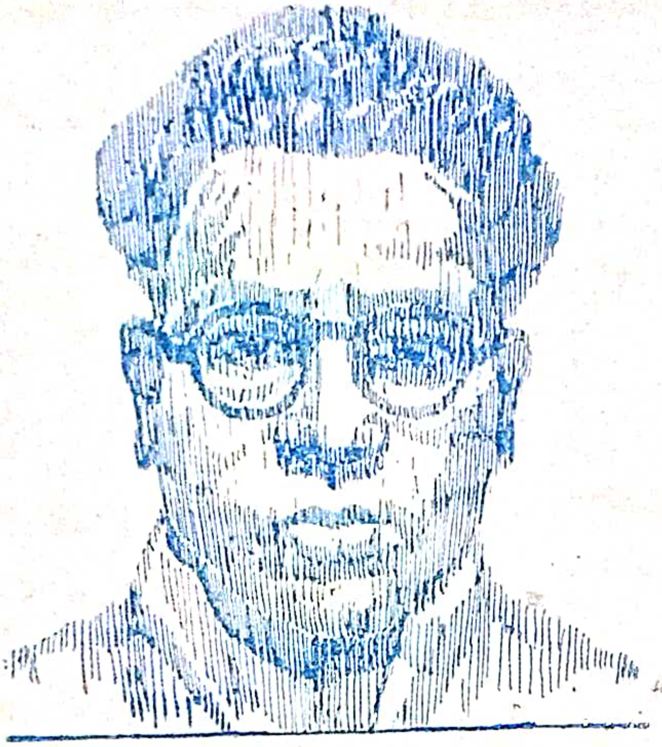

कुशवाहा कान्त के विषय में स्वनामधन्य पिट्ठू आलोचकों एवं साहित्यिक पन्डों का कहना है—'उसने यौन सनसनी और युवक-युवतियों को गुमराह करने के अतिरिक्त लिखा ही क्या है.....' फिर भी बात चलने पर वे दबी जबान से कह देते हैं—'कुछ भी हो, हिन्दी में आज उसके पाठकों की संख्या सबसे अधिक है। उसने चाहे जो कुछ लिखा हो किन्तु हिन्दी को एक नई शैली, नया मोड़, नया कथानक तो दिया ही है...'

कितने अहिन्दी भाषा भाषियों ने केवल कुशवाहा कान्त की पुस्तकें पढ़ने के लिए हिन्दी पढ़ना सीखा। उनकी प्रत्येक पुस्तक की लाखों प्रतियाँ छप-बिक चुकीं।

कम मूल्य में उनकी कृतियाँ सर्वसुलभ हो सकें, इसीलिए यह पुस्तक पाकेट बुक में दी जा रही है।

भारत पॉकेट बुक्स